CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

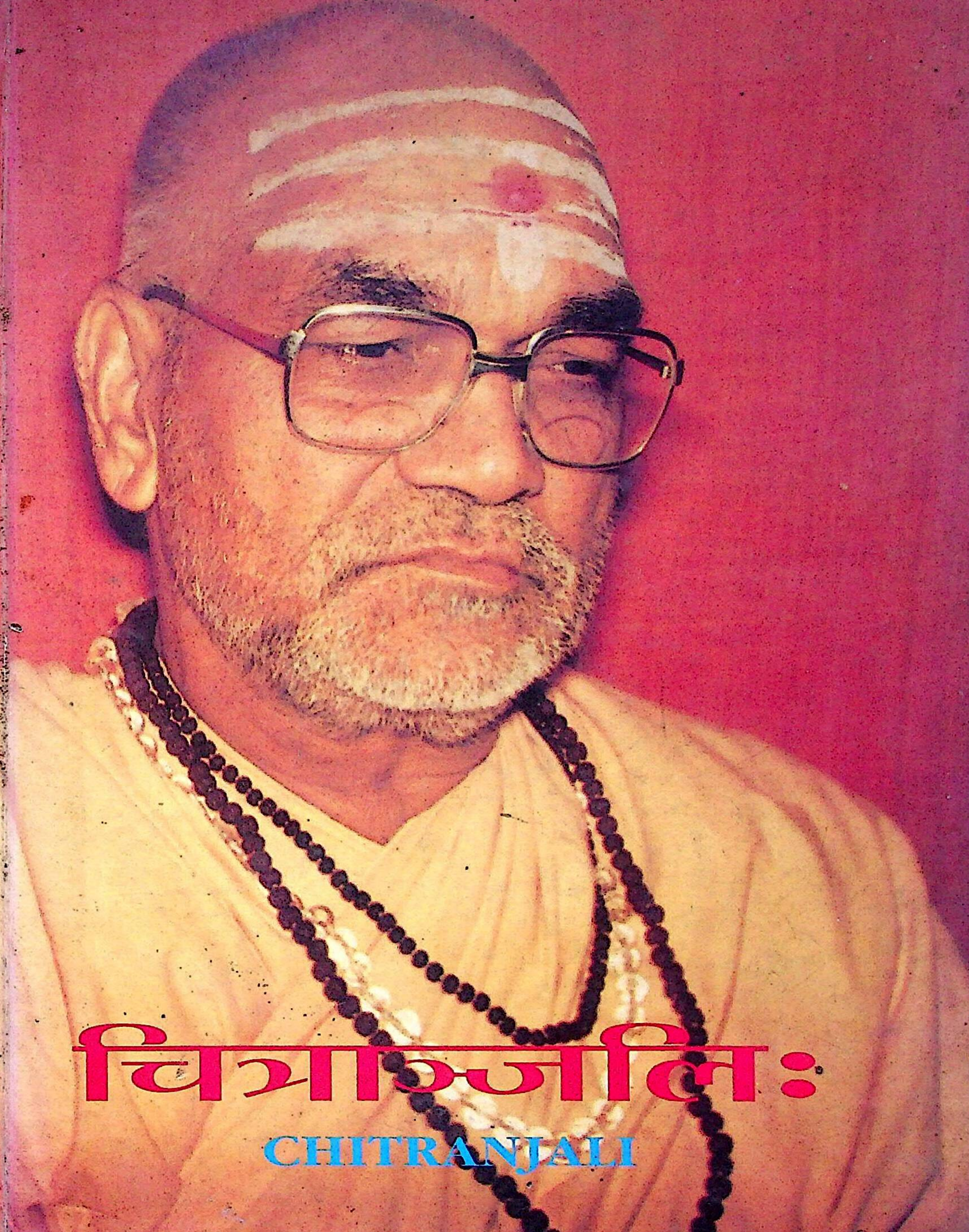

चित्राञ्जलिः

CHITRANJALI

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

श्री कैलास ब्रह्मविद्यापीठाधीन आश्रम

ASHRAMS OF SHRI KAILAS BRAHM VIDYAPEETH

कैलासधाम प्रयागराज

ब्रह्मानन्द आश्रम ऋषिकेश

कैलास आश्रम उत्तरकाशी

दशनाम संन्यास आश्रम, हरिद्वार

राम आश्रम, समाना (पटियाला)

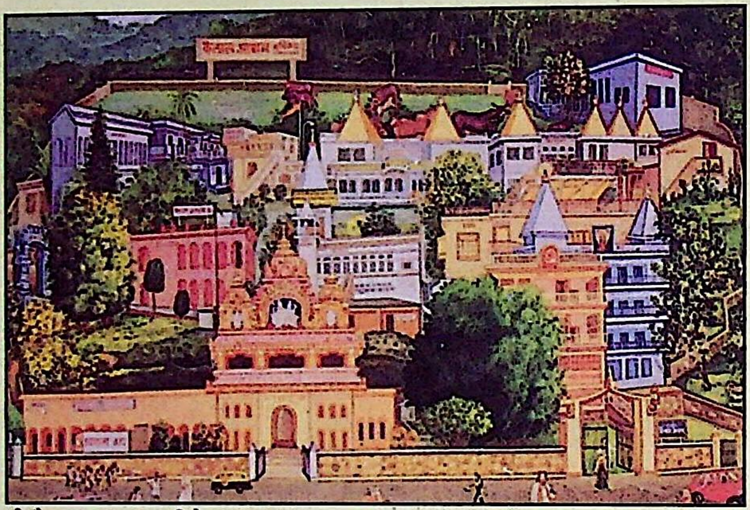

श्री कैलास आश्रम, ऋषिकेश (कलात्मक चित्र)

Shri Kailas Ashram Rishikesh (An Artist's View)

श्रीकैलास विद्यातीर्थ (श्री आदि शंकराचार्य स्मारक नई दिल्ली-1

श्री नर्वदा सत्संग आश्रम, भिलाड़िया घाट, होशंगाबाद

कैलास विद्यातीर्थ, राजगीर (विहार)

शंकर ब्रह्मविद्या कुटीर, मुजफ्फरनगर

कैलास आश्रम रोहतक

कैवल्यविद्याकान्तम् नई दिल्ली-27

कैलास शांति सदन गुड़गाँव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

८ 39

9.3

ॐ

सर्वसिद्धिप्रदाता श्रीमदभिनवचन्द्रेश्वर महादेवजी (कैलासाश्रम ऋषिकेश) जिनके पावन चरणकमलों में ''चित्राञ्जलिः'' सादर समर्पित है।

The Presiding Deity of Kailas Ashram, Rishikesh at whose Lotus Feet "CHITRANJALI" is dedicated.

कैलास आश्रम में संस्थापित भगवान् आद्यशंकराचार्य जी की प्रतिमा

The other deity of Kailas Ashram–Shri Adi Shankaracharya Ji

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

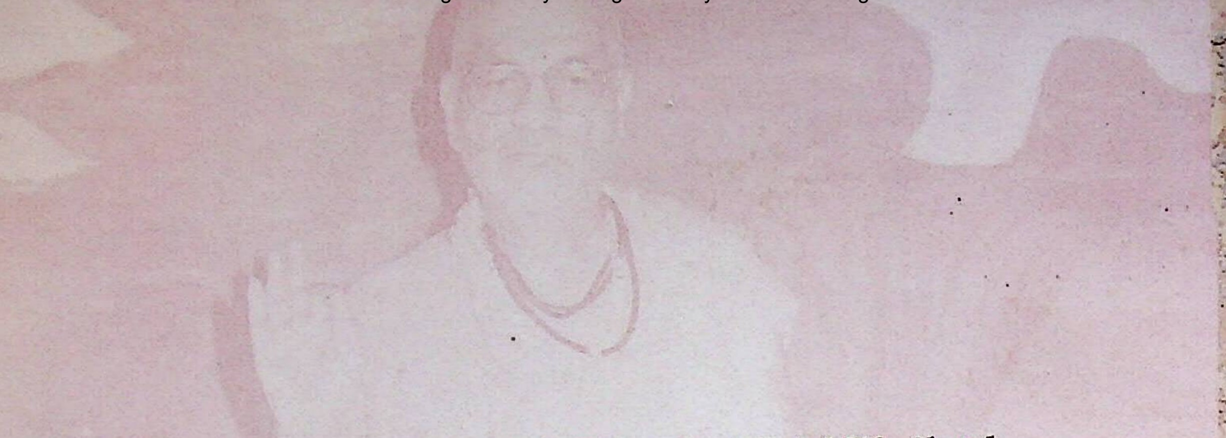

Swami Vidyanand Giri Ji Maharaj - A Brief Life Sketch

His Holiness Shri Swami Vidyanand Giri Ji was born in 1921 in Village Gazipur, District Patna, Bihar, in a well-to-do Brahmin family. From the very childhood, he had spiritual inclination. Like customary in those days, he got married at the young age of 15 to Smt. Ram Piari Devi, who played an important role to draw Swami Ji wholeheartedly to the devotion of God. At the age of 20, Swami Ji left householder's life and became a monk. He studied Sanskrit with great love and passed degrees in Vedanta, Sarvadarshanacharya from Benaras University. His deep understanding of the religious texts and its exposition before others earned him the reputation of an accomplished teacher. For two years he taught at Dakshina Murti Sanskrit Mahavidyalaya, Benaras and then took charge as principal of Shri Vishwanath Sanskrit Mahavidyalaya, Delhi. He served this institution for 10 years with great devotion and hard work. He was initiated into 'Sanyas' by the great Acharyas of Shri Viswanath Sanyas Ashram, Delhi.

By God's will Swamiji's name was proposed by a group of renowned saints for the Acharya's seat of the famous Kailash Ashram, Rishikesh. The Acharyas of Kailash Ashram accepted the proposal with great pleasure and the ceremony of Accession (Pattabhishek) was performed on July 21, 1969 in the presence of a large number of saints and devotees. Thereafter Swami Ji devoted himself heart and soul to the all-round development of Kailas Ashram. The work which would normally have taken two centuries, was accomplished in two decades by the thoughtful planning and effortful execution by Swami Ji.

Swami Ji celebrated the silver jubilee of his initiation into Sanyasa order by worshipping his Acharya, His Holiness Shri Swami Maheshanand Giri Ji Maharaj, on Jan. 10, 1993 at Viswanath Sanyas Ashram, New Delhi and set a new example in devotion to the Acharyas.

On the auspicious occasion of the Silver Jubilee celebrations of Maharaj Shri's accession to the Acharya's Seat of Shri Kailas Brahm Vidya Peeth, we the devotees offer heartiest gratitude to him and pray to God for his long and healthy life.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

श्रीमदभिनवचन्द्रेश्वरो विजयतेतराम्

चित्राञ्जलिः

CHITRANJALI

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ दशम कैलासपीठाधीश्वर

आ.म.मं. श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज

के

पट्टाभिषेक रजत महोत्सव प्रसंग

पर सादर समर्पित

सम्पादक:

स्वर्ण लाल तुली

आषाढ़ शुक्ल सप्तमी
शाङ्कराब्द १२०७ वि.सं. २०५१

१५ जुलाई,
१९९४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

EDITORIAL

"**Chitranjali**" is a commemorative publication brought out on the auspicious occassion of the Silver Jubilee Celebration of **His Holiness Shri Swami Vidyanand Giriji's** accession to the Acharya's Seat of Shri Kailas Brahm Vidya Peeth. It has been decorated with some Sanskrit Shlokas of the great Teacher Shri Adi Shankaracharya Ji. The Hindi/English translation of the Sanskrit text has been also included to increase its usefulness. The credit for sponsoring this book goes to **Shri Goverdhan Lal Chanana, of Jai Mala Purse Emporium, Karol Bagh, New Delhi**. Considering that I am not a scholar of any language, readers may kindly forgive me for any mistakes in the text.

Last but not the least, it give me immense pleasure to dedicate '**Chitranjali**' at the lotus feet of **Lord Abhinavchandreshwar Mahadev Ji** whose grace alone has rendered this publication possible.

May 13, 1994 — **Swarn Lal Tuli**

प्रकाशक:
पट्टाभिषेक रजत महोत्सव महासमिति, कैलास आश्रम, ऋषिकेश (उ०प्र०)

मुद्रक:
ईलाइट प्रिन्टर्स, नई दिल्ली ११००१५ दूरभाष : ५४३२९४०

प्रथम संस्करण : २५०० प्रतियाँ

मूल्य : एक सौ पच्चीस रुपये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

सम्पादकीय

दिशन्तु शं मे गुरुपादपांसवः

एक सौ चौदह वर्षीय श्री कैलास आश्रम ऋषिकेश की ख्याति ब्रह्मविद्या के मुख्य केन्द्र के रूप में सर्वत्र (देश विदेश में) फैली हुई है। संस्थापक आचार्यपाद स्वनामधन्य श्रीमत्स्वामी धनराज गिरि जी महाराज से लेकर अद्यावधि दश आचार्यों ने इस ब्रह्मविद्या पीठ को सुशोभित किया, जो अपनी विद्वत्ता एवं ब्रह्मनिष्ठा में बेजोड़ हुए। वर्तमान दशम पीठाधीश्वर **आचार्य महामण्डलेश्वर अनन्त श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज**, जो आषाढ़ शु. सप्तमी वि. सं. २०२६ को पीठासीन हुए, की विशेषता यह है कि वे सभी पूर्वाचार्यों की निष्ठा एवं शक्ति का आह्वान करके उनके आशीर्वाद से सभी कार्य करते हैं। इसीलिए उनको समस्त कार्यों में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई है। कृतज्ञता के भाव से प्रेरित हो, सन्तों एवं भक्तों ने उनके पट्टाभिषेक रजत महोत्सव को वि. सं. २०५०-५१ में अनेकानेक मांगलिक कार्यक्रमों द्वारा मनाने की योजना बनाई।

''चित्राञ्जलिः'' को श्रीदशमकैलासपीठाधीश्वर जी महाराज के पट्टाभिषेक रजत महोत्सव के अन्तर्गत प्रकाशनों में रखने का संकल्प ब्रह्मचारी श्री रामानन्द शास्त्री जी की प्रेरणा से हुआ था। पट्टाभिषेक रजत महोत्सव महासमित ने इस प्रस्ताव को यथा समय सहर्ष स्वीकृति प्रदान की। ''चित्राञ्जलिः'' में श्री कैलास आश्रम से सम्बन्धित सभी आचार्यों, विशेषकर वर्तमान दशम आचार्यपाद के पिछले पच्चीस वर्षों के उपलब्ध चित्रों का संकलन है। देवभाषा संस्कृत में रचित भगवान् आद्य श्री शङ्कराचार्य की शत प्रश्नोत्तरी, प्रातःस्मरणम्, आत्मषट्कम् को चित्रों के बीच बीच दे कर ''चित्राञ्ज़लिः'' को और भी सुशोभित किया है। इनके हिन्दी, अंग्रेजी अनुवाद से प्रत्येक भक्त को इससे लाभ मिलने की आशा है। इस पावन प्रकाशन को मोती नगर, दिल्ली के चानना परिवार ने अत्यन्त उदारता से सींचा है। अतः **श्री देसराज-वीराँवाली चानना, श्री गोवर्धन लाल-प्रेम चानना, श्री नरेन्द्र-नीरजा चानना, श्री मुकेश-नीलम चानना, श्री प्रदीप-वन्दिता चानना, श्री जितेन्द्र-निशा चानना, श्री अशोक-लीना सचदेवा, सुश्री योगीता एवं मयंक चानना** भूरिशः धन्यवाद एवं गुरु कृपा के पात्र हैं। अनुवाद एवं सम्पादन में त्रुटियों के लिए मैं अत्यन्त विनम्र भाव से क्षमा प्रार्थी हूँ।

अन्त में कैलास के सभी सन्तों एवं भक्तों की ओर से ''चित्राञ्जलिः'' श्रीमदभिवचन्द्रेश्वर महादेव जी के पावन पादपद्मों में समर्पित है, कि जिन्ह की कृपा से ही यह कार्य सम्पन्न हो सका।

हरि ॐ तत्सत्।

अक्षय तृतीया वि.सं. २०५१

गुरुपादानुरागी

- स्वर्ण लाल तुली

विद्यासदन, ४५ गुजराँवाला टाऊन भाग २, दिल्ली-११० ००९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

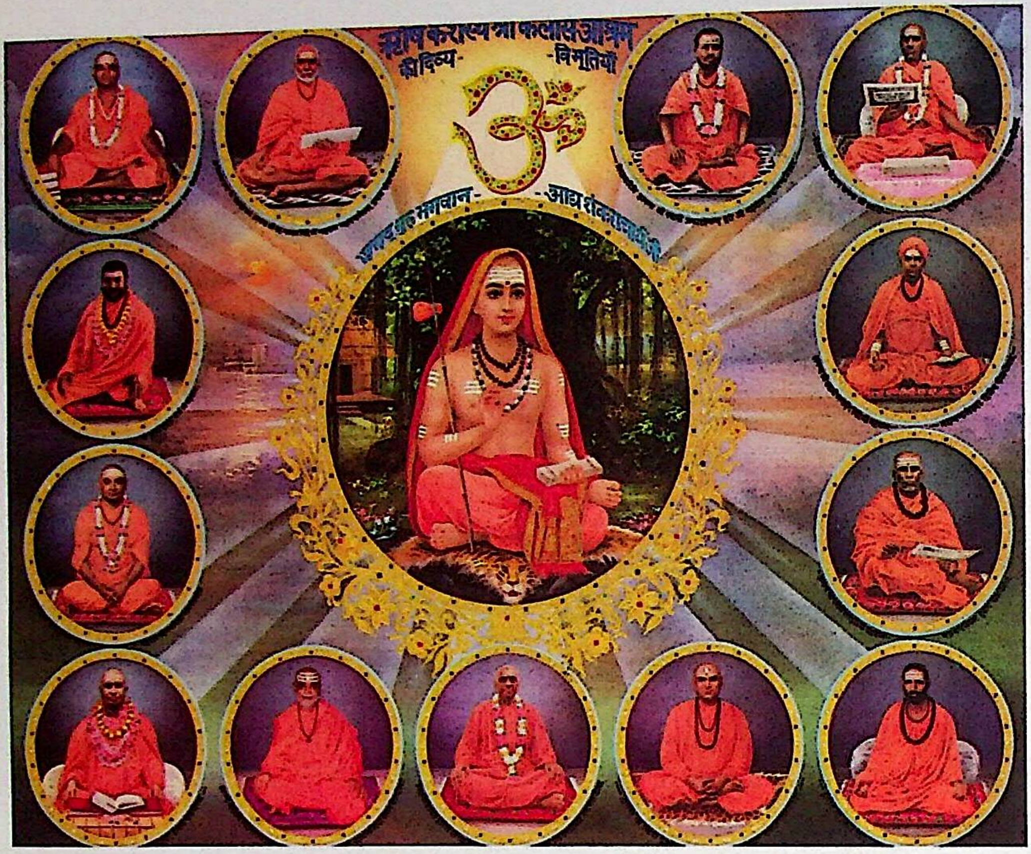

श्री कैलास आश्रम शताब्दी समारोह (१९८०-८१) पर प्रकाशित श्री कैलास आश्रम की विभूतियों का चित्र। प्रातःकाल इसके सादर दर्शन से सभी विघ्न-बाधाएं दूर होती हैं, ऐसा महापुरुषों का आशीर्वाद है।

The above picture depicting Acharyas of Shri Kailas Ashram Brahm Vidya Peeth was published during the Centenary Celebrations of Shri Kailas Ashram in 1980-81

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

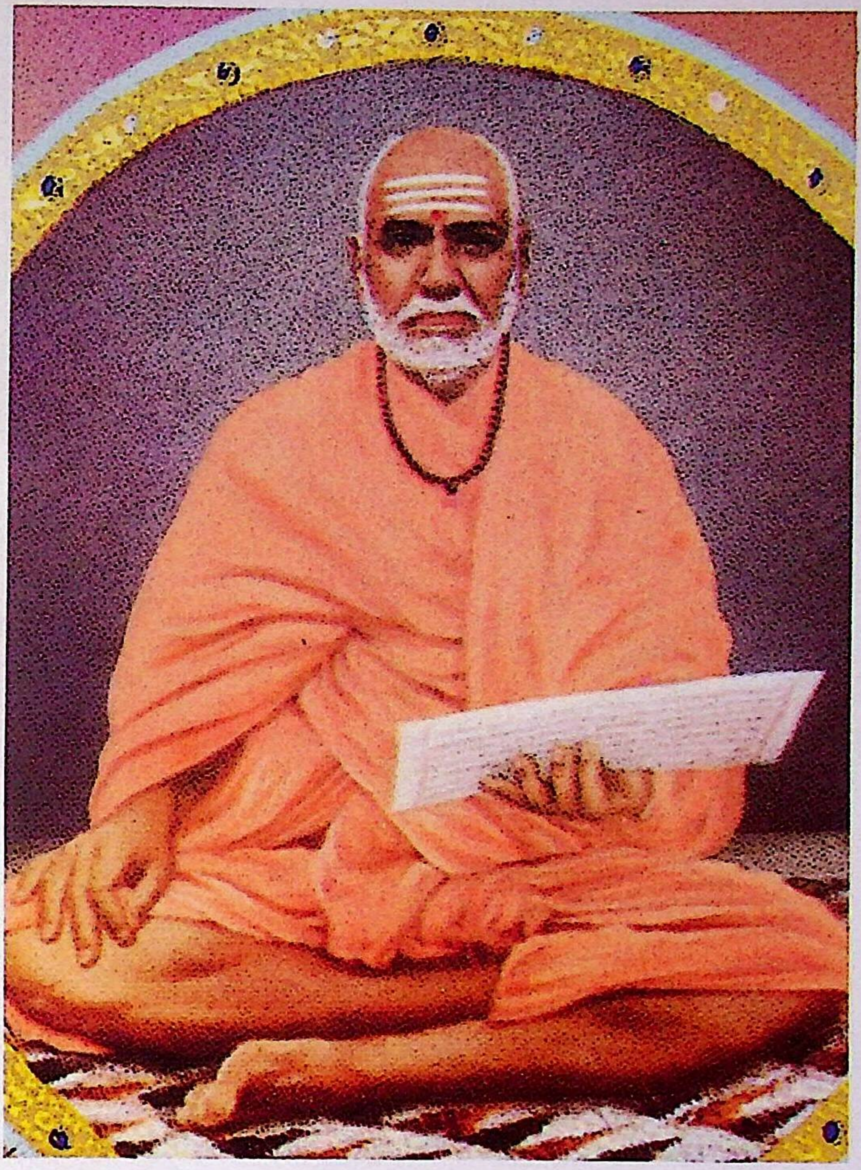

श्री कैलास आश्रम के संस्थापकाचार्य श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ अनन्त श्री विभूषित पूज्यपाद श्रीमत्स्वामी धनराज गिरिजी महाराज

The founder of Shri Kailas Ashram - His Holiness Swami Dhanraj Giri Ji Maharaj

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

कैलासाश्रमाचार्यपरम्परा

विजयप्रशस्तिः

नमः शिवाय भुवन-भूतभव्यविधायिने।
भूम्ने कैलासधाम्नेभि-नवचन्द्रेश्वरात्मने ॥१॥

नम: शिवाय मन्त्र से भगवान् शङ्कर को प्रणाम करते हैं; जो भूत, वर्तमान एवं भविष्य सर्व पदार्थों के विधाता हैं, तथा भुवनों में जो भी (भूत) प्राणी हैं, सब के भव्य (मंगल) विधाता हैं; जो भूमा स्वरूप में स्थित होते हुए भी साकार होकर कैलास (कैलासपर्वत तथा कैलासाश्रम) को अपना धाम बनाए हुए हैं तथा कैलास पर्वत में नित्यनव चन्द्रचूड़ ईश्वर रूप में और कैलास आश्रम में अभिनव चन्द्रेश्वर रूप में विराजमान हैं ॥१॥

नैकोऽपि योऽसौ क्व नु सद्वितीयस्तथापि वेदे प्रथितस्तुरीयः
शान्तं शिवं तं दधतं स्वशक्त्या नानावतारान् प्रणतोऽस्मि शंभुम् ॥२॥

''न चैकं तदन्यद् द्वितीयं कुत:स्यात्'' के अनुसार जो एकत्व संख्या युक्त नहीं, तो सद्वितीय (द्वितीय सहित) कहाँ से हो और स: द्वतीय: (वह द्वितीय) भी कैसे हो? फिर भी तृतीय भी नहीं बल्कि तुरीय- चतुर्थ रूप से वेदों में प्रख्यात हुआ, ''शान्तं शिवमद्वैतं चतुर्थं'' आदि श्रुति से प्रतिपादित मायासंख्यातुरीय उस शान्त शिव को, जो शं विधानार्थ शम्भु होकर स्वशक्ति से नाना अवतारों को लेते हैं, मैं प्रणाम करता हूँ ॥२॥

शिवावतारं धृतबोधमुद्र-मद्वैततत्त्वं प्रतिबोधयन्तम्।
श्रीशंकराचार्यमशेषवन्द्यं वन्दामहे संयमिनां शरण्यम् ॥३॥

हाथ में ज्ञानमुद्रा धारणकर अद्वैततत्त्व को बोधित करने वाले शिवावतार जगद्वन्दनीय संयमी परमहंसों के शरणदाता भगवान् आद्यशङ्कराचार्य की हम वन्दना करते हैं ॥३॥

कैलासाश्रम एष धाम परमं वाग्देवतायाः शुभं
यस्यावाप्यधमर्णता यतिवरैर्निःशेषितर्णैरपि।
यं स्वीयो यशसः स्फुरन् धवलिमा कैलासतामापयद्
योऽदीव्यत्तुहिनाद्रिसानुषु भृशं श्वेताद्रिशृङ्गोज्ज्वलः ॥४॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कैलासाश्रम वाग्देवता सरस्वती का परम शुभ धामें है, जिसके ऋणत्रय रहित यतिवर भी अधमर्णता को प्राप्त हो गए, जिसको स्वीय कीर्ति की श्वेतिमा ने कैलासता (श्वेतपर्वतता) प्राप्त करायी, जो हिमाचल के समतल सथानों में रजत-पर्वत शृंग के समान उज्ज्वल रूप से शोभायमान हुआ ॥४॥

श्रुतिरहस्यसमाकलनैर्निज-प्रवचनैरखिलान् प्रतिबोधयन्।
श्रितजनोद्धरणैकपरायणो विजयते धनराजगिरिर्गुरुः ॥५॥

ऐसे प्रवचनों से जिन में श्रुति रहस्यों का समाकलन है, समस्त जनता को प्रतिबोधित करने वाले आश्रितजनों के उद्धार करने में दत्त चित्त (कैलासाश्रम के संस्थापक प्रथम) गुरु धनराज गिरि जी की जय हो (ब्रह्मरूपेणावस्थितत्वाद् विजयत इति वर्तमानापदेशः) ॥५॥

तपोभिः पापानि क्षयमुपनयन् संयमवतां
प्रचिन्वन् सेवाभिः सुकृतमतिलोकोत्तरमतिः।
उपेतो नैष्कर्म्यं परममधिगम्याद्यपुरुषं
प्रकाशानन्दाख्यो यतिवरधुरीणो विजयते ॥६॥

तपश्चर्या से पापक्षय एवं संतसेवा से सुकृत वर्धन कर अतिलोकोत्तर प्रज्ञा प्राप्त करके परम आद्य पुरुष परमात्मा के बोध से जो नैष्कर्म्य को प्राप्त हुए वे यतिकुल धुरधर (भारवाही) प्रकाशानन्द पुरी जी महाराज की जय हो ॥६॥

समाधिनिरतोऽपि यः श्रुतिविचारसंलग्नधी-
र्विदन्नपि जगन्मृषा विरचयञ्जगन्मङ्गलम्।
कृपानिधिरुपाश्रितान् पथि सतां जनानर्दयन्
जनार्दनगिरिर्गुरुर्जयति मण्डलेशाग्रणीः ॥७॥

समाधिमग्न होने पर भी श्रुतियों के विचार में निरन्तर डूबे हुए, जगत् को मिथ्या समझते हुए भी जगत् का मंगल करने में लगे हुए, कृपानिधि होते हुए भी जनों का अर्दन करते हुए (सत्पथ में लगाते हुए) गुरु श्री जनार्दन गिरिजी महाराज महामण्डलेश्वर की जय हो (विरोधाभास तथा परिहार स्पष्ट है) ॥७॥

प्रस्थानत्रयनित्यचिन्तनवलत्तृष्णो वितृष्णोऽप्यलं
प्राज्ञाऽऽखण्डलमण्डलेशवरणीकर्माऽस्तकर्मापि च।
कैलासाश्रमवर्धनश्रमयशस्तानोऽपि वीतश्रमः
पूर्णानन्दयतीश्वरो विजयतां श्रीमान्हुतश्रीरपि ॥८॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

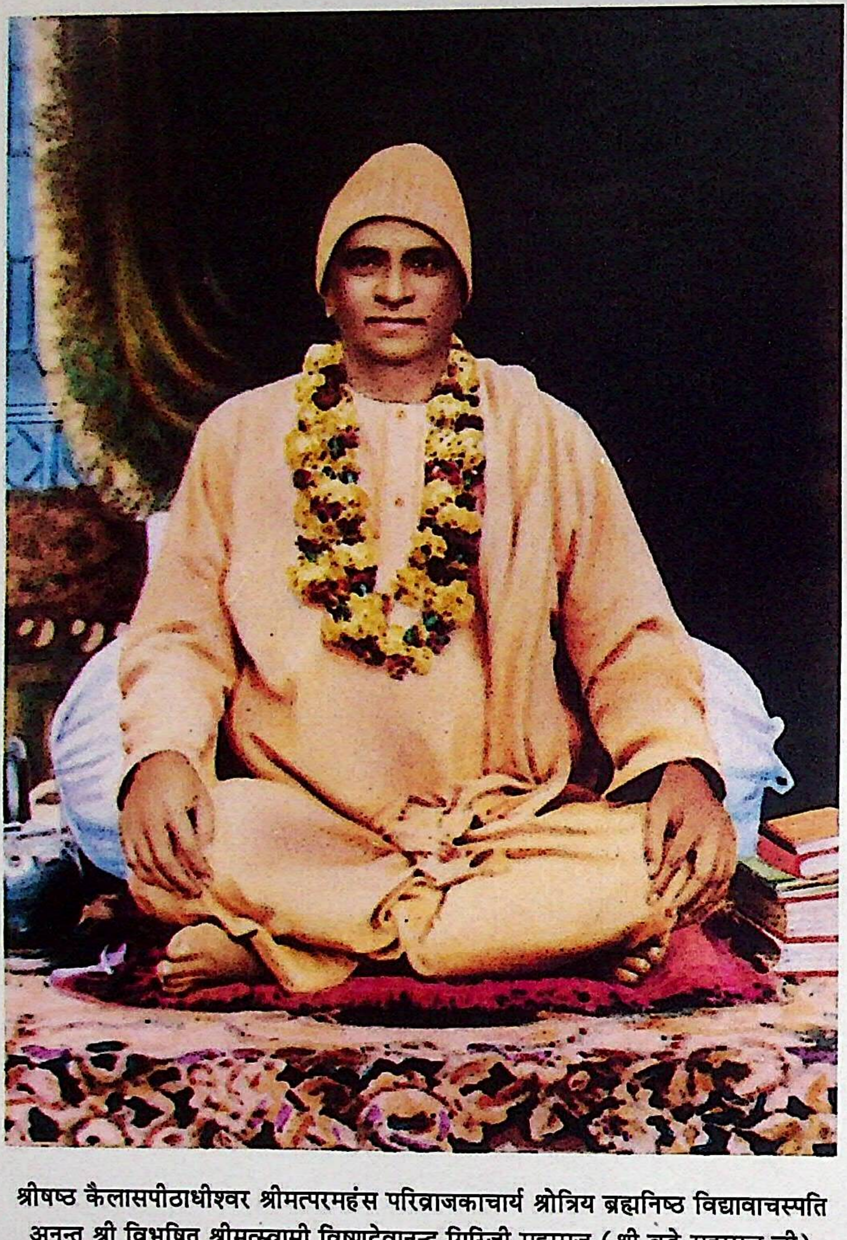

श्रीषष्ठ कैलासपीठाधीश्वर श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ विद्यावाचस्पति
अनन्त श्री विभूषित श्रीमत्स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरिजी महाराज (श्री बड़े महाराज जी)

Sixth Acharya of Shri Kailas Ashram
His Holiness Shri Swami Vishnudevananda Giri Ji Maharaj

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

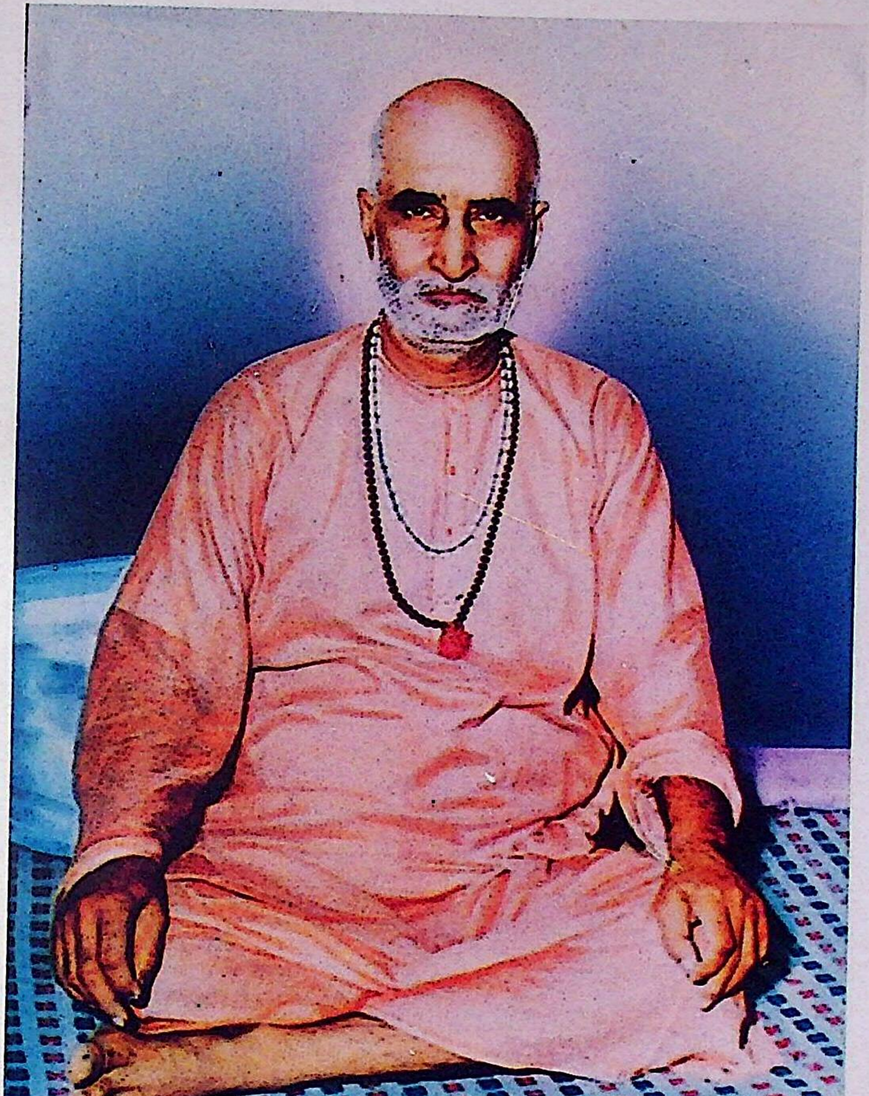

अष्टम कैलासपीठाधीश्वर श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ अनन्त श्री विभूषित श्रीमत्स्वामी चैतन्य गिरिजी महाराज (शास्त्रीजी महाराज)

Eighth Acharya of Shri Kailas Ashram
His Holiness Shri Swami Chaitanya Giri Ji Maharaj (Shastri Ji Maharaj)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूरे वितृष्ण (विरक्त) होने पर भी प्रस्थानत्रय के नित्य विचार में तृष्णा (इच्छा) रखने वाले; अकर्मा (कर्म संन्यासी) होने पर भी प्राज्ञाखण्डल (बुधेन्दु-विद्वद्वर) मण्डलेश्वरों के वरणी कर्म करने वाले, कैलासाश्रम विकास हेतु परिश्रम से यशो विस्तार करते हुए भी वीतश्रम (थकान रहित), श्री परित्यागी होने पर भी श्रीमान् पूर्णानन्द गिरि जी महाराज की जय हो ॥८॥

स्फुरता विरागदहनेन दहन् श्रुतिधेनुदोहसुधया यमिनाम्।
जगदूर्जयन् जयति रामपुरी धुरि मण्डलेश्वरवरो वरदः ॥९॥

मण्डलेश्वरवर रामपुरी जी महाराज भी विलक्षण रहे। एक ओर प्रज्वलित वैराग्य अग्नि से जगत् को जला रहे हैं और दूसरी ओर श्रुतिधेनु के दोहनोत्पन्न अमृत से जगत् को उज्जीवित तथा बलयुक्त कर रहे हैं (प्रथम जगत् का संसार-बन्धन अर्थ है, द्वितीय जगत् का जिज्ञासुजन अर्थ है, इस प्रकार विरोध परिहार है) संयमा संतों के समूह में सबको अभीष्ट वस्तु प्रदान करने वाले उन रामपुरी जी महाराज की जय हो (यमिनांधुरि ऐसा अन्वय) ॥९॥

दृश्यं सर्वं मृषेति स्वयमवगमयन् सच्चिदानन्दतत्त्वं
नित्यं चित्ते दधानः स्फुरति च सहजे यः समाधौ निमग्नः।
देहाध्यासं व्युदस्य स्वमहिमनि कृतस्वप्रतिष्ठो गरिष्ठो
गोविन्दानन्दनामा जयति यतिवरः कोपि संगोपितात्मा ॥१०॥

समस्त जगत् मिथ्या है इस बात को अपने आचरण से ही लोगों को बोधित करने वाले, सच्चिदानन्दतत्त्व को चित्त में नित्य धारण करने वाले, स्पष्ट सहज समाधि में निमग्न रहने वाले, देहाध्यास को त्याग कर अपनी ही महिमा में प्रतिष्ठित, आत्मसंरक्षण पर, परमगुरु, श्री गोविन्दानन्दगिरि जी नाम से प्रख्यात, यतिवर अवर्णनीय महिमा सम्पन्न महामण्डलेश्वर की जय हो ॥१०॥

योगे शब्दनये पतञ्जलिरिव प्रेम्णानुशासन्नतान्
मीमांसाद्वितये च मण्डन इव प्रोद्बोधयन्नाश्रितान्।
नैर्गुण्ये श्रुतिकीर्तने शुक इव श्रद्धां वितृष्णान्नयन्
कृष्णानन्दगिरिर्गुरोरपि गुरुर्नित्यं जयत्यव्ययः ॥११॥

योगशास्त्र और शब्दशास्त्र (व्याकरण) में महर्षि पतञ्जलि के समान नम्र शिष्यों को समझाते हुए, पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा में मण्डन मिश्र (सुरेश्वराचार्य) के समान आश्रितजनों को उद्बोधित करते हुए, नैर्गुण्य ब्रह्म में और श्रुति कीर्तन में शुकदेव जी के समान विरक्त संतों को श्रद्धान्वित करते हुए, गुरुओं के भी गुरु श्री कृष्णानन्द गिरि जी महाराज अव्यय रूप से स्थित होकर उत्कर्ष को प्राप्त हो रहे हैं ॥११॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुम्बापुरीं मोहमयीपुरीं वा चकार यः प्रेमपुरीं पुरस्तात्।
जयत्यसौ प्रेमपुरीतिसंज्ञो वेदान्तसिद्धान्ततलावलोकी ॥१२॥

मुम्बापुरी या मोहमयी पुरी (बम्बई) को जिन्होंने प्रेममयी पुरी बनाया (जगह-जगह सत्संग स्थापना कर परमात्म प्रेममय बनाया) वेदान्त सिद्धान्त के तलस्पर्शी ज्ञान से सम्पन्न वे प्रेमपुरी जी महाराज अपना उत्कर्ष आज भी जता रहे हैं ॥१२॥

अज्ञानध्वान्तहारी स्वपदमुपयतां ब्रह्मसंबोधकारी
स्वानन्दैकप्रतिष्ठः प्रथितसितयशाः श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठः।
नाभूत्यै यस्य देवा अपि परमगुरोः प्राभवन् विष्णुदेवा-
नन्दाख्यानः शरण्यः स जयति यमिनां मण्डलेशाग्रगण्यः ॥१३॥

अपने चरणों में शरणोपेत जिज्ञासुओं के अज्ञानान्धकार को दूर करने वाले एवं ब्रह्म का सम्यक् बोधन कराने वाले, निर्मल यश से लोक विदित, श्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ, महामण्डलेश्वर श्री विष्णुदेवानन्द गिरि जी महाराज की, जिनके ब्रह्ममार्ग में बाधा डालने में देवता भी असमर्थ रहे, जो संतों के शरणदाता हैं, बार-बार जय हो ॥१३॥

व्युत्पाद्यान्तेवासिनः पाणिनीये
काणादे यो ब्रह्मविद्यां प्रदद्यात्।
भारत्यन्तः कोऽपि जेजीयतेऽसौ
ब्रह्मानन्दो वन्दनीयो मुनीनाम् ॥१४॥

अपने अन्तेवासी शिष्यों को पाणिनीय (व्याकरण) में और काणाद (न्याय वैशेषिक शास्त्र) में व्युतपन्न कर जो ब्रह्मविद्या प्रदान करते हैं, मुनियों के भी वन्दनीय अवर्णनीय महिमा सम्पन्न भारतीशब्दान्त नाम वाले वे ब्रह्मानन्द भारती जी महाराज अतिशय रूप से उत्कर्ष प्राप्त हो रहे हैं-बार-बार उनकी जय हो ॥१४॥

न्यायवेदान्तसिद्धान्त-सरो गाहनधन्यधीः ।
निर्दोषानन्दनामा च जयतान्मण्डलेश्वरः ॥१५॥

न्याय शास्त्र तथा वेदान्त शास्त्र के सिद्धान्त सरोवर में गोते लगाने से जिसकी मति धन्य हो गई उन निर्दोषानन्द गिरि मण्डलेश्वर की जय हो ॥१५॥

अचेतनजनानपि प्रवचनागतांश्चेतयन्
निरस्ततिमिरप्रथः स्फुरितचेतनोपाश्रयात्।
स्वयं प्रभनिजैकचेतनतया सदावस्थितः
स चेतनगिरिर्यतिर्जयति मण्डलेशो महान् ॥१६॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

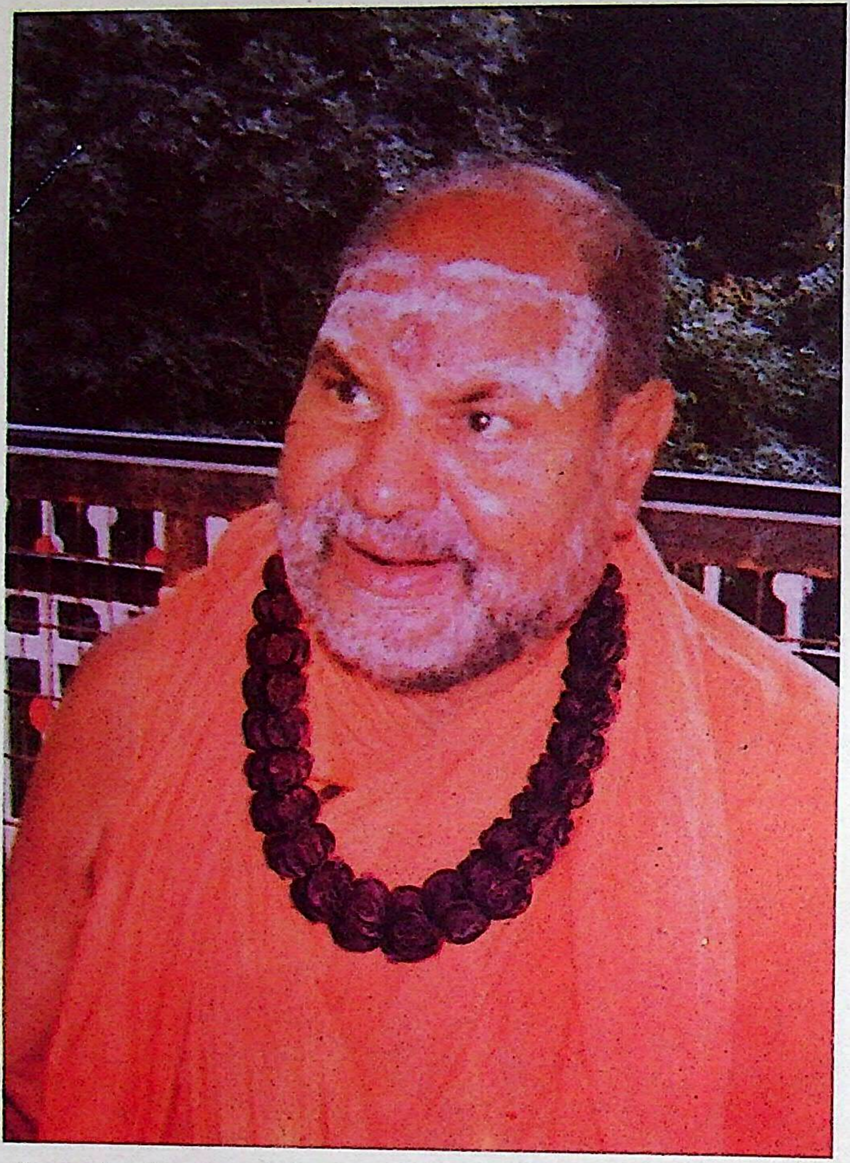

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ अनन्त श्री विभूषित स्वामी हरिहर तीर्थ जी महाराज(श्री छोटे महाराज जी)- कैलास आश्रम की एक दिव्य विभूति
His Holiness Shri Swami Harihar Teerth Ji Maharaj
– The distinguished Saint of Kailas Ashram

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

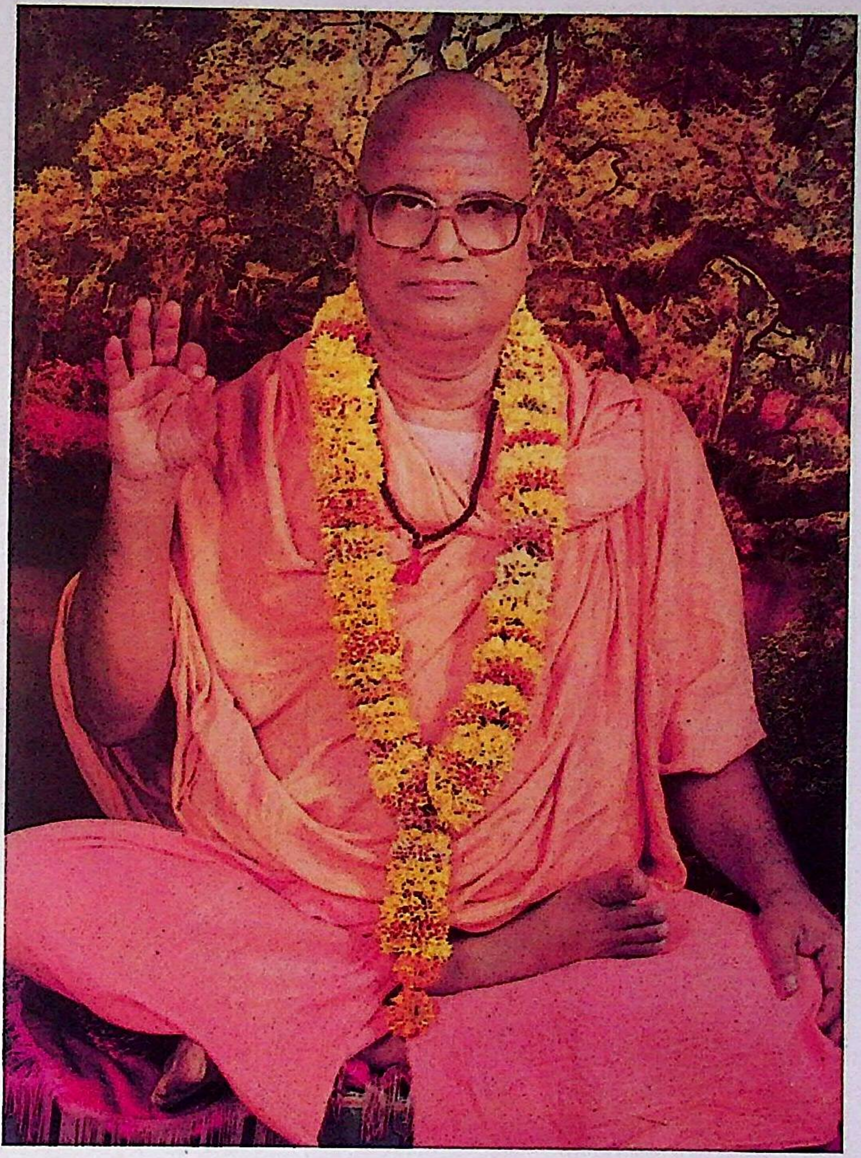

''श्री कैलासाश्रमाचार्यपरम्परा विजयप्रशस्तिः'' के रचयिता श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ आ.म.मं. अनन्तश्रीमत्स्वामी काशिकानन्द गिरिजी महाराज आनन्दवन आश्रम, बम्बई

His Holiness Shri Swami Kashikanand Giri Ji Maharaj, the learned author of Vijay Prashasti, Anandvan Ashram, Bombay.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिनके प्रवचन में श्रवणार्थ आये अचेतन (जड़मति) जन भी चेत जाते हैं, ज्ञानप्रकाश पाते हैं, ब्रह्माकार वृत्ति से स्फुरित चैतन्य के आश्रयण से जिन्होंने स्वयं अपने अज्ञान विस्तार को सर्वथा निरस्त कर दिया है, स्वयंप्रकाश निजचेतनमात्र रूप से जो सदा अवस्थित रहते हैं, वे चेतनगिरि जी महाराज महामण्डलेश्वर उत्कर्षयुक्त हो रहे हैं ॥१६॥

पञ्चदश्याः विशेषज्ञः स्वाश्रमोद्धारदत्तधीः ।
मण्डलेशश्च जयतात् स्वतन्त्रानन्दसंयमी ॥१७॥

पञ्चदशी जैसे वेदान्त ग्रन्थों के विशेषज्ञ, अपने आश्रम के उद्धार में दत्तचित्त स्वतन्त्रानन्द गिरिजी महाराज महामण्डलेश्वर का भी उत्कर्ष हो ॥१७॥

श्रुतिसरसि सदा निमज्जमानो-
ऽप्यनुभवभूमिषु सञ्चरन्नुदञ्ची ।
सममतिरसमेतरो जगत्यां
हरिहरतीर्थयतिर्जयत्यजस्रम् ॥१८॥

श्री हरिहरतीर्थ स्वामी की अतिविलक्षणता लोकोत्तर है। एक ओर सदा सरोवर में निमग्न रहते हैं तो दूसरी ओर भूमि में सदा स्थित हैं और तीसरी ओर सदा आसमान में उड़ रहे हैं। कैसे? श्रुति सरोवर में निरन्तर डुबकी लगा रहे हैं, ज्ञान भूमिकाओं में सदा स्थित हैं और उत् = ब्रह्म में अञ्चनशील-ऊर्ध्व ब्रह्म आकाश में विचरण कर रहे हैं। और भी विशेषता- एक ओर सममति है, दूसरी ओर असमेतर है। कैसे? समब्रह्म में सदा लगे हैं। उनके सम या उनसे इतर कोई नहीं है। उनके सदृश अन्य कोई नहीं है। ऐसे हरिहरतीर्थजी महाराज की नित्य जय हो ॥१८॥

कैलासीयप्रतिष्ठाशततमशरदो व्याजतः पूर्णतोयो
जीर्णोद्धारं मठानां व्यधित समतनोत् संप्रदाये गतिं च।
आसेतोराहिमाद्रेः प्रथितनिजयशाः श्रौतविद्याप्रचारै-
र्विद्यानन्दाभिधोऽयं जयतु यतिवरः सांप्रतं मण्डलेशः ॥१९॥

कैलासाश्रम की प्रतिष्ठा के सौवें वर्ष (शताब्दी) महोत्सव के ब्याज से जिन्होंने पूर्णतया मठों का जीर्णोद्धार किया और विद्या-संप्रदाय को गति प्रदान की (गतिशील बनाया), सेतुबन्ध रामेश्वर से लेकर हिमालय पर्यन्त वेद वेदान्त विद्या प्रचार के द्वारा जिन्होंने अपने यश को फैलाया उन श्रीमान् विद्यानन्द नाम के वर्तमान मण्डलेश्वर का उत्कर्ष हो ऐसा हमारा आशीर्वाद है ॥१९॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न्याये वेदान्तशास्त्रे सततकृतमतिर्दक्षिणामूर्त्तिसंज्ञे
योगं कुर्वन् हठाख्यं प्रतिवसति मठे निष्प्रपञ्चप्रपञ्चः।
आशासानश्च शैवीमविरतकरुणां शाश्वतानन्द नामा
प्रोद्दामप्रेमधामा जयति यतिकुले वर्णिनां कर्णधारः ॥२०॥

न्याय शास्त्र तथा वेदान्त शास्त्र में हमेशा लगे हुए, दक्षिणामूर्त्ति मठ में हठ नामक योग करते हुए निष्प्रपञ्च ब्रह्म का अध्यापनादि द्वारा विस्तार करते हुए, भगवान् शङ्कर की निरन्तर कृपा की आशा में जो रह रहे हैं, वे ब्रह्मचारियों के कर्णधार (कर्णवास के धार भी?) प्रेमधाम श्री शाश्वतानन्द जी महाराज भी संतकुल में उत्कर्ष प्राप्त हों ऐसी हम आशा करते हैं ॥२०॥

शेषाशेषवचोविचारचतुरः काणादवाणीचणो
मीमांसासु च मांसलः समयिसत्तन्त्रस्वतन्त्रक्रमः।
वेदान्तार्थनितान्तचिन्तनरतो मुक्ताहरिद्धारवद्
विन्यस्तां विजयप्रशस्तिमतनोत् श्रीकाशिको देशिकः ॥२१॥

शेषभगवान् पतञ्जलि के व्याकरण महाभाष्य तथा योग सूत्रादि अशेष वचनों के विचार करने में निपुण, कणाद तथा उपलक्षित गौतमीय वाणी के अध्ययनादि से धन्यताप्राप्त, मीमांसा शास्त्रों में सशक्त मनन युक्त, समयियों के दक्षिणतन्त्र में स्वतन्त्र गतियुक्त, वेदान्तार्थ के सम्यक् चिन्तन में तत्पर आचार्य श्री काशिकानन्द जी महामण्डलेश्वर ने मोती और मरकत मणि के हार के समान ऋषिकेश कैलासाश्रम और वराहक्षेत्र कैलासाश्रम के आचार्यों का नामविन्यास करते हुए इस विजयप्रशस्ति की रचना की ॥२१॥

इमां पठेद्यो विजयप्रशस्तिं पुरस्कृतां श्रीजयमङ्गलेन ।
उपैति कैलासपरम्परायाः कृपामसौ कामपि बोधहेतुम् ॥२२॥

श्रीजयमङ्गलाचार्य द्वारा प्रस्तुत इस विजय प्रशस्ति का जो पाठ करता है, वह कैलासाश्रमीय आचार्य परम्परा की अवर्णनीय महती कृपा का पात्र होगा जो परमार्थ बोध हेतु है ॥२२॥

इति श्रीस्वामिकाशिकानन्दगिरिमहामण्डलेश्वरकृता कैलासाश्रमाचार्यपरम्पराविजयप्रशस्तिः

आनन्दवन आश्रम
कांदीवली, बम्बई

– महामण्डलेश्वर श्री स्वामी काशिकानन्द गिरि जी महाराज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

महाराजश्री के सद्गुरुदेव श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ अनन्त श्रीमत्स्वामी विज्ञानानन्दगिरिजी महाराज, जो महाराजश्री के अनुरोध पर अन्तिम कुछ समय कैलास आश्रम में रहे और वहीं ब्रह्मलीनता को प्राप्त हुए।

His Holiness Shri Swami Vigyanananda Giri Ji Maharaj who initiated Maharaj Shri into the life of a Monk.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

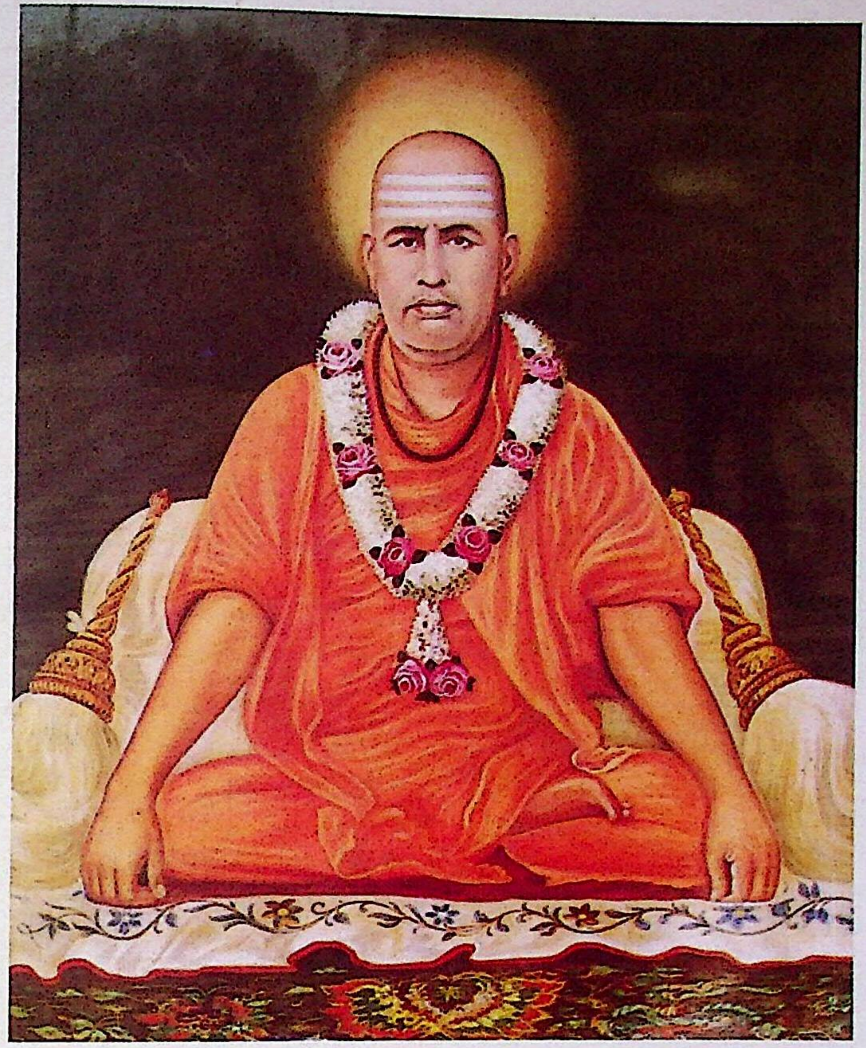

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ निरञ्जनपीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर
अनन्त श्रीविभूषित स्वामी नृसिंहगिरिजी महाराज, जिन की कृपा छाया
में महाराज श्री ने परीक्षाक्रम से मध्यमा से वेदान्त – सर्वदर्शनाचार्य पर्यन्त अध्ययन किया
और तत्पश्चात् बारह वर्षों तक प्राध्यापक एवं प्रधानाचार्य पदों को स्वीकार कर
निःशुल्क विद्या महादान किया।

Acharya Mahamandleshwar His Holiness Shri Swami Narsingh Giri Ji Maharaj
under whose gracious guidance Maharaj Shri studied in Varanasi & later stayed in
Delhi as Principal, Shri Vishwanath Sanskrit Mahavidyalaya.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मंगल कामना

महाराज श्री के अभिनन्दन ग्रन्थ 'यतीन्द्र तिलक' के लिए प्राप्त उनके गुरुदेव श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमत्स्वामी विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज का मंगल संदेश

मण्डलेश्वर जी जिस समय गृहस्थ में थे, पहले-पहल जब वह मुझसे मिले तब मैं उनको देखकर आश्चर्य में पड़ गया। अभी थोड़ी अवस्था है। फिर (मैंने) प्रश्न बड़ा गम्भीर किया। कबीर की एक साखी का अर्थ पूछा। इन्होंने तत्काल यथोचित उत्तर दिया। उसी समय यह समझ लिया, यह लड़का बड़ा कुशाग्रबुद्धि का है। ''होनहार विरवान के होत चीकने पात'' यह कहावत बिल्कुल ठीक निकली, पढ़ने में भी वैसे ही थे। समझ शक्ति अति तीक्ष्ण थी। मुझसे बराबर मिलते रहते थे। अनुकरणीय स्वभाव था। मुझे देख-देख कर भजन, ध्यान करते थे। पढ़ने में मेरी आज्ञा मानकर अष्टाध्यायी महाभाष्य पढ़े। मेरा आचरण देख-देखकर समझ जाते थे कि इनसे सत्संग करना चाहिए।

इनकी बुद्धि, विवेक, आचरण, व्यवहार देखकर मैं आश्चर्य में पड़ जाता था। मैंने इनको कभी कुछ भी नहीं बताया, कभी कुछ भी नहीं कहा फिर भी ये सब जान गए। इनका आचरण देख मैं शिक्षा लेता था। थोड़ी ही अवस्था में बहुत साधन-भजन कर लिया। वैराग्य, ज्ञान तितिक्षा बहुत अधिक थी। इनमें सभी गुण सम्पन्न थे। यह उनकी उस अवस्था की बात मैं लिख रहा हूँ जिस समय ये १५-१६ वर्ष के थे। मैं इनका जीवन देख लालायित हो गया । यह एक अद्‌भुत होनहार बालक थे। इनके जीवन के बारे में क्या लिखा जाए। जो भी लिखा जाए वह थोड़ा होगा। मैं उनके मंगलमय जीवन की कामना करता हूँ।

कामता

५ जनवरी, १९८१

– स्वामी विज्ञानानन्द गिरि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य निरञ्जनपीठाधीश्वर
महामण्डलेश्वर श्री स्वामी नृसिंहगिरि जी महाराज का

महाराज श्री के पट्टाभिषेक

के पावन अवसर पर पत्र द्वारा शुभ-सन्देश

ॐस्वस्ति श्री परमविचारशील परमप्रेमास्पद श्रीमान् स्वामी विद्यानन्द गिरि जी! सप्रेम ॐ नमो नारायणाय। शुभं भवतु। कल आपका पत्र मिला, समाचार ज्ञात हुआ, वहाँ जाने पर सभी महात्माओं ने आपको इस कार्य के लिए राजी किया है। मेरी तो पहले से ही प्रसन्नता है कि आप इस कार्य को ग्रहण करें। कैलास आश्रम के मण्डलेश्वर की चद्दर आपको होवे। मैं तो कैलास आश्रम को अपना घर ही समझता हूँ, वहाँ बहुत वर्ष रहकर मैंने कुछ योग्यता संपादन किया है। बड़े महाराज की बड़ी कृपा है। अतः आप समय पर यह कार्य को करके बड़े आनन्द से रहें। बड़ा योग्य स्थान है। वहाँ आप अधिष्ठाता होवें, बड़े सुन्दर ढंग से कार्य चलाते रहे। यह मेरी शुभाभिलाषा है। तत्रस्थ बड़े महाराज जी तथा शास्त्री जी महाराज और सभी महात्माओं को ॐ नमो नारायणाय। आप आनन्द से रहें। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

बीकानेर

२९ जून, १९६९

–नृसिंहगिरिः

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

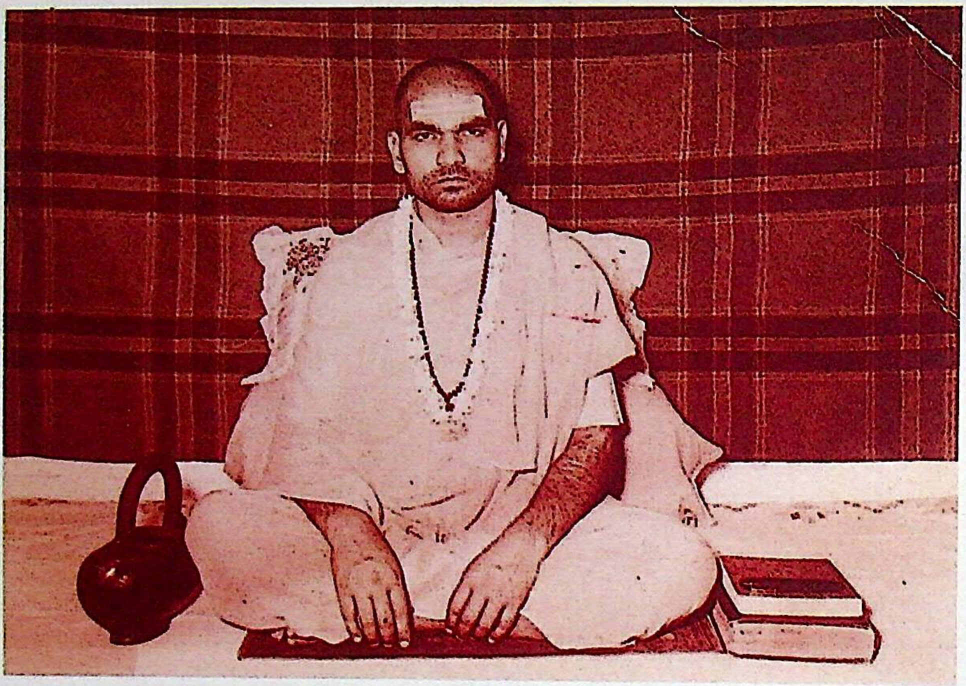

महाराज श्री प्रधानाचार्य ब्रह्मचारी श्री विद्यानन्द 'जिज्ञासु' के रूप में (चित्र १९५९ई०)
Maharaj Shri in 1959 when he was Principal, Shri Vishwanath Sanskrit Mahavidyalya, Delhi.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

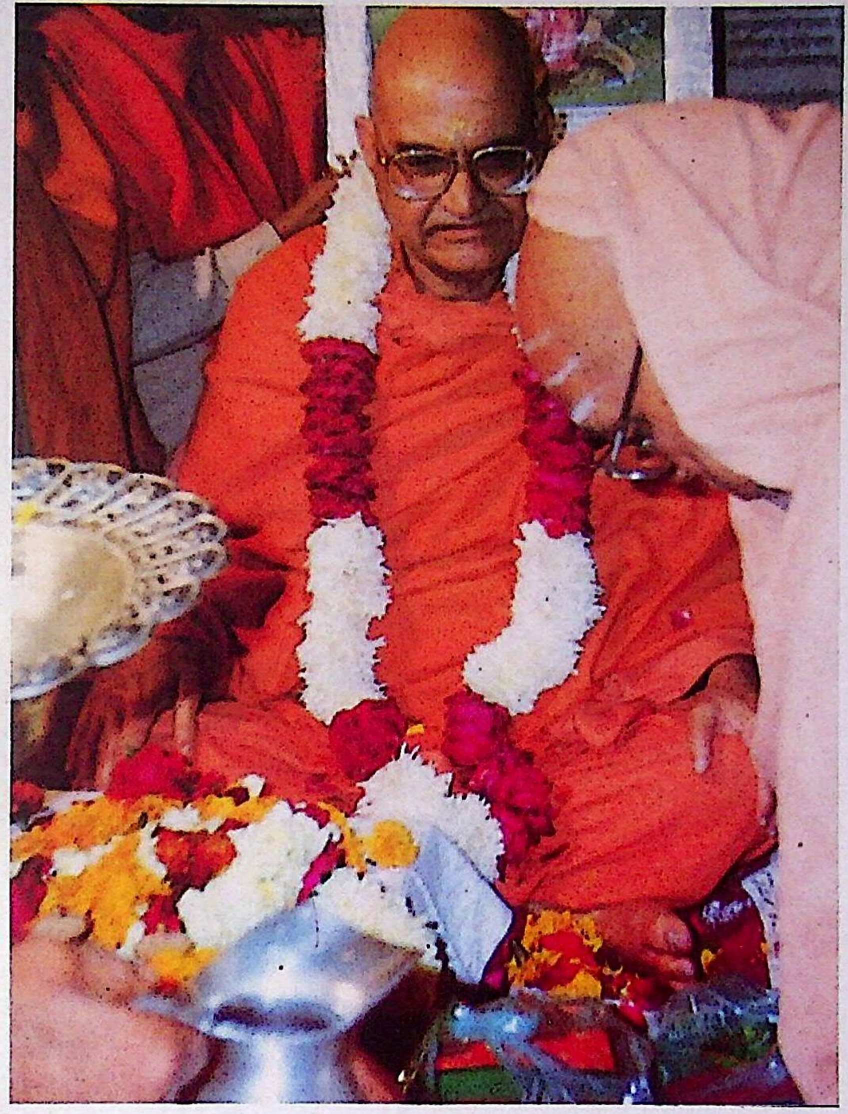

संन्यास रजत जयन्ती महोत्सव के पावन प्रसंग पर श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रोत्रिय
ब्रह्मनिष्ठ निरञ्जनपीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर
अनन्त श्रीमत्स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज की पूजा करते हुए महाराज श्री
Maharaj Shri worshipping his Sanyasa Diksha Guru
His Holiness Shri Swami Maheshananda Giri Ji Maharaj, on the auspicious
occasion of the Silver Jubilee of his initiation into Sanyasa

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाराज जी की संक्षिप्त जीवनी

महाराज श्री का समुज्ज्वल जीवन वृत्तान्त कई पुस्तकों में छप चुका है जिन में ''यतीन्द्रतिलक'', ''कैलास आश्रम शताब्दी स्मारिका'', ''आदर्श जीवन'', ''श्रीमद्भगवद्गीता अष्टादशाह प्रवचन'' मुख्य हैं। ''चित्राञ्जलिः'' में संक्षिप्त रूप से देने का उद्देश्य उसके पुण्य संस्मरण द्वारा हृदय को पवित्र करना है। महाराज श्री का जन्म पवित्र ब्राह्मण कुल के तपःपूत दम्पति श्रीमान् जवाहर शर्मा एवं श्रीमती ललिता देवी के यहाँ ग्राम गाज़ीपुर जिला पटना (बिहार) में भौमावस्या माघ मास वि.सं. १९७८ को हुआ। महापुरुषों के सभी लक्षण आपमें बाल्यकाल से ही दृष्टिगोचर होने लगे। १५ वर्ष की आयु में आप का विवाह ब्राह्मण कन्या श्री रामप्यारी देवी से हुआ, जिन्होंने आपके हृदय में सुषुप्त परमात्म भक्ति को जगाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। बीस वर्ष की आयु में आपने अत्यधिक आध्यात्मिक सम्पत्ति अर्जित करके गृहस्थाश्रम का परित्याग कर दिया और नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर अखण्ड परमार्थ साधना में लग गए। संस्कृत विद्या पिपासा ने आपको काशी जाने के लिए प्रेरित किया। वहाँ दक्षिणामूर्त्ति मठ में निवास कर आपने मध्यमा से लेकर वेदान्त-सर्वदर्शनाचार्य पर्यन्त परीक्षाओं को प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया। तत्पश्चात् वाराणसी में दो वर्ष प्राध्यापक एवं दिल्ली विश्वनाथ संस्कृत महाविद्यालय में दस वर्षों तक प्रधानाचार्य पद को सुशोभित कर निःशुल्क विद्या महादान करते रहे।

भगवत्प्रेरणा से कैलास आश्रम के हितैषी विशिष्ट सन्तों ने वहाँ के आचार्यों के सम्मुख महाराज श्री को कैलास के महामण्डलेश्वर पद पर आसीन करने का प्रस्ताव रखा, जिसको उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया। तदनुसार आषाढ़ शु. सप्तमी वि.सं. २०२६ के पावन दिवस महाराज श्री का पट्टाभिषेक बड़ी धूमधाम से हुआ। पिछले २५ वर्षों का कैलासाश्रम का इतिहास स्वर्णयुग माना जाएगा जिसमें महाराज श्री ने जो कार्य सम्पन्न किए हैं उससे कैलासाश्रम की सर्वतोभावेण उन्नति हुई है। अब कैलास ब्रह्मविद्या पीठ के अधीन १० संस्थाएं और २ शाखाएं और भी हैं जिनका उल्लेख ''चित्राञ्जलिः'' में हो चुका है।

धार्मिक प्रतिष्ठानों की सेवा पाँच प्रकार से की जाती है-(१) सुयोग्य विद्वान् निष्ठावान् सन्तों को तैयार कर संस्था के लिए समर्पित करना। (२) साहित्य की रचना द्वारा संस्था को समृद्ध करना। (३) साहित्य प्रकाशन द्वारा संस्था को दैवी सम्पद से सम्पन्न करना। (४) आर्थिक समृद्धि से युक्त करना। (५) व्यापक प्रचार द्वारा संस्था के यश को जन-जन तक पहुँचाने का सफल प्रयास करना। महाराज श्री ने अत्यन्त उत्साह पूर्वक उक्त पाँचों प्रकार से कैलास आश्रम की सेवा की है। आश्चर्य की बात यह है कि प्रचलित परम्परा के सदृश्य महाराज श्री कैलास आश्रम के औरस पुत्र (शिष्य) न होते हुए भी हजारों औरस पुत्रों से बढ़कर कैलास पीठ की सेवा कर रहे हैं। महाराज श्री के विनम्र वचनों में इसमें भगवत्कृपा एवं पूर्वाचार्यों का आशीर्वाद ही हेतु है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संन्यास रजत जयन्ती

महाराज श्री समयोचित महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न करने में कभी चूकते नहीं। गुरुजनों के प्रति सच्ची निष्ठा एवं भक्ति उनके हृदय में सदैव बनी रहती है। संन्यास रजत जयन्ती की परिकल्पना उसी का एक ज्वलन्त उदाहरण है। जिन्ह आचार्य प्रवर निरञ्जनपीठाधीश्वर अनन्त श्रीमत्स्वामी महेशानन्द गिरिजी महाराज के करकमलों द्वारा आपका संन्यास दीक्षा संस्कार माघ कृष्ण द्वितीया वि.सं. २०२४ (१८ जनवरी, १९६८ ई.) को कालिन्दीकूल में स्थित श्री विश्वनाथ संन्यास आश्रम दिल्ली में सम्पन्न हुआ था उनकी उसी स्थान पर २५ वर्षों बाद माघ कृ. द्वितीया वि.सं. २०४९ (१० जनवरी १९९३ ई.) को अर्चना करना एक उज्जवल आदर्श की संस्थापना मानी जाएगी।

महोत्सव के पावन दिवस पर विशिष्ट सन्तों ने पधार कर समारोह को सुशोभित किया। महाराज श्री ने अत्यन्त भक्तिभाव से अपने संन्यास दीक्षा गुरुदेव के चरणकमल धोये और चन्दन पुष्प दीप आदि सामग्री से उनकी अर्चना की जो दृश्य देखते ही बनता था। भगवान् श्री आद्य शंकराचार्य का अत्यन्त मनोहर चित्र रजत फ्रेम में मढ़वाकर आचार्य प्रवर को भेंट किया। आचार्यपाद ने अपने आशीर्वचनों में कहा कि "शिष्य गुरु दो शरीर दिखाई देते हुए भी वस्तुतः अभिन्न ब्रह्मस्वरूप होते हैं। गुरु शिष्य को सोना ही नहीं पारसमणि ही बना देता है। शिष्य के उत्कर्ष से गुरु कौ अत्यन्त प्रसन्नता होती है।" महाराज श्री के लिए उन्होंने भूरिशः मंगल कामना एवं आशीर्वाद दिया। महाराज श्री ने अपने सुन्दर एवं गम्भीर शब्दों में कृतज्ञता ज्ञापन करते हुए कहा कि हम ने जो भी योग्यता प्राप्त की है वह ब्रह्मलीन निरञ्जनपीठाधीश्वर अनन्त श्रीमत्स्वामी नृसिंह गिरि जी महाराज (बड़े महाराज जी) के चरणकमलों में बैठकर प्राप्त की है। वैसे ही संन्यास दीक्षा देकर आचार्यपाद ने जो उपकार किया है उस का हम सदा संस्मरण रखते हैं। प्रवचनों के पश्चात् चिर स्मरणीय भण्डारा हुआ जिसमें श्री गोवर्धन लाल चानना जी, मोती नगर दिल्ली, का सहयोग अत्यन्त सराहनीय माना जाएगा। इन्होंने सुन्दर थैलों का वितरण भी किया जिससे इस पावन प्रसंग की स्मृति चिरकाल तक बनी रहे।

पट्टाभिषेक रजत महोत्सव

कैलास आश्रम में चल रहे दिव्य वर्ष-पञ्चकम् महोत्सव (१० फरवरी, १९९२ से ७ मार्च, १९९७ तक) के अन्तर्गत २१ दिव्य समारोह हैं जिसमें मेरुस्थानीय पट्टाभिषेक रजत महोत्सव का शुभारम्भ (२६ जून, १९९३) सातवें स्थान पर है। उपरोक्त संन्यास रजत जयन्ती महोत्सव भी उसी माला के छठे मोती के स्थान पर है। पट्टाभिषेक रजत महोत्सव को छोड़कर सभी अन्य महोत्सवों की परिकल्पना महाराज श्री ने की है और वे उन सभी महोत्सवों के अध्यक्ष भी हैं। केवल पट्टाभिषेक रजत महोत्सव की योजना कैलास के सन्तों भक्तों ने की। पट्टाभिषेक रजत महोत्सवों के पावन प्रसंग पर सभी भक्त उनके आदर्श जीवन चरित्रों का पुण्य स्मरण करते हुए उनके चरण कमलों में हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करते हैं तथा उनकी दीर्घायु के लिए भगवान् से प्रार्थना करते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

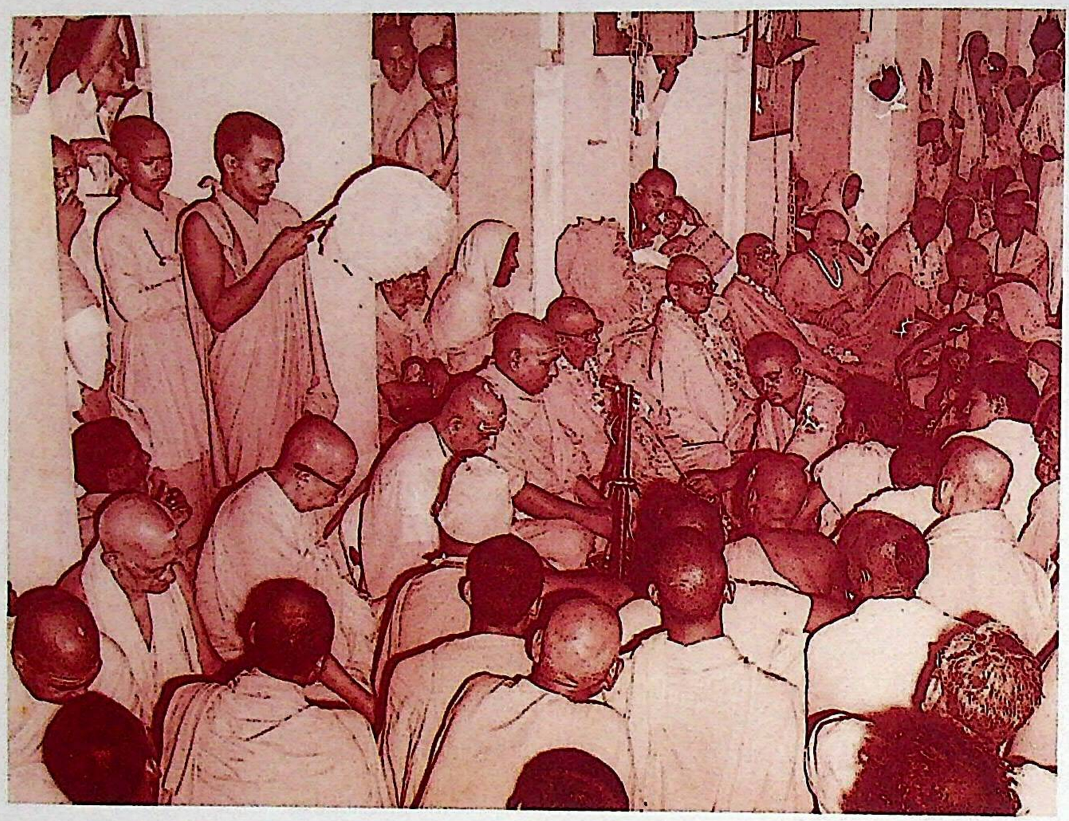

आषाढ़ शु. सप्तमी विक्रमी २०२६ के पावन दिवस पर कैलास आश्रम ब्रह्मविद्यापीठ पर दशम पीठाधीश्वर के अभिषेक का दृष्य। महाराज श्री के बाईं ओर षष्ठपीठाधीश्वर प.पू. श्री बड़े महाराज जी एवं अष्टमाचार्य प.पू. शास्त्री जी महाराज विराज रहे हैं।

This Photo depicts the auspicious occasion of Maharaj Shri's accession to the Acharya's seat of Kailas Brahm Vidya Peeth on July 21, 1969.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

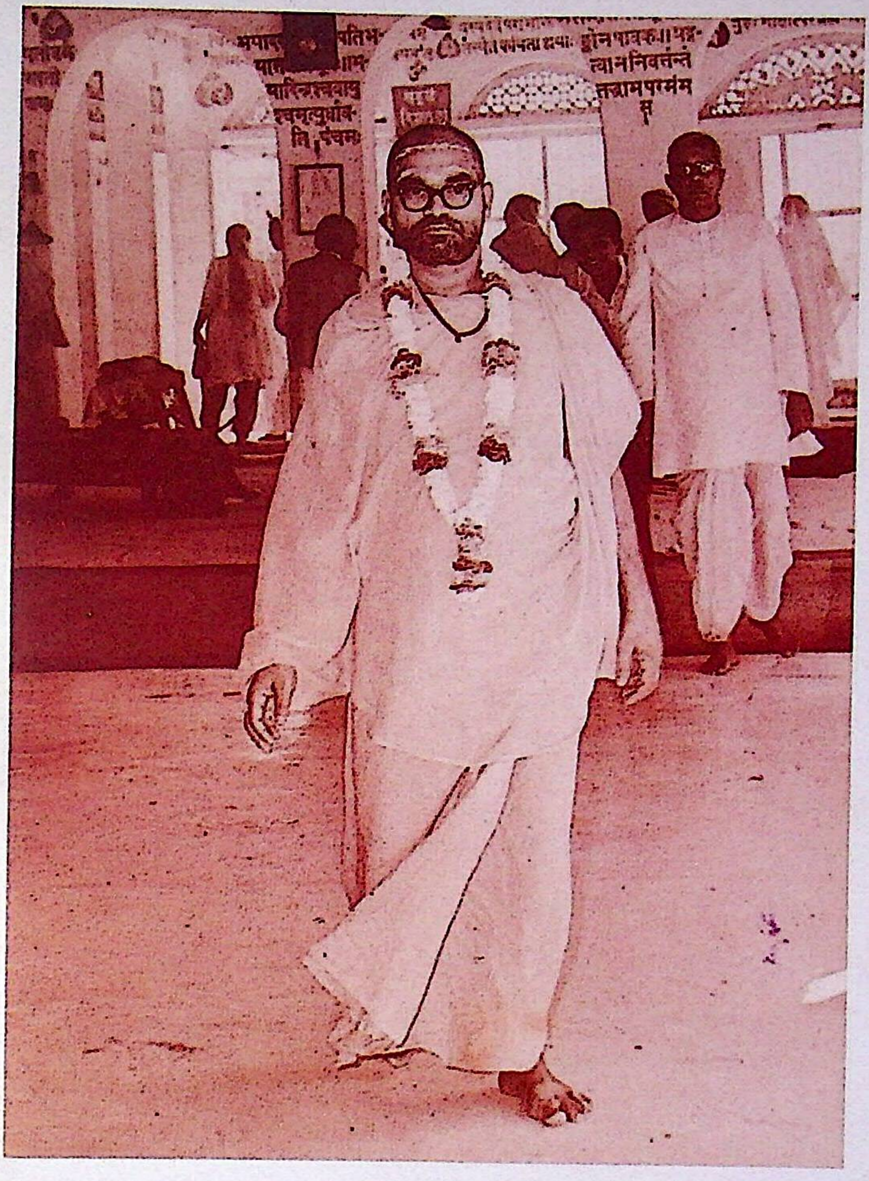

कैलास आश्रम का मुख्य उद्देश्य स्वाध्याय होने से महाराज श्री के वहाँ विराजने पर उनका अधिकतर समय स्वाध्याय करवाने में लगता है। पट्टाभिषेक के कुछ समय पश्चात् का यह चित्र उसी कर्तव्य को निभाकर मन्दिर के हाल से निर्गमन का है।

Maharaj Shri coming out of the Hall of Kailas Ashram after delivering discourse on Vedanta. This activity forms part of the daily routine at Kailas Ashram

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

॥ श्री परमात्मने नमः ॥

श्रीमज्जगद्गुरु भगवत्पादाद्यशङ्कराचार्यविरचित

प्रश्नोत्तरी

अपार संसारसमुद्रमध्ये
सम्मज्जतो मे शरणं किमस्ति।
गुरो कृपालो कृपया वदैत-
द्विश्वेशपादाम्बुजदीर्घनौका ॥१॥

(1) हे दयालु गुरुदेव! कृपा करके बताइए कि अपार संसार समुद्र में गोते लगाते हुए मेरा क्या सहारा है? इसपर गुरु कहते हैं कि तू परमात्मा के चरणकमलरूप दृढ़ नौका का ही आश्रय लो।

(1) Drowning in the midst of limitless ocean of the universe as I am, o merciful Master, kindly tell me what my refuge is ? The lotus feet of the Lord is the large boat (to rescue yourself).

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बद्धो हि को यो विषयानुरागी
का वा विमुक्तिर्विषये विरक्तिः।
को वास्ति घोरो नरकः स्वदेहः
तृष्णाक्षयः स्वर्गपदं किमस्ति॥२॥

(२) बँधा हुआ कौन है? जो विषयों में आसक्त है।

(३) मुक्ति क्या है? विषयों से वैराग्य।

(४) घोर नरक कौन सा है? निज शरीर।

(५) स्वर्ग का पद कौन सा है? तृष्णा का नाश।

(2) Who is bound? The one attached to sense objects.

(3) What is liberation? Dispassion towards sensual pleasure.

(4) Which is the foulest hell? Our own body.

(5) Which is the seat of Heaven? End of cravings.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पट्टाभिषेक के पश्चात् महाराज श्री का ध्यान सर्वप्रथम कैलास आश्रम, उत्तरकाशी के जीर्णोद्धार की ओर आकर्षित हुआ। इसके फलस्वरूप सुदामा की कुटिया की तरह घास-फूस के आश्रम के स्थान पर एक भव्य विशाल आश्रम सुशोभित है। इस चित्र में भक्तों सहित महाराज श्री आश्रम से जुड़े हुए घाट पर श्री गंगा दशहरा के पावन पर्व पर श्री गंगाजी का पूजन कर रहे हैं।

Maharaj Shri at the bank of Holy Ganga River at Kailash Ashram, Uttarkashi.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

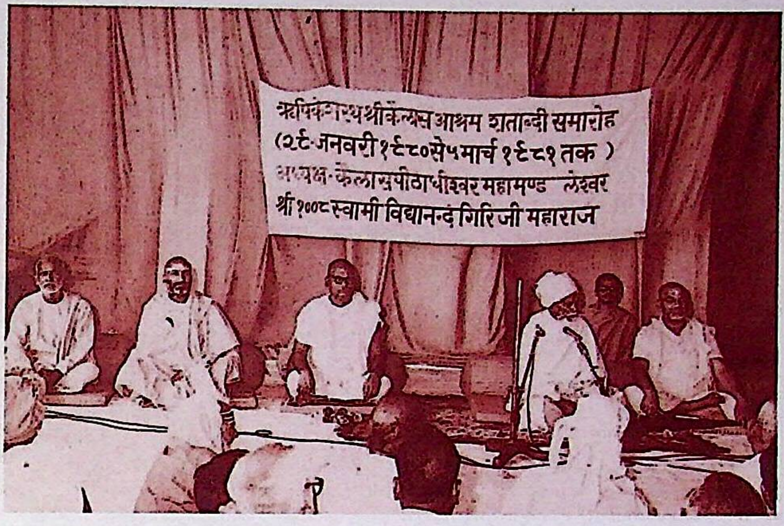

दशनाम संन्यास आश्रम, हरिद्वार में कैलास आश्रम शताब्दी समारोह

The Centenary Celebration of Kailas Ashram at Haridwar.

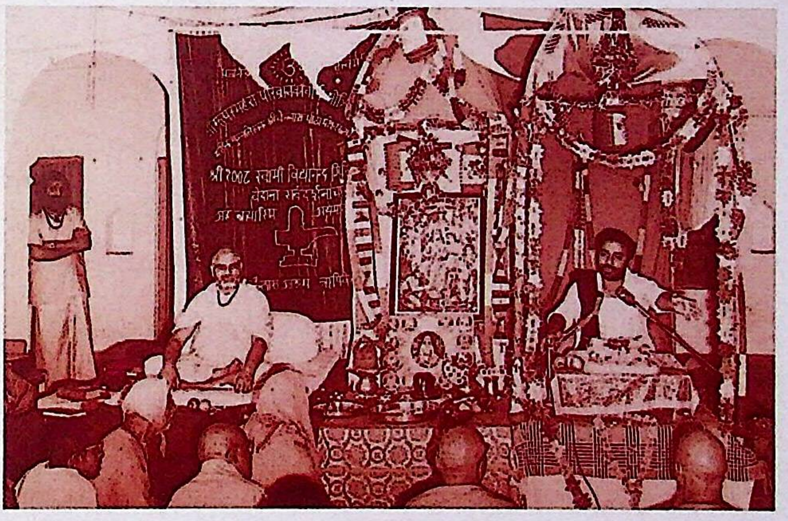

शताब्दी महोत्सव के अन्तर्गत १७ मार्च, १९८० से २५ मार्च, १९८० तक दशनाम संन्यास आश्रम हरिद्वार में हुई श्री मोरारी बापू की रामकथा का पावन दृश्य

Shri Ram Katha by Shri Murari Bapu as a part of Centenary Celebrations at Haridwar

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संसारहृत्कः श्रुतिजात्मबोधः

को मोक्षहेतुः कथितः स एव।

द्वारं किमेकं नरकस्य नारी

का स्वर्गदा प्राणभृतामहिंसा ॥3 ॥

(६) जगत् प्रतीति का नाशक कौन? श्रुति जन्य आत्मबोध।

(७) मोक्ष में हेतु क्या? वही आत्मज्ञान।

(८) नरक यातना का मुख्य द्वार कौन सा है? नारी (विषयक काम)।

(९) स्वर्ग किससे मिलता है? प्राणीमात्र के प्रति अहिंसा व्रत के पालन से।

(6) What is that which destroys the illusion of the world? The knowledge of the Self as contained in the Vedas.

(7) What is the cause of salvation? The same knowledge.

(8) Which is the main door to hell? Woman (Sexual desire).

(9) What is that which leads to heaven? Non-voilence towards all creatures

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शेते सुखं कस्तु समाधिनिष्ठो
जागर्ति को वा सदसद्विवेकी।
के शत्रवः सन्ति निजेन्द्रियाणि
तान्येव मित्राणि जितानि यानि ॥४॥

(१०) सुख से कौंन सोता है? योगनिष्ठ।

(११) जाग कौन रहा है? जिसका सदसद् विवेक जागृत है।

(१२-१३) शत्रु कौन है? अपनी इन्द्रियाँ ही; परन्तु जिसने उनको जीत रखा है उसकी वे मित्र हैं।

(10) Whose sleep is comfortable? An accomplished Meditator's.

(11) Who is awake? The one who can discrimate between real and false.

(12-13) Who are our enemies? Our own (uncontrolled) senses but who turn friends when controlled.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

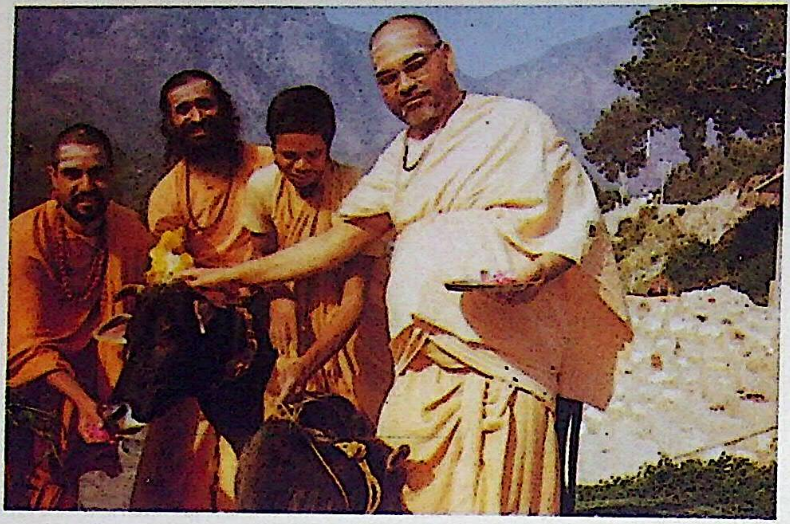

महाराज श्री गो भक्त हैं। कैलास आश्रम में सुन्दर सुखद स्वामी प्रेमपुरी गोसदन का निर्माण कराया। हरिद्वार और उत्तरकाशी में भी गोसदनों की स्थापना की। इन सब के संचालन के लिए श्री कैलास गो सेवा प्रतिष्ठान की संस्थापना भी की। चित्र में उत्तरकाशी में गो पूजन का दृश्य।

Maharaj Shri worshipping the Cow at Uttarkashi

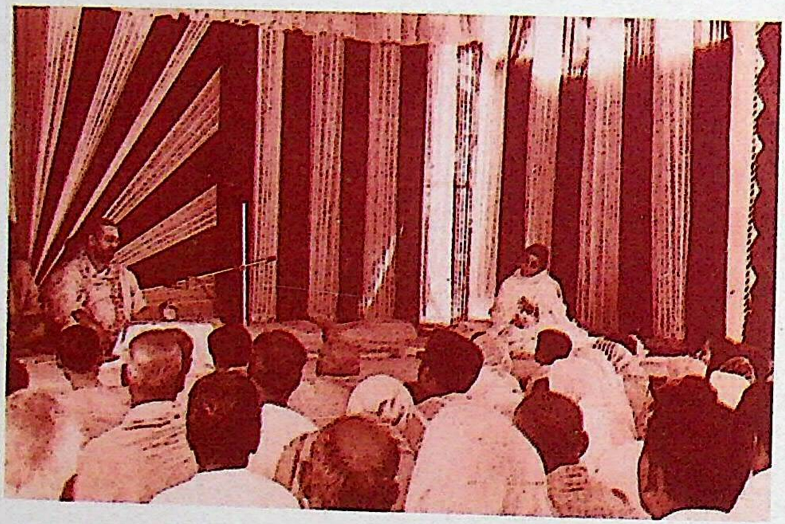

परमपूज्य आनन्दमयी माँ का महाराज श्री के प्रति विशेष वात्सल्य भाव था। चित्र में श्री कैलास आश्रम ऋषिकेश में आयोजित माँ के संयम सप्ताह में प्रवचन करते हुए महाराज श्री

Maharaj Shri giving discourse in the Week long discipline of Shri Shri Anand Mai Ma at Kailas Ashram, Rishikesh

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरुभक्ति से प्रेरित हो महाराज श्री ने गुरुजनों एवं पूर्वाचार्यों की पुण्य स्मृति में अनेक महोत्सवों का सृजन किया है। चित्र में दिव्य विभूति द्वय जन्म शताब्दी (१० अप्रैल, १९८५ से ८ मई, १९८६ तक) समारोह के अन्तर्गत मानस मर्मज्ञ डॉ. राम तवक्कया शर्मा जी की रामकथा का दृश्य

During the Birth Centenary Celebration of the two great saints, Maharaj Shri arranged various religious activities. The above pictures show Dr. Ram Tawakya Sharma, a renowned scholar who gave discourses on Ramcharitmanasa

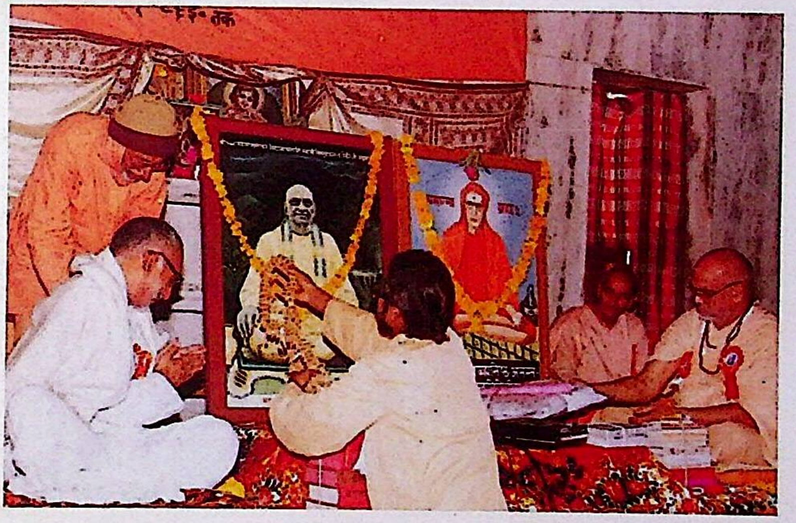

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को वा दरिद्रो हि विशालतृष्णः
श्रीमांश्च को यस्य समस्त तोषः।
जीवन्मृतः कस्तु निरुद्यमो यः
किं वामृतं स्यात्सुखदा निराशा ॥५॥

(१४) दरिद्र कौन है? जिस की तृष्णा बहुत बढ़ी हुई है।

(१५) श्री सम्पन्न कौन? जो सब प्रकार से संतोषी है।

(१६) जीते जी मरा कौन है? जो पुरुषार्थहीन है।

(१७) सुधा क्या है? आशा रहित सुखद स्थिति।

(14) Who is poor? Whose cravings increase.

(15) Who is rich? Whose desires are no more.

(16) Who is a living dead? One devoid of struggle.

(17) What is nectar? Non-expecting pleasing disposition.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाशो हि को यो ममताभिमानः
सम्मोहयत्येव सुरेव का स्त्री।
को वा महान्धो मदनातुरो यो
मृत्युश्च को वापयशः स्वकीयम् ॥६॥

(१८) बंधनकारक क्या है? ममता और अभिमान।

(१९) मदिरा के समान मोहप्रद कौन है? स्त्री विषयक कामना।

(२०) महान अन्धा कौन है? जो कामाविष्ट है।

(२१) मृत्यु क्या है? अपना अपयश ही मृत्यु है।

(18) What is bondage? The feeling of 'I' and 'mine'.

(19) What intoxicates like alcohol? Opposite sex.

(20) Who is severly blind? One who brims with sexual desire.

(21) What is death? Loss of self-earned fame.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

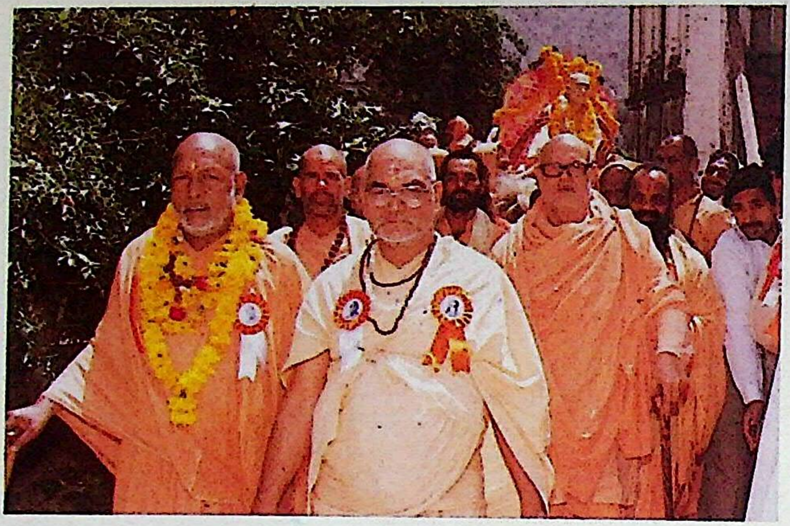

आचार्यद्वय जन्मशताब्दी महोत्सव के अन्तर्गत
ब्रह्मलीन प.पू. श्रीमत्स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरिजी महाराज की दर्शन मूर्ति की
संस्थापना से पूर्व शोभा यात्रा का दृश्य

The Statue of His Holiness Shri Swami Vishnudevananda Giri Ji Maharaj is taken in procession just before its installation in Kailas Ashram, Rishikesh

आचार्यद्वय जन्म शताब्दी महोत्सव के अंगरूप से कैलास आश्रम, ऋषिकेश में हुई
श्री मोरारी बापू की रामकथा का दृश्य

Shri Morari Bapu's Rama Katha at Shri Kailas Ashram, Rishikesh in 1986.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

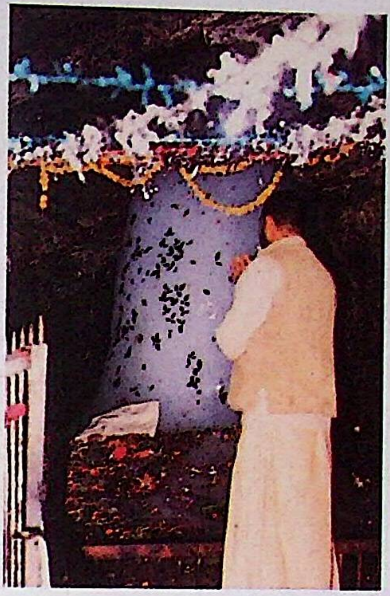

आचार्यद्वय जन्म शताब्दी महोत्सव के अंगरूप श्री अमरनाथ यात्रा १५ जुलाई १९८५ ई. को सम्पन्न हुई। श्री अमरनाथ हिमलिंग के सन्मुख महाराज श्री एवं श्रीमत्स्वामी मुक्तानन्द गिरिजी श्रीशिव महिम्नः स्तोत्र का पाठ करते हुए।

Maharaj Shri reciting "Shiv Mahimna Stotra" before snow linga of Shri Amar Nath (July 15, 1985)

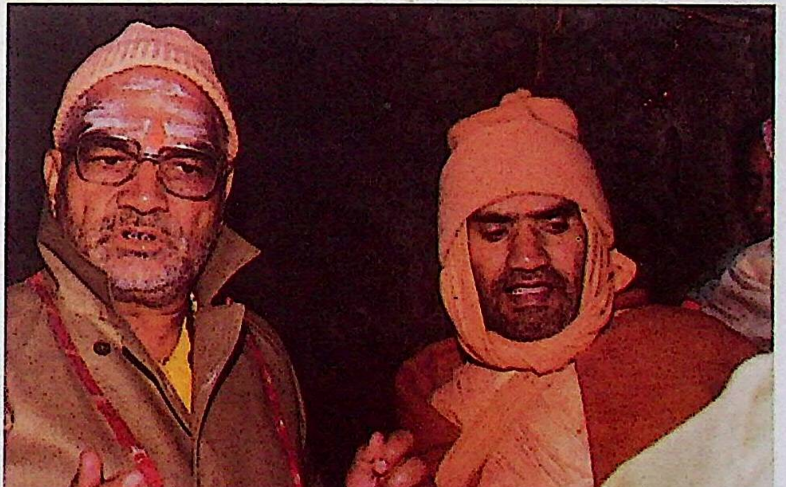

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को वा गुरुर्यो हि हितोपदेष्टा
शिष्यस्तु को यो गुरुभक्त एव।
को दीर्घरोगो भव एव साधो
किमौषधं तस्य विचार एव॥७॥

(२२) गुरु किसे जानें? जो हितोपदेशक हो।

(२३) शिष्य कौन? जो गुरुभक्त हो।

(२४) भारी रोग कौनसा है? जन्म और मरण।

(२५) इसकी औषधि क्या है? भगवद्विचार।

(22) Whom to call a teacher? One who preaches what is beneficial.

(23) Whom to consider a disciple? One devoted to the preceptor.

(24) Which is the chronic disease? Cycle of birth and death.

(25) What is the remedy. Flow of Godward thoughts.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किं भूषणाद्भूषणमस्ति शीलं
तीर्थं परं किं स्वमनो विशुद्धम्।
किमत्र हेयं कनकं च कान्ता
श्राव्यं सदा किं गुरुवेदवाक्यम्॥८॥

(२६) भूषण से भी अच्छा भूषण क्या है? चरित्र।

(२७) सबसे बड़ा तीर्थ कौन सा है? पवित्र हुआ अपना मन।

(२८) संसार में त्याज्य क्या है? कञ्चन और कामिनी।

(२९) सदा सुनने योग्य क्या है? गुरु और वेद वाणी।

(26) What is that shines more than an ornament? Character.

(27) Which is the holiest place? One's own purified mind.

(28) What to shun in this world? Gold and Woman (Opposite sex.)

(29) What is always worthy to hear? The words of the preceptor and the wisdom of the Vedas.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

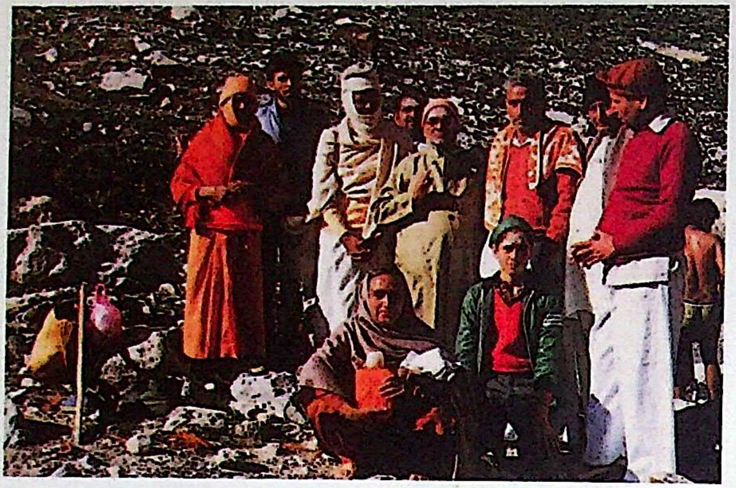

अमरनाथ यात्रा में अमर गंगा में स्नानान्तर महाराज श्री कुछ सन्तों एवं भक्तों के संग

Maharaj Shri with some saints & devotees during Amarnath Yatra

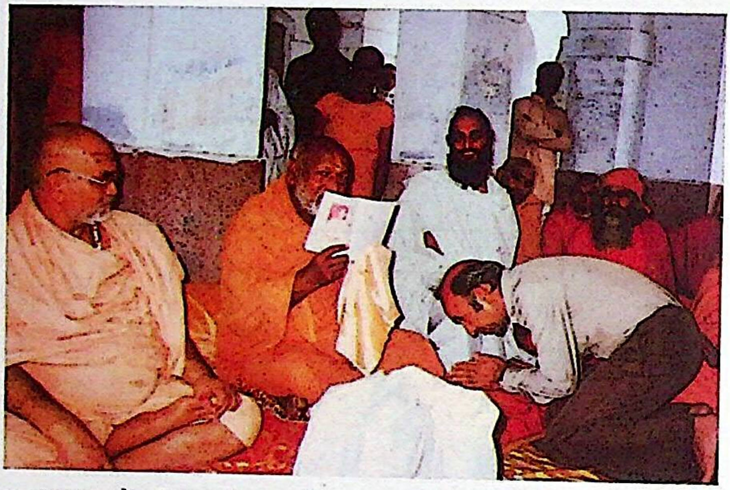

अमरनाथ यात्रा के संस्मरण 'अमर संस्मरण' पुस्तक रूप में छपे थे। साधना सदन के महामण्डलेश्वर अनन्त श्रीमत्स्वामी गणेशानन्द पुरी जी महाराज के करकमलों द्वारा उसके विमोचन का दृश्य। 'अमर संस्मरण' में महाराज श्री द्वारा निवन्ध "अमर संदेश" शीर्षक से छपा है जो पढ़ने योग्य है।

The Memoires of Amarnath Yatra have been published in a book titled 'Amar Sansmaran' which also includes, 'Eternal Message' from Maharaj Shri's pen and is worth reading. The photo shows release of the book by His Holiness Shri Swami Ganeshanand Puri Ji Maharaj, Head of Sadhana Sadan, Haridwar.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

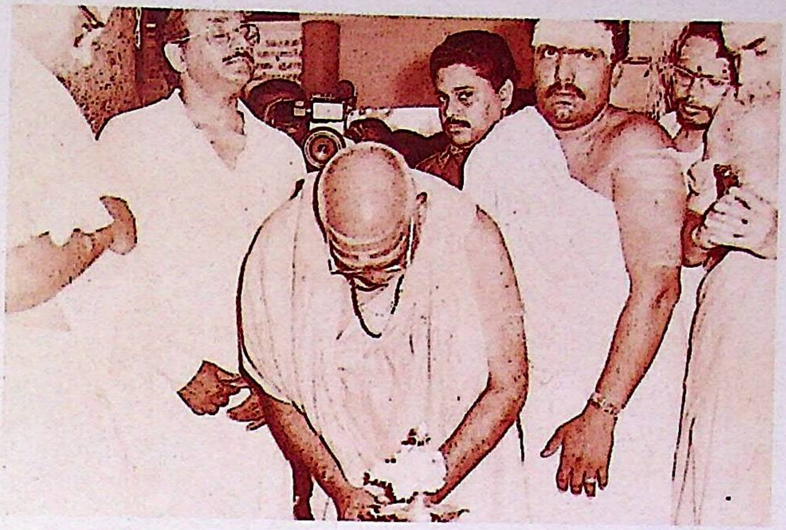

आदि श्री शंकराचार्य द्वादश शताब्दी समारोह में उनके जन्मस्थान कालड़ी में ज्योति प्रज्वलित करते हुए महाराजश्री

Maharaj Shri lighting the lamp at Kaladi, the birth place of Adi Shankaracharya during the 12th Centenary Celebrations of the Acharya.

ऋषिकेश – त्रिवेणी घाट पर आदि श्री शङ्कराचार्य द्वादश शताब्दी समारोह में महासमिति के अध्यक्ष, महाराज श्री एवं महामन्त्री, श्रीमत्स्वामी कल्याणानन्द सरस्वती जी, विचार विमर्श करते हुए।

12th Centenary Celebration of Adi Shankaracharya at Rishikesh.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के हेतवो ब्रह्मगतेस्तु सन्ति
सत्सङ्गतिर्दानविचारतोषाः।
के सन्ति सन्तोऽखिलवीतरागा
आपस्तमोहाः शिवतत्त्वनिष्ठाः ॥९॥

(३०) परमात्मा की प्राप्ति में हेतु क्या है? सत्संग, दान, विचार और संतोष।

(३१) सन्त कौन? जो सर्व आसक्ति मोह को छोड़ परमात्मतत्त्व में स्थित हो।

(30) What are the means of reaching God? Company of holy persons, giving of alms, divine thoughts and contentment.

(31) Who are saints? Those who are free from all attachments and delusion and are established in God.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को वा ज्वरः प्राणभृतां हि चिन्ता
मूर्खोऽस्ति को यस्तु विवेकहीनः।
कार्या प्रिया का शिवविष्णुभक्तिः
किं जीवनं दोषविवर्जितं यत् ॥१०॥

(३२) प्राणियों को ज्वररूप क्या है? चिन्ता।

(३३) मूर्ख कौन है? जो विवेकहीन है।

(३४) प्रिय क्रिया कौन सी है? शिव विष्णु भक्ति।

(३५) जीवन वही है जो दोष विहीन हो।

(32) What is like fever for the living-beings? Worry.

(33) Who is a fool? One devoid of discrimination.

(34) What is that which constitutes a loving activity? Devotion to Lord (Shiva and Vishnu)

(35) What is life? Which is lived without faulting.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

मद्रास में द्वादश शताब्दी समारोह में महाराज श्री भगवान् शङ्कराचार्य के चित्र की पूजा करते हुए

Maharaj Shri worshipping the photo of Adi Shankaracharya at Madras during 12th Centenary Celebration.

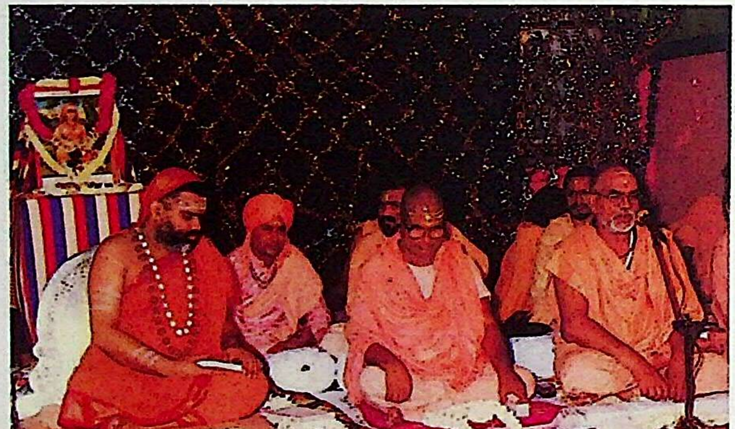

आद्य शङ्कराचार्य द्वादश शताब्दी महोत्सव के माहेश्वरी भवन, मद्रास में अधिवेशन के समय जगद्गुरु शङ्कराचार्य शृङ्गेरी स्वामी भारती तीर्थ जी महाराज तथा महामण्डलेश्वर श्रीस्वामी काशिकानन्द गिरिजी महाराज के साथ कैलासपीठाधीश्वर महाराज श्री।

Majaraj Shri with Jagadguru Shankaracharya His Holiness Swami Bharati Tirthji at Madras during 12th Centenary Celebration.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

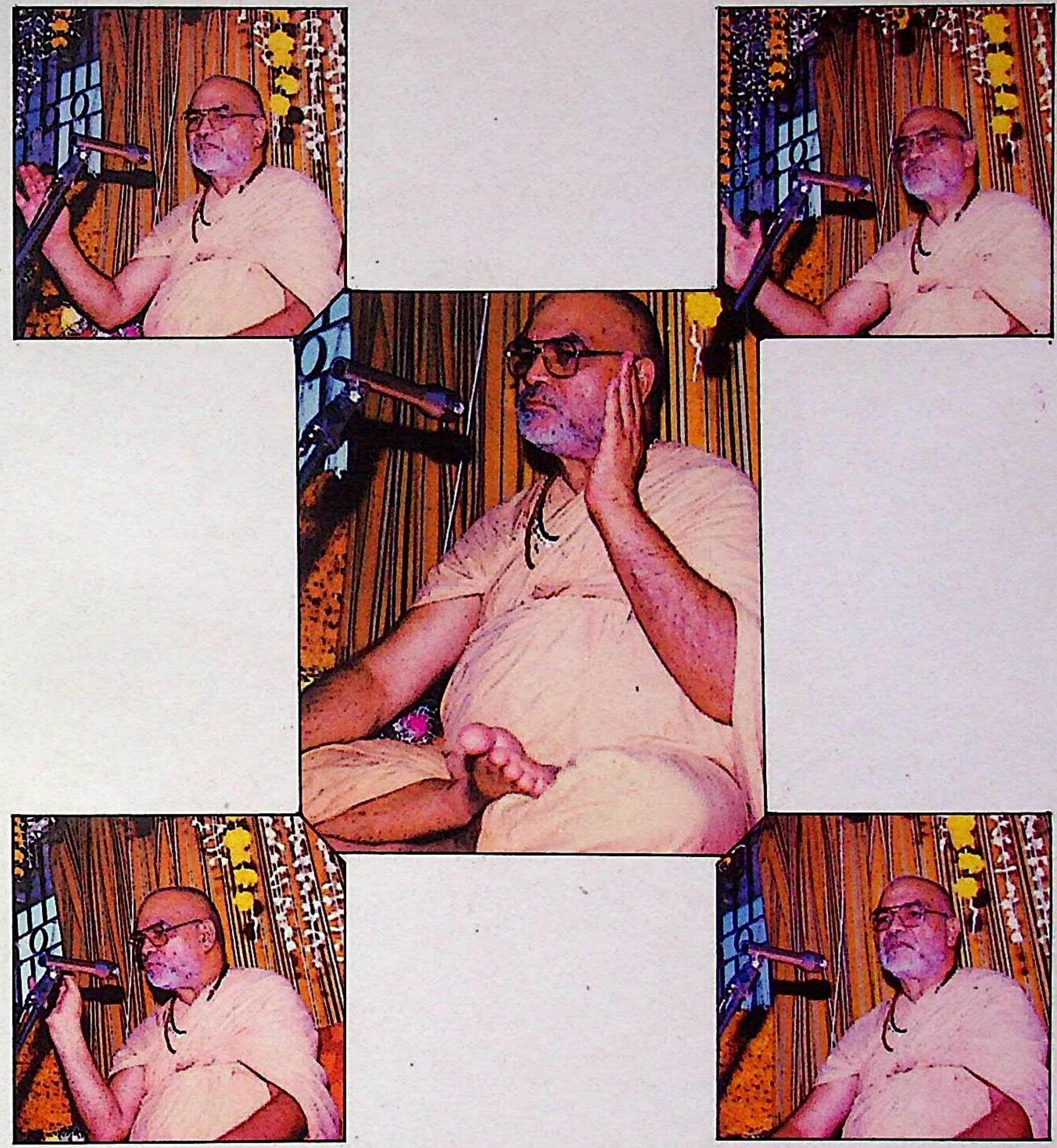

प्रवचन की विभिन्न मुद्राओं में महाराज श्री

Maharaj Shri in different moods during discourse.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विद्या हि का ब्रह्मगतिप्रदा या
बोधो हि को यस्तु विमुक्तिहेतुः।
को लाभ आत्मावगमो हि यो वै
जितं जगत्केन मनो हि येन॥११॥

(३६) विद्या किसे कहें? जो ब्रह्मपद प्रदा हो।

(३७) ज्ञान कौनसा है? जिससे मोक्ष सधे।

(३८) लाभ क्या है? आत्मा की उपलब्धि।

(३९) जगत् को जीतने वाला कौन? जिसने मन को जीता।

(36) What is learning? That which unites the soul with God.

(37) What is knowledge? That which leads to salvation.

(38) What is gain? Realisation of divine Self.

(39) Who has conquered the world? The one who has controlled the mind.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शूरान्महाशूरतमोस्ति को वा
मनोजवाणैर्व्यथितो न यस्तु।
प्राज्ञोऽथ धीरश्च समस्तु को वा
प्राप्तो न मोहं ललनाकटाक्षैः ॥१२॥

(४०) वीरों में भी अतिवीर कौन है? जो कामबाणों से घायल नहीं हो।

(४१) बुद्धिमान, धीर और समदर्शी कौन है? जिसे सुन्दर स्त्री के आवभाव मोहित नहीं करते।

(40) Who is the greatest among the warriors? One not shaken by the arrows of lust.

(41) Who is wise, firm and even-minded. One who is not deluded by the sexual appeal of a beautiful woman.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

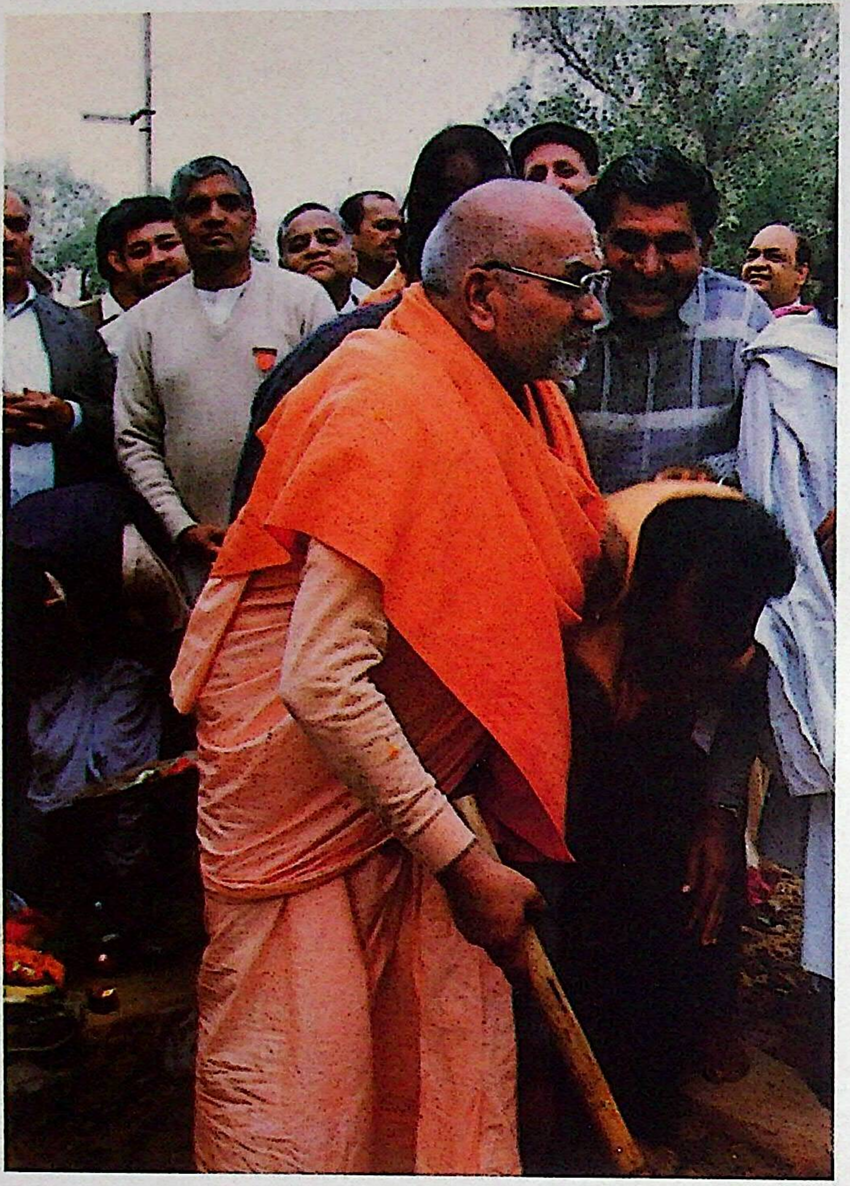

श्रीकैलास विद्यातीर्थ, ६ भाई वीरसिंह मार्ग, नई दिल्ली में, श्री आद्य शङ्कराचार्य स्मारक के स्थापना की घोषणा, महाराज श्री ने उनकी अध्यक्षता में १९९१ ई. में, हुई राष्ट्र सन्त श्री मोरारी बापू की रामकथा में की। उस उपलक्ष्य में भूमिपूजन का दृश्य (१९ फरवरी, १९९१)

Land worship ceremony at Kailas Vidya Tirth, 6 Bhai Vir Singh Marg, New Delhi on Feb. 19, 1991

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

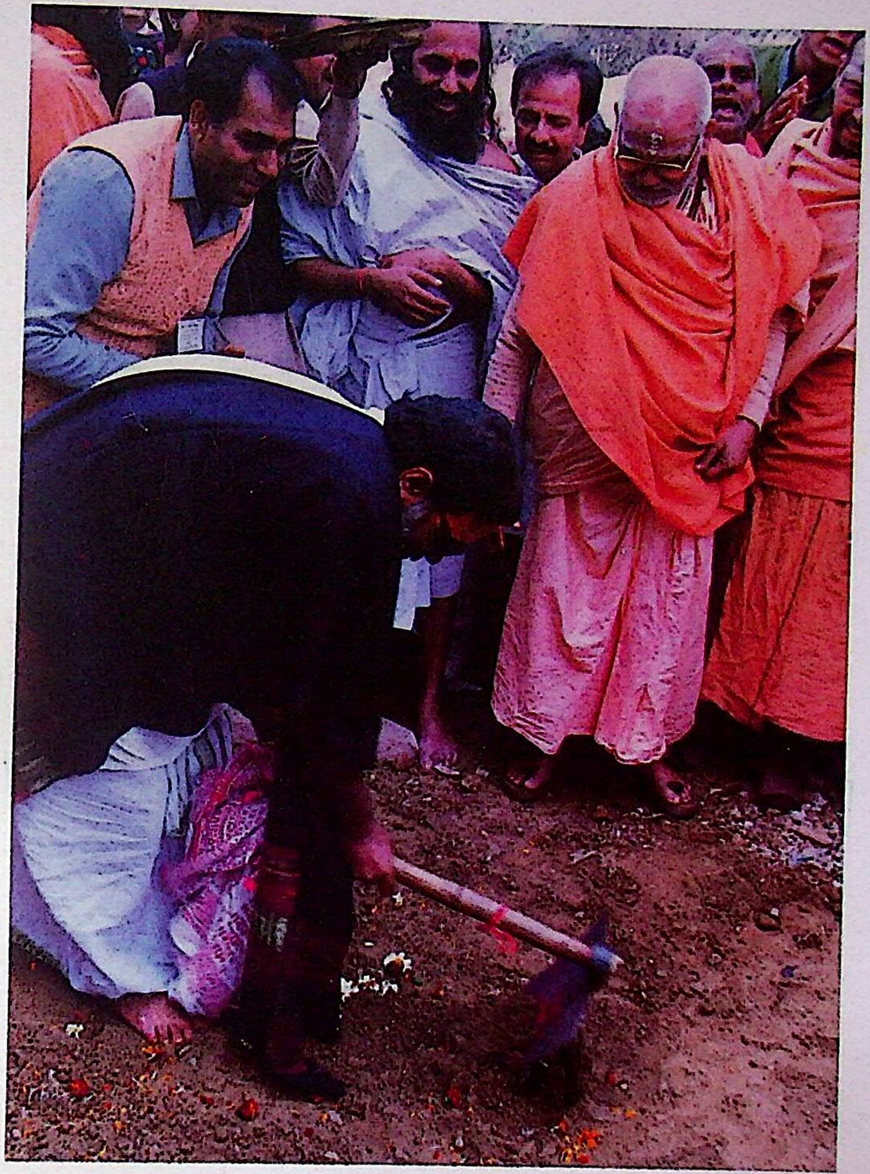

श्री कैलास विद्यातीर्थ भूमिपूजन में पूज्य श्री मुरारी बापू भाग लेते हुए

Shri Morari Bapu performing Land worship at Shri Kailas Vidya Tirth, Delhi

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषाद्विषं किं विषयाः समस्ताः
दुःखी सदा को विषयानुरागी।
धन्योऽस्ति को यस्तु परोपकारी
कः पूजनीयः शिवतत्त्वनिष्ठः ॥१३॥

(४२) विष से भी विषैला क्या है? समस्त विषय भोग।

(४३) सदा दुःखी कौन रहता है? जो भोगानुरागी है।

(४४) धन्य कौन है? जो परोपकारी है।

(४५) पूजनीय कौन है? ब्रह्मनिष्ठ।

(42) What is more poisonous than the poison? All the sensual pleasures.

(43) Who is ever in trouble? One deeply attached to sense objects.

(44) Who is worthy of thanks. He who is engaged in doing good to others.

(45) Who is worthy of worship? The one established in God.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वास्ववस्थास्वपि किन्न कार्यं
किं वा विधेयं विदुषा प्रयत्नात्।
स्नेहं च पापं पठनं च धर्मं
संसारमूलं हि किमस्ति चिन्ता ॥१४॥

(४६-४७) विद्वान द्वारा कभी भी न करने योग्य कार्य क्या है और प्रयत्न पूर्वक क्या करने योग्य है? संसार में स्नेह एवं पाप और स्वाध्याय एवं धर्म का पालन।

(४८) संसार का मूल क्या है? उसकी चिन्ता।

(46-47) What should never be done and what should be effortfully done by a learned person? Attachment and sin, study of scriptures & performing duties prescribed therein.

(48) What is the root of the world illusion? Its contemplation.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

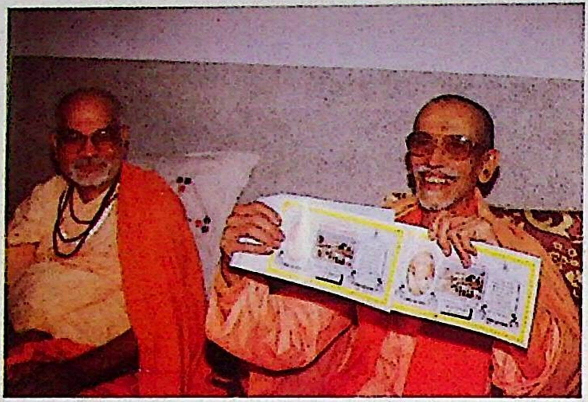

पट्टाभिषेक रजत महोत्सव में सेवा समर्पित करने के लिए कूपन बुक का विमोचन करते हुए महोत्सव महासमिति के परमाध्यक्ष, श्रीमत्स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी महाराज

The release of Coupon Books by Shri Swami Chidanand Saraswati Ji Maharaj in connection with Silver Jubilee Celebrations.

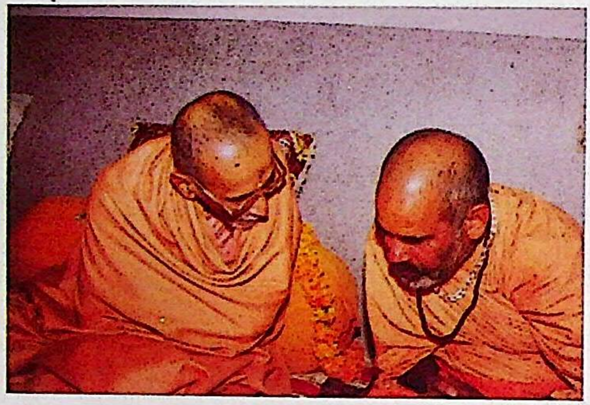

पट्टाभिषेक रजत महोत्सव महासमिति के परमाध्यक्ष श्रीमत्स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी महाराज, जो अपने व्यस्त कार्यक्रमों से समय निकाल कर महोत्सव को सफल नेतृत्व प्रदान करते रहे एवं महासमिति के अध्यक्ष, श्रीमत्स्वामी परमेश्वरानन्द सरस्वती जी महाराज, जिनके अथक प्रयास से यह महोत्सव समस्त भारत में सफलतापूर्वक मनाया जा सका।

The chairman, Shri Swami Chidananda Saraswati and working president Shri Swami Parmeshwaranand Saraswati, of the Silver Jubilee Celebrations.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

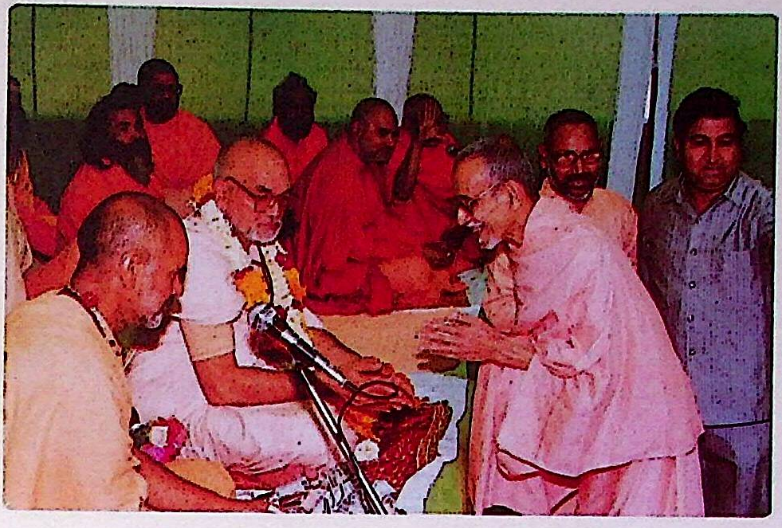

श्री कैलास विद्यातीर्थ नई दिल्ली में पधारे अतिथिगण शिलान्यास समारोह (७ मार्च, १९९२)

Guests at the foundation stone laying Ceremony of Shri Kailas Vidya Tirth, New Delhi on March 7, 1992.

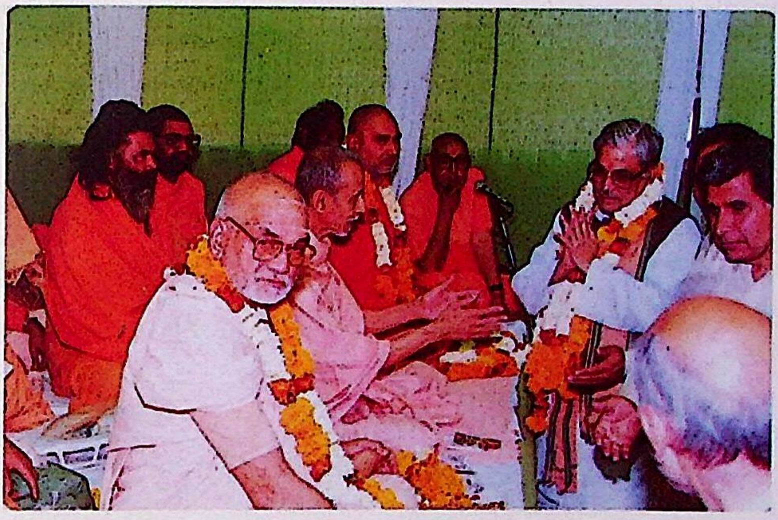

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विज्ञान्महाविज्ञतमोऽस्ति को वा

नार्या पिशाच्या न च वञ्चितो यः।

का शृङ्खला प्राणभृतां हि नारी

दिव्यं व्रतं किं च समस्तदैन्यम्॥१५॥

(४९) विज्ञजनों में अति विज्ञानवान् कौन है? जो मायारूपी पिशाचिनी से ठगा नहीं गया।

(५०) जीव को साँकलतुल्य कौन है? नारी (माया)।

(५१) दिव्य व्रत कौनसा है? सब से नम्रता का बर्ताव।

(49) Who is the most learned among the men of letters? One who is not deceived by the demoniac Maya.

(50) What is fetter for the living beings? Maya(delusion)

(51) Which vow is sublime? Humility with all.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्ञातुं न शक्यं च किमस्ति सर्वै-
योषिन्मनो यच्चरितं तदीयम्।
का दुस्त्यजा सर्वजनैर्दुराशा
विद्याविहीनः पशुरस्ति को वा॥१६॥

(५२) सभी के लिए क्या जानना सम्भव नहीं है? नारी का मन और उसका चरित्र।

(५३) किसे त्यागना सभी को दुष्कर है। दुराशा।

(५४) पशु तुल्य कौन है? जो विद्याविहीन हो।

(52) What is beyond comprehension for all? The mind of woman and her character

(53) What is difficult for all to abandon? False hope.

(54) Who is like an animal? One bereft of knowledge.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

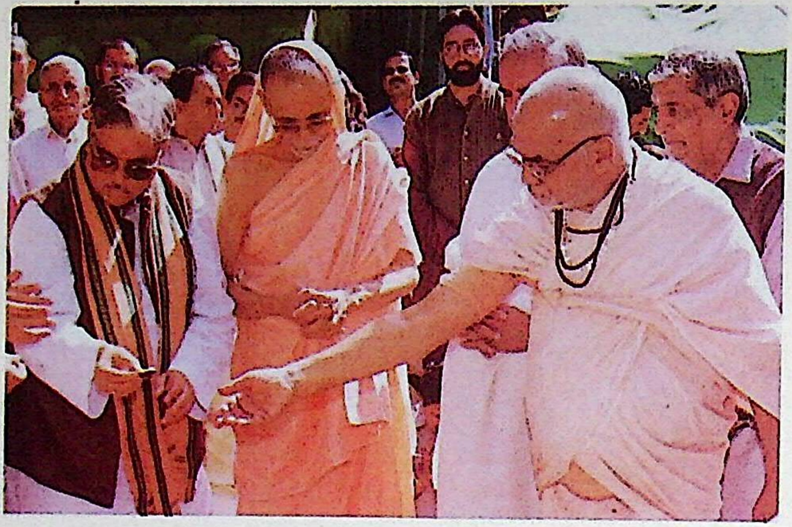

श्री कैलास विद्यातीर्थ नई दिल्ली – पूजन एवं शिलान्यास दृश्य
The foundation stone laying Ceremony of Shri Kailas Vidya Tirth, New Delhi.

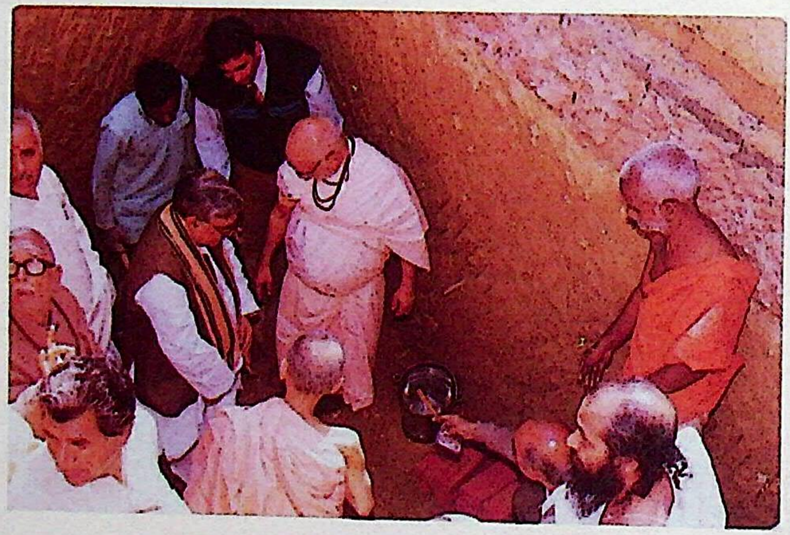

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

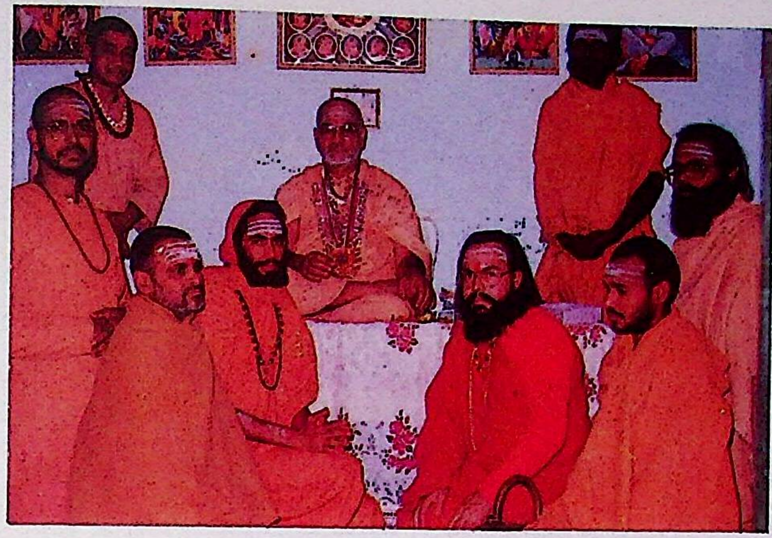

महाराज श्री कैलास आश्रम के सन्तों के साथ

Maharaj Shri with Saints of Kailas Ashram

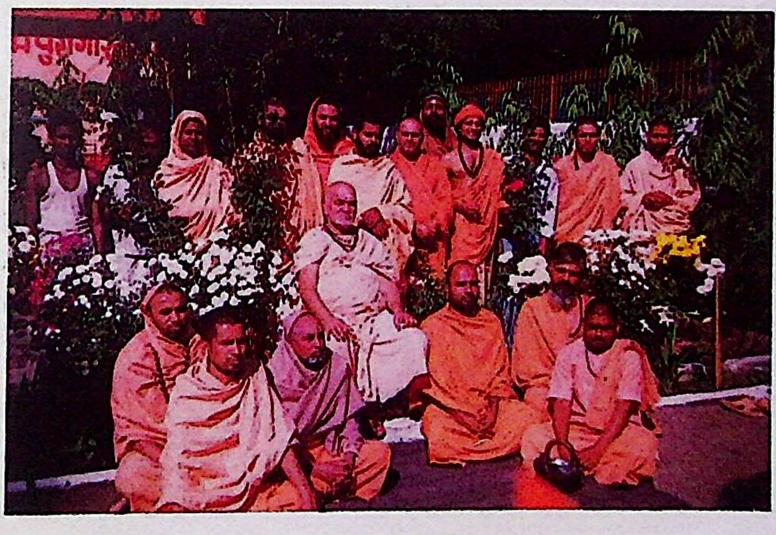

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वासो न सङ्गः सह कैर्विधेयो
मूर्खैश्च नीचैश्च खलैश्च पापैः।
मुमुक्षुणा किं त्वरितं विधेयं
सत्सङ्गतिर्निर्ममतेशभक्तिः ॥१७॥

(५५) किस के साथ निवास और संग उचित नहीं? जो मूर्ख, नीच, खल और पापी हों।

(५६) मुमुक्षु के लिए शीघ्र कर्तव्य क्या है? ममता रहित हो सत्संग और परमात्मा भक्ति।

(55) With whom is it not proper to live or mix? Fools, mean persons, the wicked and the sinfuls.

(56) What a person desirous of Salvation should do without delay? Having rid himself of the feeling of mine, to have company of holy men and cultivate devotion to God.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लघुत्वमूलं च किमर्थितैव

गुरुत्वमूलं यदयाचनं च।

जातो हि को यस्य पुनर्न जन्म

को वा मृतो यस्य पुनर्न मृत्युः ॥१८॥

(५७) छोटेपन का मूल क्या है? माँगना।

(५८) और बड़प्पन का मूल? कुछ भी न माँगना।

(५९) जन्म लेना किस का अच्छा? जिसको फिर जन्मना न पड़े।

(६०) मरना भला किसका? जिसकी पुनः मृत्यु न हो।

(57) What is the root of demeaning? To beg.

(58) And the root of honour? Not to demand anything from others.

(59) Whose birth is admirable? One not taking birth again.

(60) Whose death is praiseworthy? One who has not to die again.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

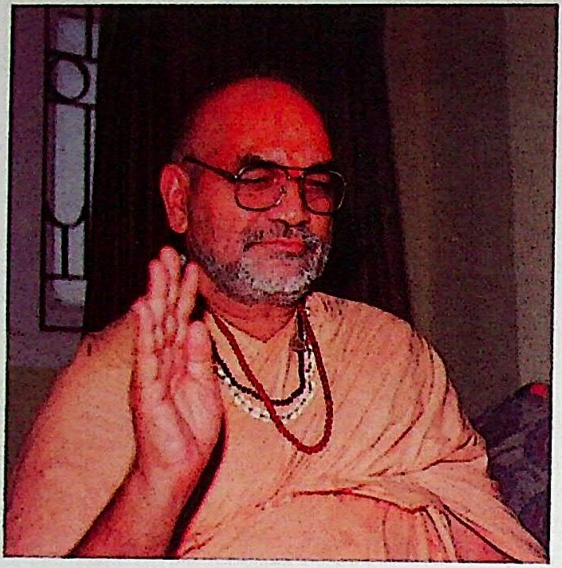

गंभीर एव प्रसन्न मुद्राओं में महाराज श्री
Maharaj Shri in different moods.

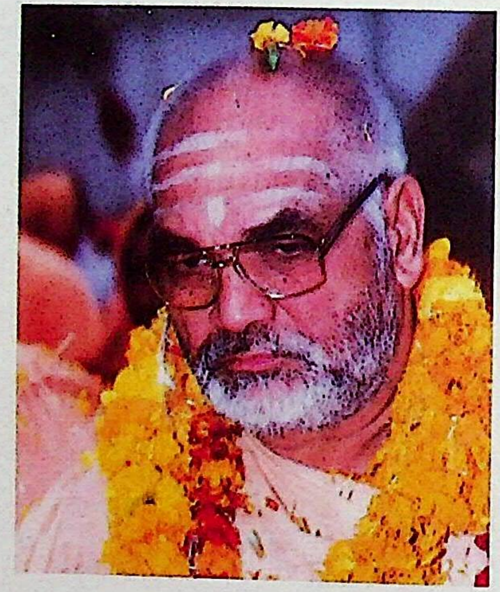

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

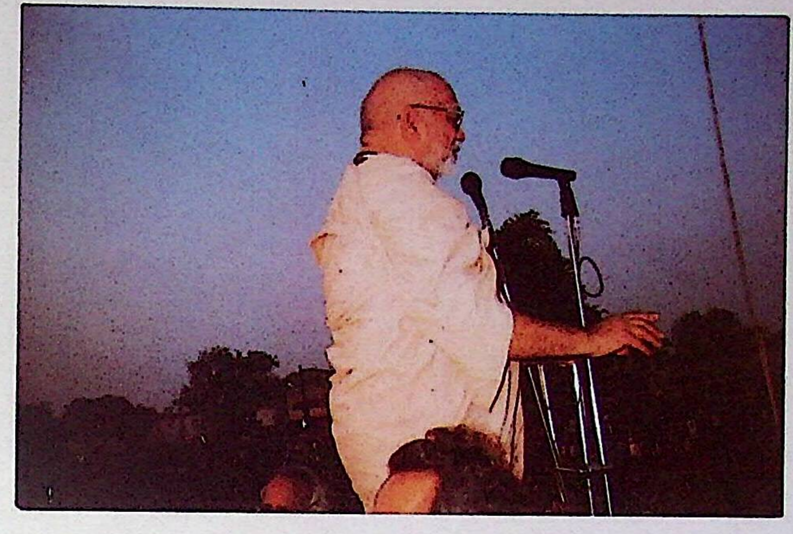

महाराज श्री अयोध्या जी में सार्वजनिक सभा को संबोधित करते हुए।
Maharaj shri addressing the devotees in Ayodhya

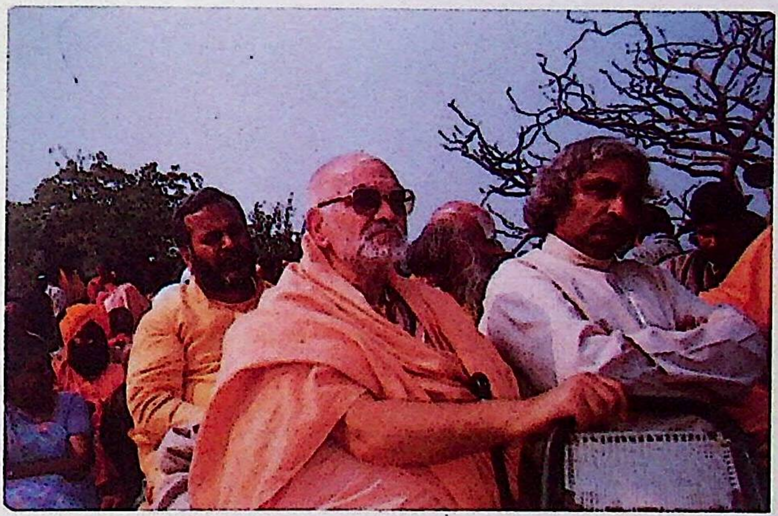

६ दिसम्बर, १९९२ को महाराज श्री अयोध्या जी में
Maharaj Shri in Ayodhya on December 6, 1992

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मूकोऽस्ति को वा बधिरश्च को वा
वक्तुं न युक्तं समये समर्थः।
तथ्यं सुपथ्यं न शृणोति वाक्यं
विश्वासपात्रं न किमस्ति नारी॥१९॥

(६१-६२) गूँगा कौन है और बहिरा कौन है? जो समयानुसार बोल नहीं पाता और जो हित की यथार्थ वाणी नहीं सुनता।

(६३) विश्वास के योग्य कौन नहीं? मायारूपी नारी।

(61-62) Who is dumb and who is deaf? One who is unable to speak at the proper moment and one who does not listen to the wise and beneficial counsel.

(63) Who is unworthy of trust? Woman representing Maya.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तत्त्वं किमेकं शिवमद्वितीयं
किमुत्तमं सच्चरितं यदस्ति।
त्याज्यं सुखं किं स्त्रियमेव सम्य-
ग्देयं परं किं त्वभयं सदैव ॥२०॥

(६४) वास्तविक तत्त्व क्या है? कल्याणस्वरूप अद्वितीय ब्रह्म।

(६५) उत्तम क्या है? सच्चरित्रता।

(६६) त्यागने योग्य सुख कौन सा है? स्त्री सम्बन्धी सभी सुख।

(६७) श्रेष्ठ देने योग्य क्या है? सदा अभयदान।

(64) What is the one truth? God who is without a second.

(65) What is superb? High character.

(66) Which of the pleasures are worth giving up. All related to opposite sex.

(67) What makes an excellent gift? Help one shed fear forever.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

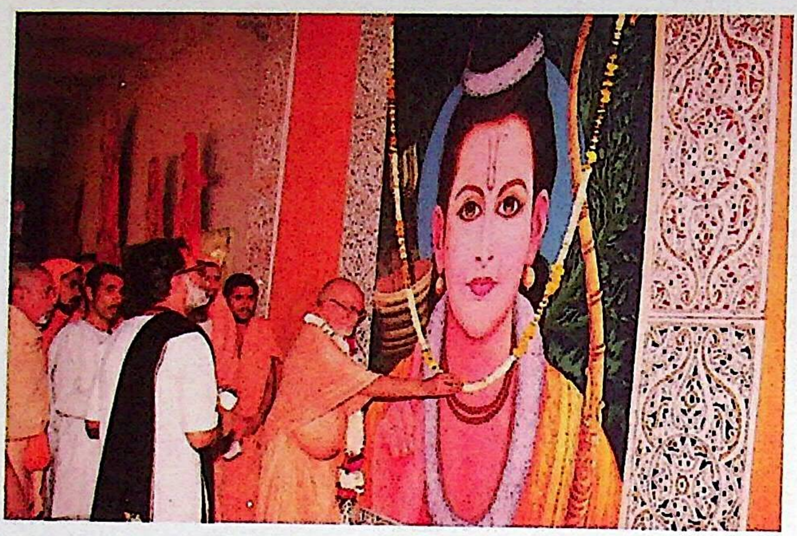

दिल्ली में श्री आदि शङ्कराचार्य स्मारक निर्माणार्थ श्री मोरारी बापू की राम कथा का आयोजन १९९३ में महाराज श्री की अध्यक्षता में हुआ। महाराज श्री कथा मंच पर श्री राम चित्र का पूजन करते हुए।

Maharaj Shri worshipping Lord Rama's picture at the inauguration of Shri Murari Bapu's, Delhi Ram Katha in 1993

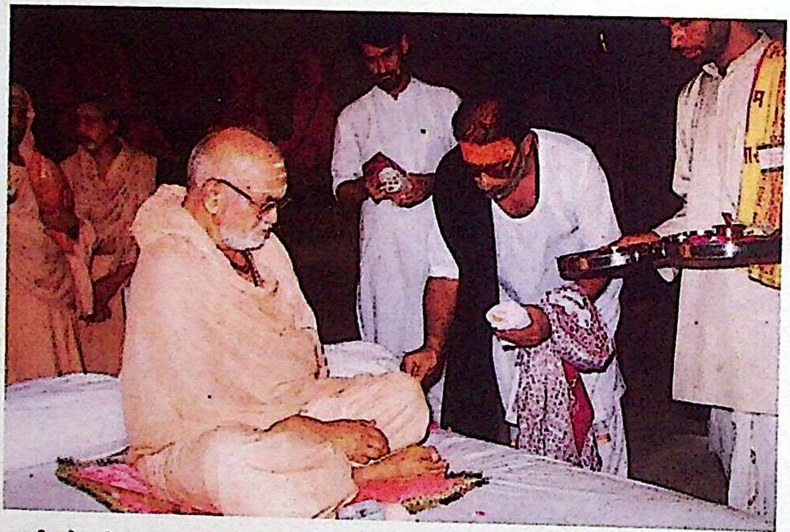

राष्ट्रसन्त श्री मोरारी बापू कथा मंच पर आसन ग्रहण करने से पूर्व महाराज श्री का पूजन करते हुए

Shri Murari Bapu worshipping Maharaj Shri before taking his seat during Ram Katha in Delhi in 1993

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री राम कथा १९९३, दिल्ली

श्री आदि शंकराचार्य स्मारक राम कथा समिति के सदस्यों के साथ महाराज श्री

Maharaj Shri with the members of
Shri Adi Shankaracharya Ram Katha Samiti

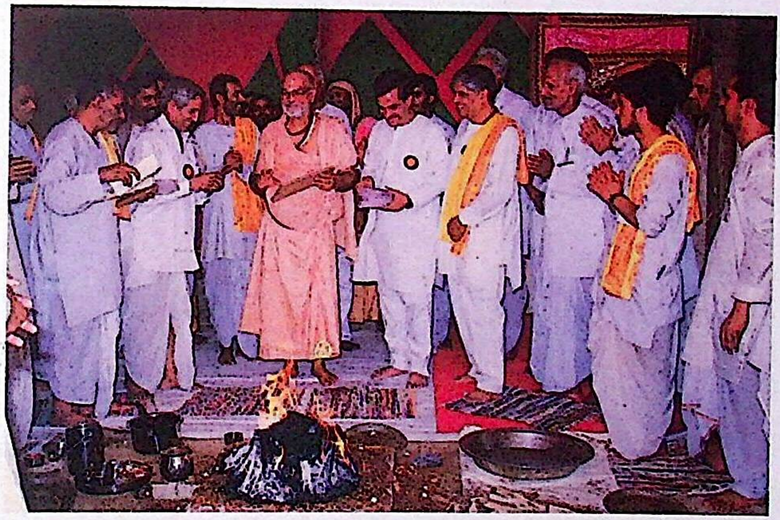

महाराज श्री, श्रीरामचरितमानस पारायण की पूर्णाहूति के समय, समिति सदस्यों के साथ

Maharaj Shri at the Completion Ceremony of the recitation of Shri Ramcharitmansa

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust: Funding IKS-MoE-Grant-2

शत्रोर्महाशत्रु तमोऽस्ति को वा
कामः सकोपानृतलोभतृष्णः।
न पूर्यते का विषयैः स एव
क दुःख मूलं ममताभिधानम्॥२१॥

(६८) शत्रुओं में भी अति शत्रु कौन? क्रोध, मिथ्यात्व, लोभ और तृष्णा सहित काम।

(६९) तृप्ति नहीं होती विषयों से किसकी? उसी काम की।

(७०) दुःख का मूल क्या है? ममत्व बुद्धि।

(68) What is the worst of enemies? Lust accompanied by anger, falsehood, greed and craving.

(69) What is that which never gets satisfied with sensual objects? That very lust.

(70) What is the root cause of misery? The feeling of mine.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किं मण्डनं साक्षरता मुखस्य
सत्यं च किं भूतहितं सदैव।
किं कर्म कृत्वा न हि शोचनीयं
कामारिकंसारिसमर्चनाख्यम् ॥२२॥

(७१) मुख का शृंगार क्या है। प्रबोध

(७२) सत्य क्या है? जिससे सदा प्राणियों का हित हो।

(७३) किस कर्म को करने के पश्चात् चिंतित नहीं होना पड़ता। भगवान् शंकर एवं भगवान् वासुदेव की पूजा।

(71) What is that which makes the face shine?. Literacy.

(72) What is truth? Always doing good to others.

(73) After performing which action one has not to repent? That catagorised as worship of Lord Shiva and Lord Vishnu.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

श्री राम कथा १९९३, दिल्ली

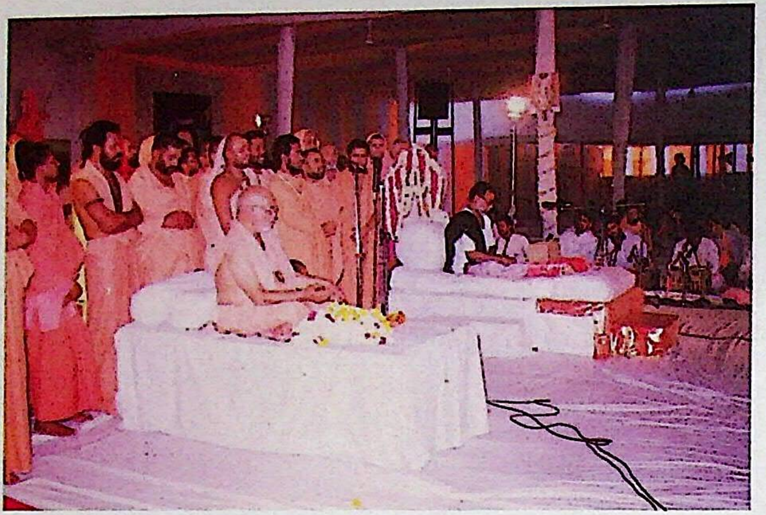

श्री रामकथा से पूर्व वेद पाठ करते हुए श्री कैलास आश्रम के सन्तगण

The saints of Kailas Ashram reciting Vedic Mantras before the begining of Ram Katha by Shri Murari Bapu

महाराज श्री एवं श्री मोरारी बापू पत्रकार सम्मेलन में

Maharaj Shri and Shri Murari Bapu during Press Conference

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

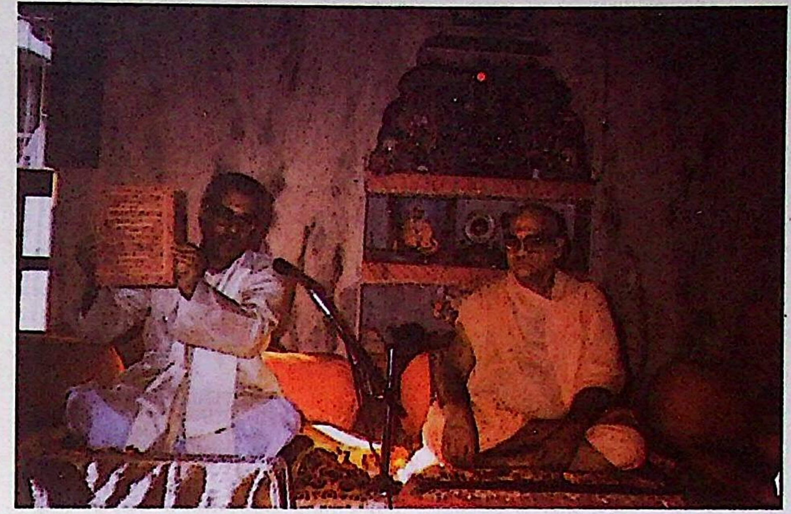

वेदान्त के उत्कृष्ट ग्रन्थ 'प्रत्यक्तत्त्व प्रदीपिका' (चित्सुखी) पर महाराज श्री ने देवभाषा संस्कृत में छात्रतोषिणी नाम की टीका लिखी, जिसके प्रथम भाग का विमोचन डॉ. विष्णुदत्त राकेश जी ने गुरुपूर्णिमा १९९२ ई. को किया।

The release of 'Chitsukhi' (Part I) by Dr. Vishnu Datt Rakesh Ji at Guru Purnima, 1992

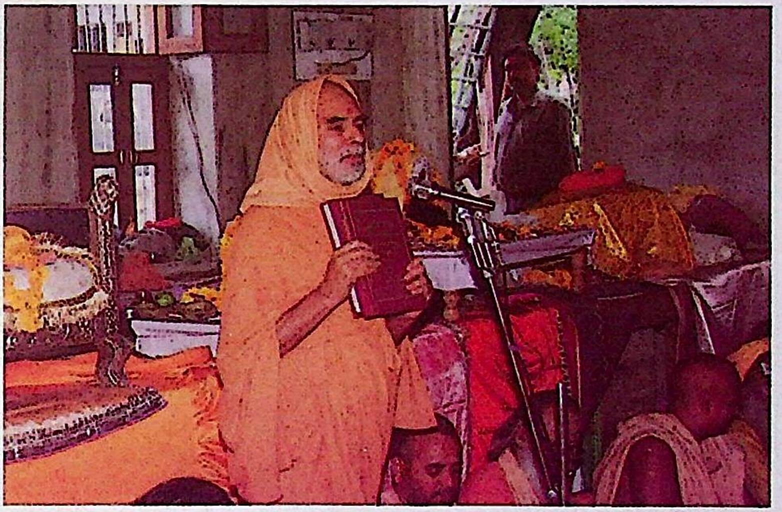

सम्पूर्ण छात्रतोषिणी टीका का विमोचन श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य अनन्त श्री विभूषित स्वामी वामदेव जी महाराज के कर कमलों द्वारा २६ जून, १९९३ को पट्टाभिषेक रजत महोत्सव के शुभारम्भ पर हुआ।

The release of complete book containing Maharaj Shri's commentary on the famous work named in short as 'Chitsukhi' after its learned author, Shri Chitshukhacharya by His Holiness Shri Swami Vamdevji Maharaj.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कस्यास्ति नाशे मनसो हि मोक्षः

क्व सर्वथा नास्ति भयं विमुक्तौ।

शल्यं परं किं निजमूर्खतैव

के के ह्युपास्या गुरुदेववृद्धाः ॥२३॥

(७४) किसके नाश से मोक्ष सिद्ध होता है? मन के।

(७५) कहाँ सर्वथा भय रहित स्थिति होती है? मुक्ति में।

(७६) विशेष क्या चुभता है? अपनी मूर्खता।

(७७) कौन-कौन पूज्य हैं? गुरु, देवता और वृद्ध।

(74) Destruction of what is the cause of salvation? Mind.

(75) Where one is absolutely fearless? In boundless state of self-realisation.

(76) What is most irksome? One's own foolishness.

(77) Who are worthy of worship? Preceptor, Gods and Elders.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपस्थिते प्राणहरे कृतान्ते
किमाशु कार्यं सुधिया प्रयत्नात्।
वाक्कायचित्तैः सुखदं यमघ्नं
मुरारिपादाम्बुजचिन्तनं च ॥२४॥

(७८) प्राणहारी काल के उपस्थित होने पर बुद्धिमान व्यक्ति को शीघ्र क्या प्रयत्नपूर्वक करना चाहिए? शरीर, मन और वाणी द्वारा ईश्वर के चरण कमलों का चिन्तन, जो सुखदायक और मृत्युहारी है।

(78) When the messenger of death comes to take away one's life, what one ought to do effortfully there and then? One should, with speech, body and mind contemplate on the lotus feet of the Lord, which is comforting yet deadly for the death.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

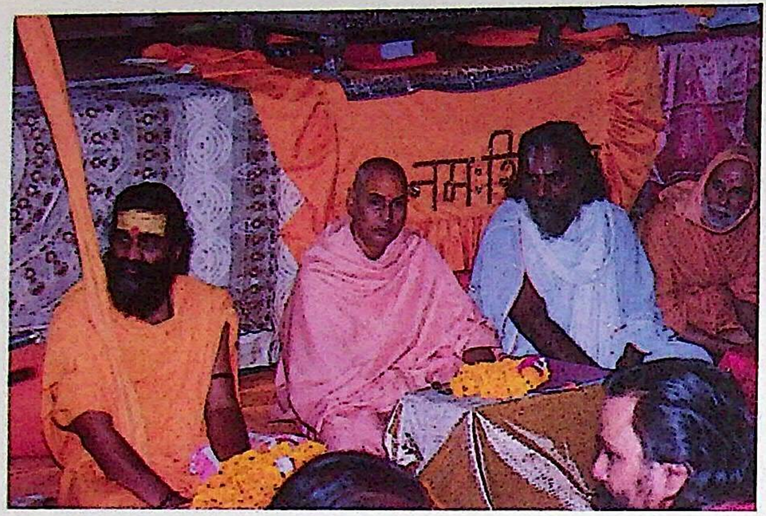

पट्टाभिषेक रजत महोत्सव का शुभारम्भ २६ जून, १९९३ को विशिष्ट महापुरुषों, राष्ट्रीय नेताओं की सहजरूप में जुटी सभा में, कैलास आश्रम ऋषिकेश, में बड़ी धूमधाम से हुआ।
सभा में पधारे विशिष्ट सन्तों एवं नेताओं का दृश्य

The view of distinguished Saints & national leaders who participated in the inauguration of Silver jubilee celebration on June 26, 93 at Kailash Ashram, Rishikesh

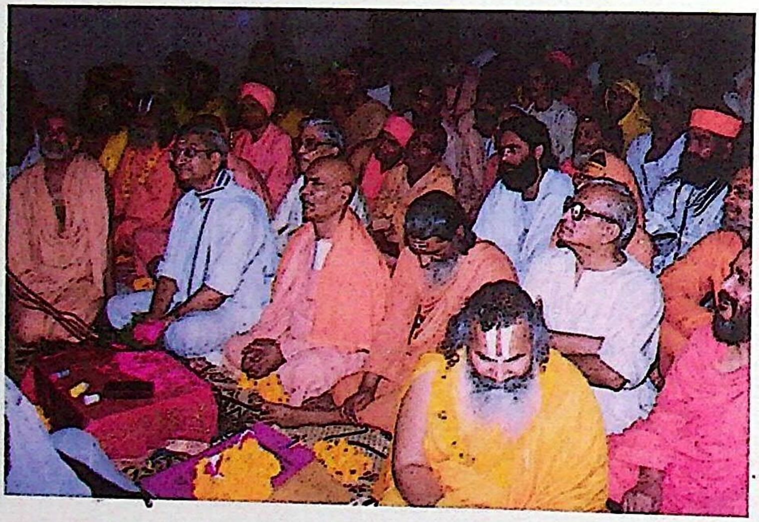

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

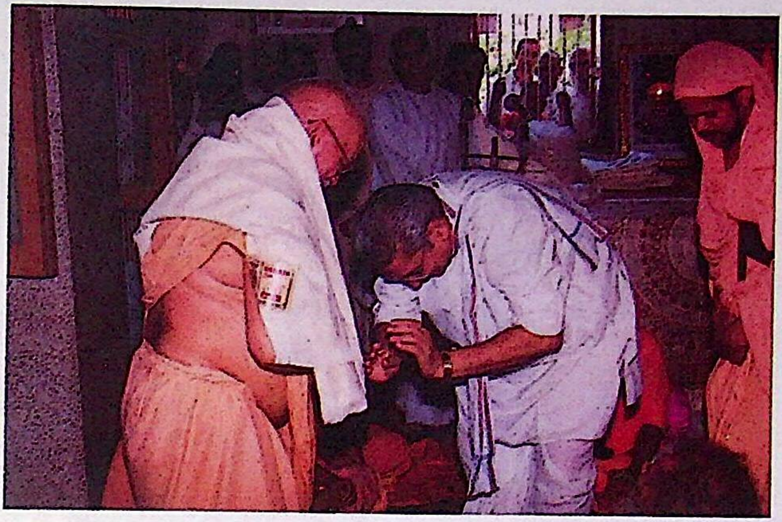

पट्टाभिषेक रजत महोत्सव के शुभारम्भ पर माननीय श्री अशोक सिंघल जी महाराज श्री को चादर भेंट करते हुए।
Shri Ashok Singhal Ji presenting a Shawl to Maharaj Shri on June 26, 1993

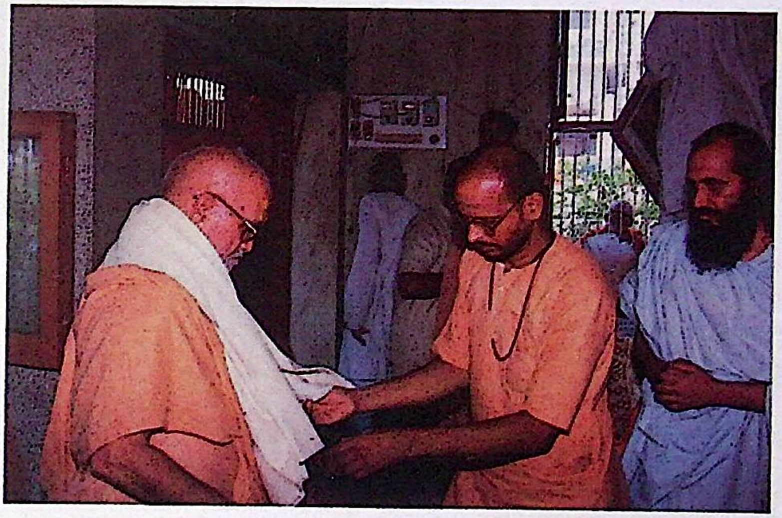

पट्टाभिषेक रजत महोत्सव महासमिति की ओर से महाराज श्री को चादर भेंट करते हुए श्री मेधानन्द पुरी जी एवं महासमिति के महामन्त्री डॉ. उमेशानन्द शास्त्री जी

Presentation of Shawl to Maharaj Shri by Swami Medhananda Puriji and Dr. Umeshananda Shastriji, the General Secretary of the Silver Jubilee Celebrations Committee.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के दस्यवः सन्ति कुवासनाख्याः

कः शोभते यः सदसि प्रविद्यः।

मातेव का या सुखदा सुविद्या

किमेधते दानवशात्सुविद्या ॥२५॥

(७९) लुटेरे कौन हैं? बुरी वासनाएँ।

(८०) सभा में कौन शोभा पाता है? विद्वान्।

(८१) माता के समान सुख देने वाली कौन? सुविद्या।

(८२) दान द्वारा कौन सी वस्तु बढ़ती है? सुविद्या।

(79) Who are the real bandits? The evil impressions in mind.

(80) Who adores an assembly? A learned person.

(81) Who gives comfort like a mother? Right knowledge.

(82) What is that which increases as you give? Right knowledge.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुतो हि भीतिः सततं विधेया
लोकापवादाद्भवकाननाच्च।
को वातिबन्धुः पितरश्च के वा
विपत्सहायः परिपालका ये ॥२६॥

(८३) किस से सदैव डरना चाहिए? संसार चक्र से और लोकापवाद् से।

(८४-८५) बन्धु कौन है और पिता कौन है? विपत्ति में सहायता करने वाला और पालन पोषण करने वाला

(83) What should one always fear? The forest of life and death and public condemnation.

(84-85) Who is a brother and whom to know as father? One who helps in adversity and who rears with love.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

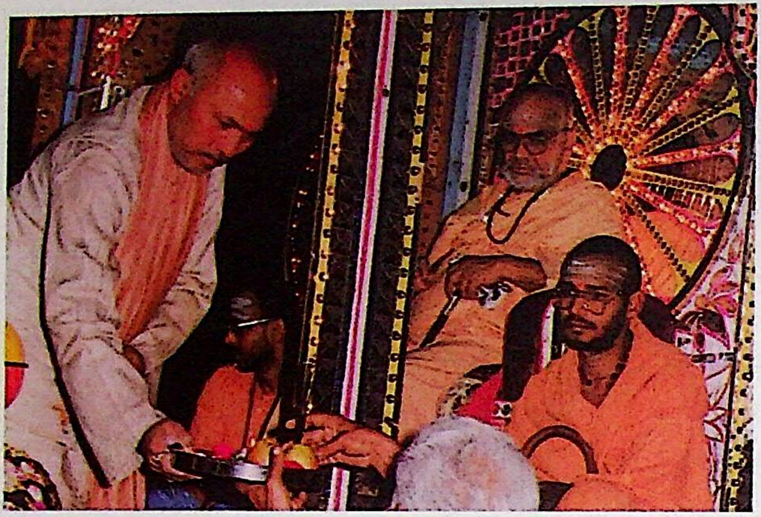

शोभा यात्रा, मुरादनगर (यू.पी.)

Procession in Muradnagar (U.P.)

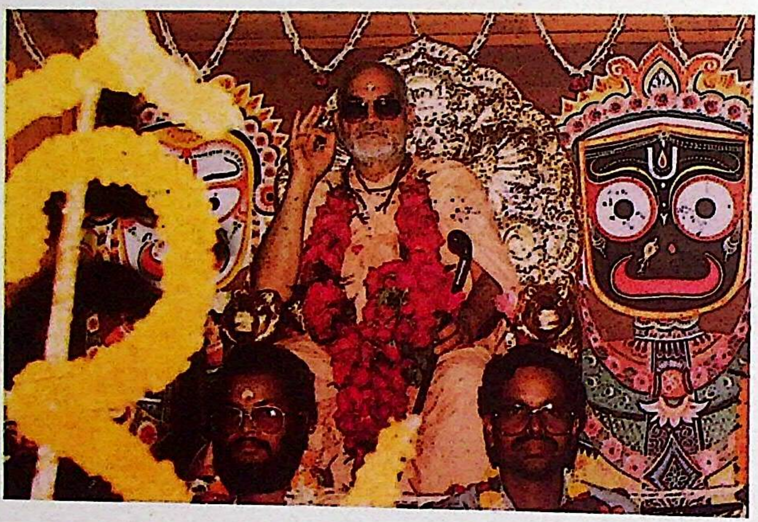

शोभा यात्रा, जगन्नाथपुरी

Procession in Jagannathpuri

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

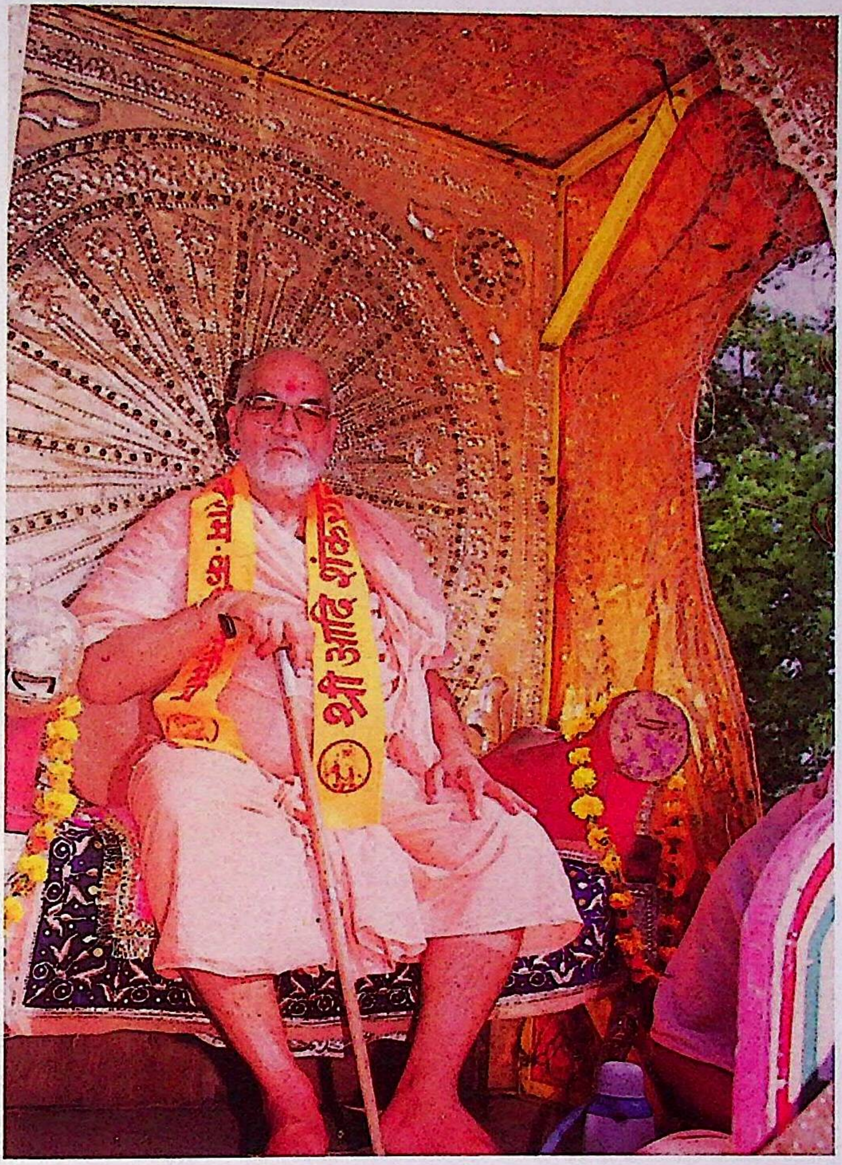

श्री राम कथा (१९९३) दिल्ली की शोभायात्रा में रथ पर विराजमान, महाराज श्री

Maharaj Shri, in the procession during Shri Murari Bapu's Delhi Ram Katha in 1993.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुद्ध्वा न बोध्यं परिशिष्यते किं

शिवप्रसादं सुखबोधरूपम्।

ज्ञाते तु कस्मिन्विदितं जगत्स्या-

त्सर्वात्मके ब्रह्मणि पूर्णरूपे॥२७।

(८६) क्या जान लेने से कुछ भी जानना शेष नहीं रहता? ईशकृपा से चिदानन्द विशुद्ध ब्रह्म को।

(८७) किसके ज्ञान से विश्व का ज्ञान हो जाता है? सर्वात्मा ब्रह्म के पूर्ण रूप के।

(86) Knowing what nothing remains to be known? God whose nature is knowledge and bliss and who can be realised by His grace alone.

(87) By whose knowledge the whole universe becomes known? God's all-pervading complete form.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किं दुर्लभं सद्गुरुरस्ति लोके
सत्सङ्गतिर्ब्रह्मविचारणा च।
त्यागो हि सर्वस्य शिवात्मबोधः
को दुर्जयः सर्वजनैर्मनोजः ॥२८॥

(८८) इस लोक में दुर्लभ क्या है? सद्गुरु, सत्संगति और ब्रह्म विचार तथा सर्वस्व का त्याग और कल्याण स्वरूप आत्मा का बोध।

(८९) सब के लिए दुर्जय क्या है? काम।

(88) What is rare in the world? Spiritual teacher, Godward thoughts, company of holy persons, complete renunciation and knowledge of divine Self.

(89) What is unconquerable for all? Lust.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

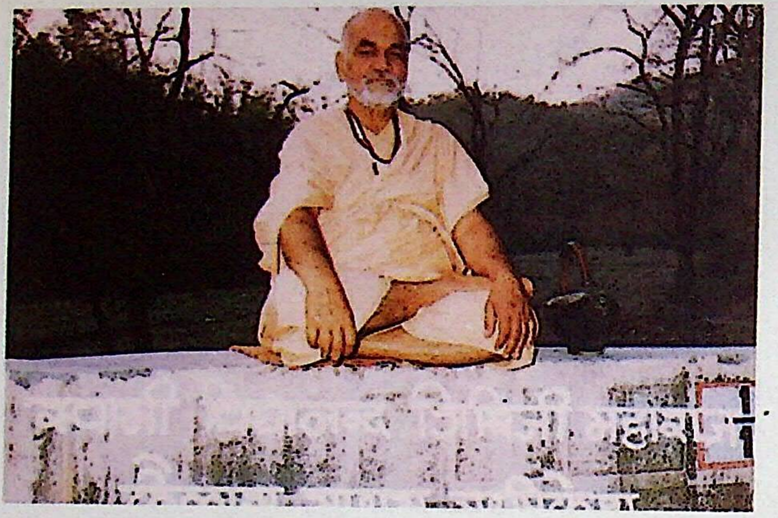

वनस्थ महाराज श्री

Maharaj Shri in the forest surroundings.

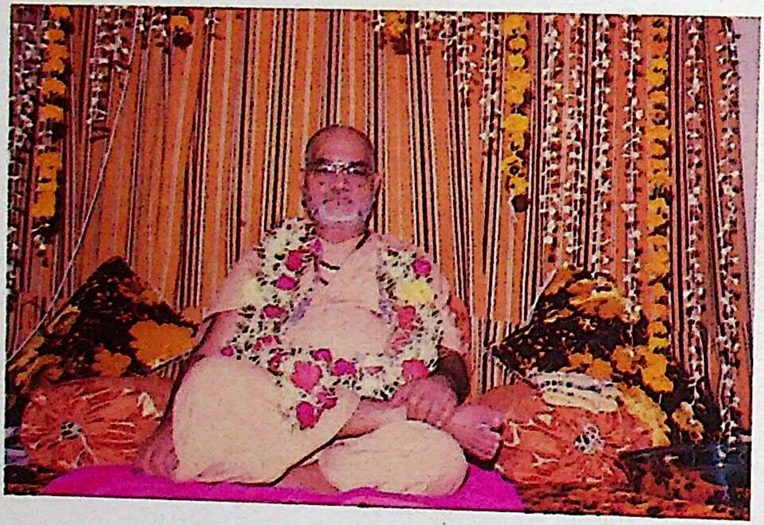

मंचस्थ महाराज श्री

Maharaj Shri on a decorated platform

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाराज श्री द्विज बालकों को उपनयनादि संस्कार के लिए सदैव प्रेरित करते हैं। रोहतक के भक्तों के बालकों के उपनयन संस्कार के अनन्तर का चित्र जिसमें महाराज श्री और रोहतक वाले माताजी भी विराजमान हैं।

The sacred thread ceremony of young devotees from Rohtak

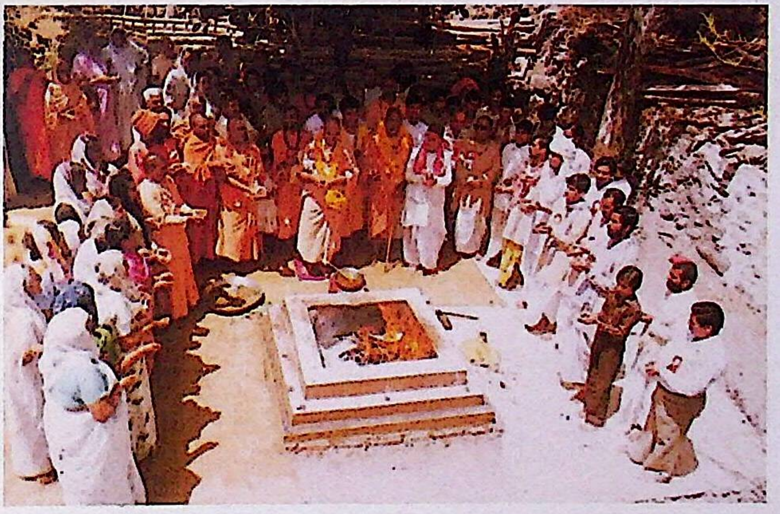

विष्णुधाम की संस्थापना पर यज्ञ में पूर्णाहूति डालते हुए महाराज श्री

Maharaj Shri performing 'Yagya' at the inauguration of the newly constructed building of Vishnu Dhama at Kailas Ashram Rishikesh.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पशोः पशुः को न करोति धर्मं
प्रधीतशास्त्रोऽपि न चात्मबोधः।
किन्तद्विषं भाति सुधोपमं स्त्री
के शत्रवो मित्रवदात्मजाद्याः ॥२९॥

(९०) पशु से भी पशु कौन है? जो धर्म का सम्पादन नहीं करता और शास्त्रज्ञान होने पर भी आत्म बोध नहीं रखता।

(९१) विष होकर सुधा रूप क्या भासे? स्त्री।

(९२) शत्रु होकर मित्र रूप कौन दीखे? पुत्रादि।

(90) Who is worse than an animal? One who does not perform duty and having learned the scriptures, is without knowledge of the Self.

(91) Which is poison but appears to be nectar? Woman (opp. sex)

(92) Which enemy looks like a friend? Son etc.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विद्युच्चलं किं धनयौवनायु-

दानं परं किञ्च सुपात्रदत्तम्।

कण्ठङ्गतैरप्यसुभिर्न कार्यं

किं किं विधेयं मलिनं शिवार्चा ॥30॥

(९३) बिजली की भांति चल क्या है? धन, यौवन और आयु।

(९४) श्रेष्ठ दान कौन सा है? जो सुपात्र को दिया जाए।

(९५-९६) कंठगत प्राण होने पर क्या न करे और क्या करे? पाप न करे और परमात्मा की अर्चना करे।

(93) What is shaky as lightning? Riches, youth and life.

(94) Which is the best donation? That given to most deserving.

(95-96) What one ought not to do and what one ought to do at the last moment of life? An impure act and worship of God.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

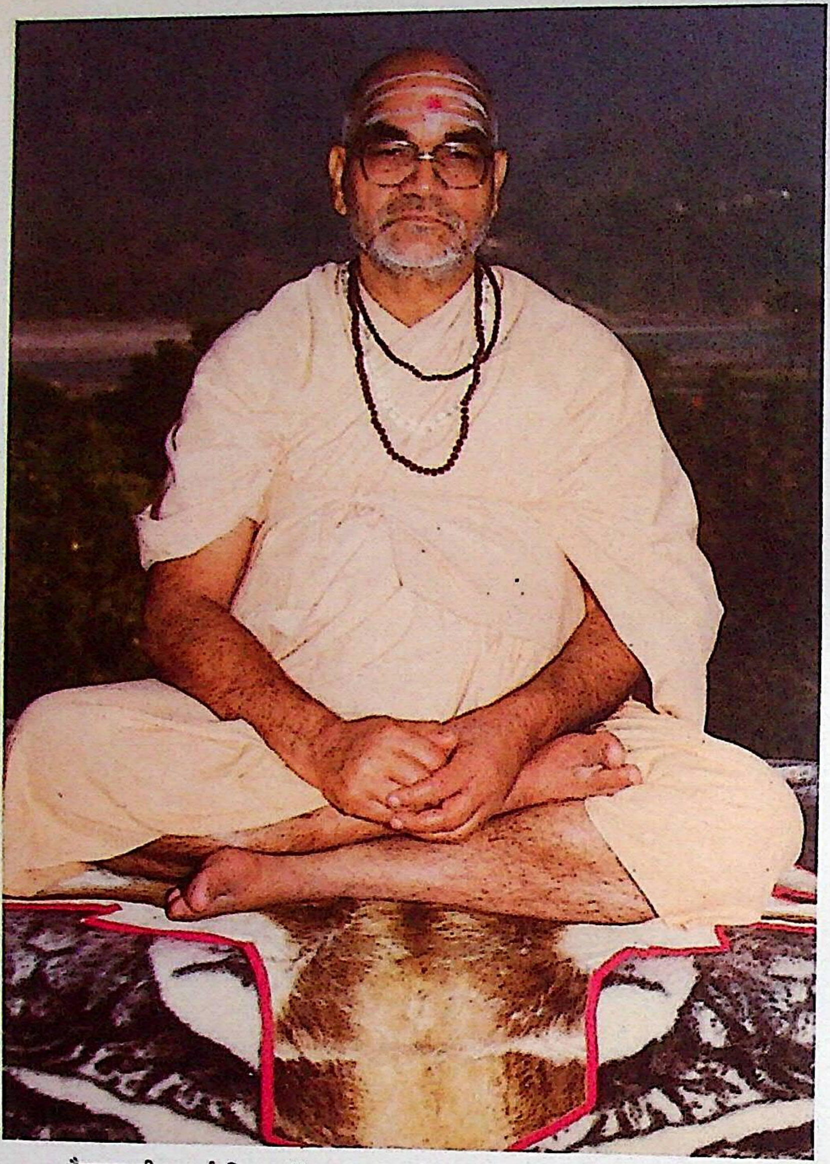

कैलास पीठाचार्य निवास ''वायुभवन'' के बरामदे में विराजमान महाराज श्री
पीछे गंगाजी का पावन दृश्य है

Maharaj Shri sitting in the Varandah of "Vayu Bhawan" the appartment meant for the head of Kailas Peeth. In the background, the Holy Ganges presents a beautiful sight

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

भगवतपादेश्वर महादेव, कै.वि.ती., दिल्ली

Bhagwatpadeshwar Mahadev,
Shri Kailas Vidya Tirth, Delhi

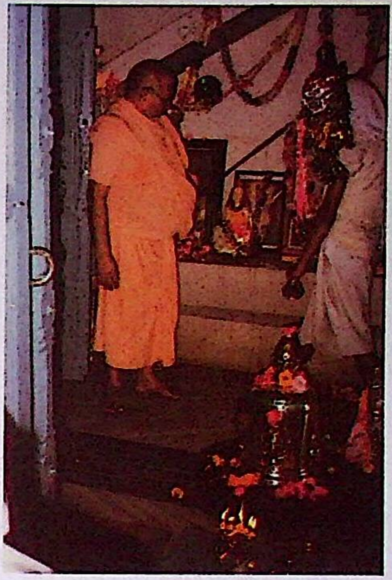

हरीश्वर महादेव, दशनाम संन्यास आश्रम, हरिद्वार

Harishwar Mahadev,
Dashnam Sanyas Ashram, Haridwar

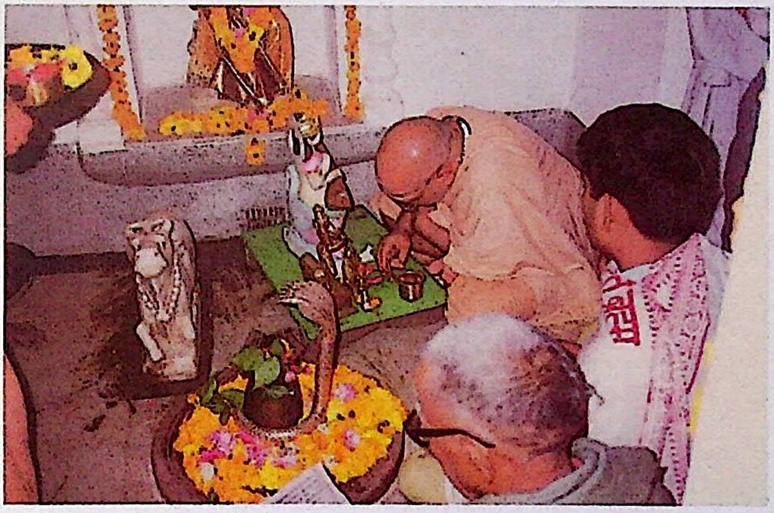

उमेश्वर महादेव ब्रह्मानन्द आश्रम ऋषिकेश

Umeshwar Mahadev, Brahmanand Ashram, Rishikesh

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अहर्निशं किं परिचिन्तनीयं
संसारमिथ्यात्वशिवात्मतत्त्वम्।
किं कर्म यत्प्रीतिकरं मुरारेः
क्वास्था न कार्या सततं भवाब्धौ ॥३१॥

(९७) दिन रात क्या चिन्तनीय है? संसार का मिथ्यापना और कल्याणरूप आत्मतत्त्व।

(९८) कर्म कौन सा है? जिसे करने से परमेश्वर की प्रसन्नता हो।

(९९) सदा किसमें विश्वास न रखे? संसार रूपी समुद्र में।

(97) What is to be thought through day and night? The unreal nature of the world and divinity of the Self.

(98) What actions are worth? By which God is pleased.

(99) In what one sholud never have confidence? The world compared to an ocean.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कण्ठङ्गता वा श्रवणङ्गता वा

प्रश्नोत्तराख्या मणिरत्नमाला।

तनोतु मोदं विदुषां सुरम्यं

रमेशगौरीशकथेव सद्यः ॥३२॥

(१००) (इस मणिरत्नमाला का प्रभाव क्या?) इस प्रश्नोत्तरी रूपी मणिरत्न माला को जो गले में अथवा कानों में धारण करते हैं उन विद्वानों के सुन्दर आनन्द को यह भगवान् रमापति और उमापति की कथा के समान सदा बढ़ाती है।

(100) (Beneficial effects of these couplets named MANIRATNAMALA?) The learned one who wears this garland of pearls and diamonds in the form of question-answers around the neck (recites it), in the ears (hears it), always experiences pure bliss like listening to and reciting the pious stories of Lord Vishnu & Lord Shiva.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

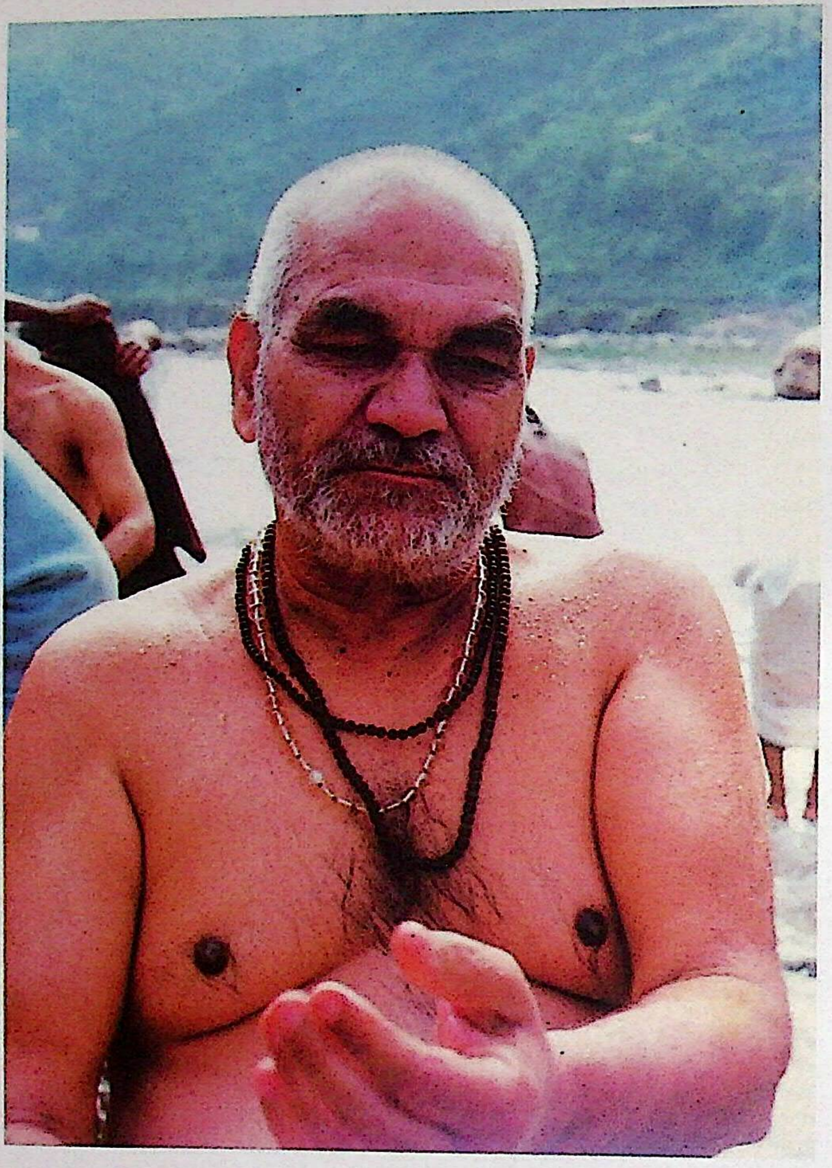

महाराज श्री गंगास्नानान्तर (उत्तरकाशी)

Maharaj Shri after taking bath in the holy Ganga at Uttarkashi

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मलीन श्री छोटे महाराज जी की अन्तिम यात्रा में सन्त एवं भक्त
तथा श्रद्धाञ्जली सभा
Last rites of His Holiness Shri Swami Harihar Tirth Ji Maharaj

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

श्रीमच्छङ्करभगत्पादवचनामृतम्

प्रातः स्मरणम्

प्रातः स्मरामि हृदि संस्फुरदात्मतत्त्वं
सच्चित्सुखं परमहंसगतिं तुरीयम्।
यत्स्वप्रजागरसुषुप्तमवैति नित्यं
तद्ब्रह्म निष्कलमहं न च भूतसङ्घः ॥१॥

प्रातःकाल मैं (उसे) स्मरण करता हूँ जो प्राणिमात्र के हृदय में संस्फुरणरूप आत्मा का वास्तविक स्वरूप सच्चिदानन्द है, जो परमहंस संन्यासियों की परमगति है और जो सदा रहने वाला, जाग्रत स्वप्न और सुषुप्ति को जानता हुआ इन तीनों से भिन्न तुरीय रूप है। वही कलारहित व्यापक परमेश्वर, मैं हूँ। मैं पञ्चभूतों का पूतला नहीं हूँ।

In the morning, I remember the Divine Self, manifesting in the heart, who is ever present as conciousness and bliss who is the refuge of the wise and is the knower of the three states of waking, dream and sleep, yet is different from these. I am verily that attributeless God and not the body comprising the elements of nature.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रातर्भजामि मनसां वचसामगम्यं
वाचो विभान्ति निखिल यदनुग्रहेण।
यन्नेति नेति वचनैर्निगमा अवोचु
स्तं देवदेवमजमच्युतमाहुरग्र्यम् ॥२॥

प्रात:काल मैं उसका चिन्तन करता हूँ जो मनोवृत्यिों से और वाणी से अगम्य है, जिस चेतन ब्रह्मके सत्तास्फूर्तिरूप अनुग्रह से संम्पूर्ण वाणी प्रतीत होती हैं एवं जिस परमात्मा को वेद भी दृष्यवर्ग से निषेध करने वाले, नेति, नेति, वाक्यों से कह पाए हैं तथा उसी परमेश्वर को (विद्वानों ने) अजन्मा अविनाशी सर्वश्रेष्ठ दिव्यगुण सम्पन्न देवों का भी देव कहा है।

In the morning (first of all), I reflect on that which is beyond the reach of thoughts and words, but by whose grace all forms of speech is comprehended, whom even the Vedas are able to describe only by negation of known objects and who is said to be without birth, imperishable, noblest of all and adorned even by the gods.

प्रातर्नमामि तमसः परमर्कवर्णं
पूर्णं सनातनपदं पुरुषोत्तमाख्यम्।
यस्मिन्निदं जगदशेषमशेषमूर्त्तौ
रज्ज्वां भुजङ्गम इव प्रतिभासितं वै ॥३॥

प्रात:काल उठते ही मैं उसे नमस्कार करता हूँ जो मायारूप अन्धकार से परे है, सबका प्रकाशक है, सर्वत्र परिपूर्ण, सदा रहने वाला, पुरुषोत्तम जिसका नाम है एवं जिस सर्वाधिष्ठान परमेश्वर में यह सम्पूर्ण जड़ चेतन संसार नि:संदेह रज्जु में सर्प के जैसे प्रतीत होते हैं।

Rising in the morning I bow to Him who is beyond the darkness of illusion, is self effulgent, all-pervading, ever present and is known by the name Purshottam, in whose all-encompassing form, this whole universe does appear in the same manner as the (mistaken) appearance of a snake in the rope.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

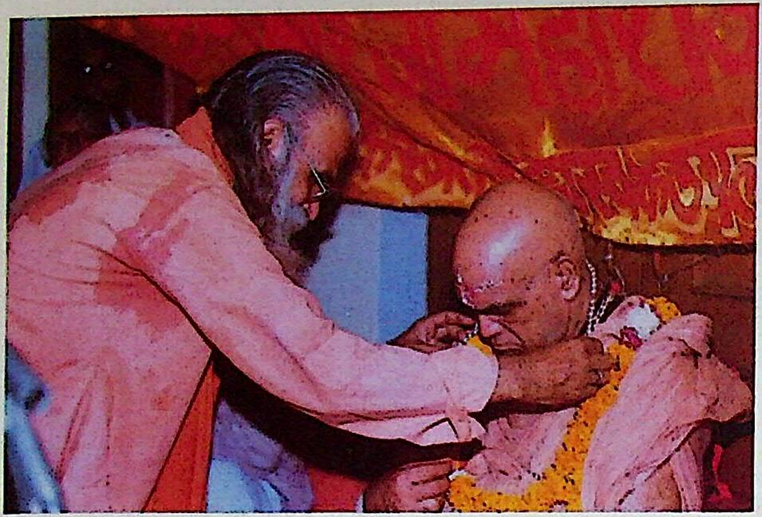

शंकर ब्रह्मविद्या कुटीर मुजफ्फरनगर में पट्टाभिषेक रजत महोत्सव का आयोजन ५ जुलाई, १९९३ को हुआ। चित्र में वहाँ के संन्त, स्वामी नरोत्तम गिरिजी, महाराज श्री का स्वागत करते हुए।
At Shankar Brahm Vidya Kutir Muzaffarnagar, Maharaj Shri is being garlanded by Swami Narottam Giri Ji

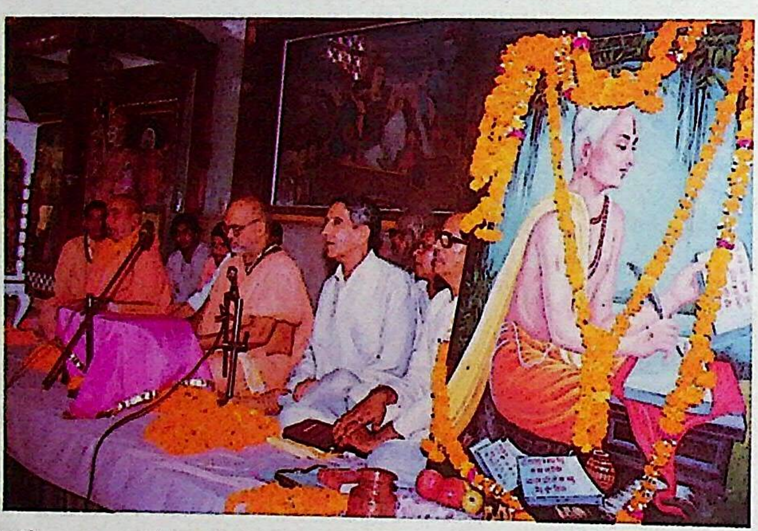

श्री गंगेश्वर धाम, नई दिल्ली में संत महाकवि, गोस्वामी श्री तुलसीदास जयन्ती समारोह में अध्यक्षीय भाषण करते हुए महाराज श्री
Maharaj Shri presiding over the function of 'Tulsi Jayanti' celebrations in Gangeshwar Dham, New Delhi

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

राष्ट्रसन्त श्री मोरारीबापू के आग्रहपूर्वक निमन्त्रण पर महाराज श्री विदेश यात्रा (२२ अगस्त, १९९३ से ६ सितम्बर, १९९३) पर गए, जिसमें मुख्य कार्यक्रम, पोत पर, ९ दिन की श्री राम कथा का आयोजन था।

Maharaj Shri proceeded on foreign tour for the first time at the invitation of Shri Murari Bapu, who recited Ram Katha on board a chartered ship for nine days.

पोत पर श्री मोरारी बापू द्वारा कथा से पूर्व महाराज श्री के प्रतिदिन प्रवचन का दृश्य

Maharaj Shri used to address every day before Shri Murari Bapu's Ram Katha

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आत्म षट्कम्

मनोबुद्ध्यहंकारचित्तानि नाहं
न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्राणनेत्रे।
न च व्योमभूमि न तेजो न वायु
शिचदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्॥१॥

मन, बुद्धि, अहंकार और चित्त मैं नहीं हूँ, (यानि अन्तः करण, जिसके यह चार नाम व्यापार भेद से हैं, ये आत्मा नहीं)। कान और जीभ भी मैं नहीं हूँ। नाक और आँख भी मैं नहीं हूँ। आकाश और धरती भी नहीं हूँ। न अग्नि और न हवा ही हूँ। मैं तो चैतन्य तथा आनन्द स्वरूप शिव हूँ, शिव हूँ।

I am not mind, intellect, ego or memory. I am also not ears and tongue, nor nose and eyes. I am not ether or earth, nor fire and wind. I am the shiva and Shiva alone- the embodiment of pure knowledge and bliss.

न च प्राणवर्गो न पञ्जानिला मे
न वा सप्तधातु र्न वा पञ्चकोशः।
न वाक्पाणिपादौ न चोपस्थपायू
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्॥२॥

पञ्चप्राणों का समुदाय मैं नहीं हूँ। मुझ आत्मा के यह पञ्च प्राण तथा पञ्च उपप्राण भी नहीं हैं (प्राण अपान, समान उदान और व्यान पंच, प्राण हैं; नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनञ्जय पंच उपप्राण हैं), सप्त धातुः (रस, रक्त, माँस, मेद, मज्जा, अस्थि और वीर्य) मेरे नहीं हैं। पञ्चकोश भी मैं नहीं हूँ। हाथ, पैर, वाणी, इन्द्रियाँ भी मैं नहीं हूँ। शिश्न तथा गुदा भी मैं नहीं हूँ। मैं तो चेतन आनन्दरूप शिव हूँ।

I am not the group of five pranas (vital airs) nor these belong to me. The seven body metals do not belong to me either. I am not the five koshas (sheaths). I am not even hands, feet, voice and sense organs. I am also not reproductive organ or rectum. I am only Shiva, the embodiment of knowledge & bliss.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न मे राग द्वेषौ न मे लोभमोहौ,
मदो नैव मे नैव मात्सर्यभावः।
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्षः
चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्॥३॥

राग और द्वेष मुझ विशुद्ध चैतन्य आत्मा में नहीं हैं। लोभ और मोह (ममता) भी मुझ में नहीं है। अहंकार (गर्व) मुझ विशुद्ध आत्मा में नहीं आ सकता, ईर्ष्या भाव भी मुझ में नहीं है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, चतुर्विध् पुरुषार्थ, मुझे नहीं चाहिए, क्योंकि मैं सच्चिदानन्द स्वरूप शिव हूँ, शिव हूँ।

I am not bound by duties, nor attracted by objects of comfort, nor require strength to enjoy them or need redemption from the world cycle, because I am Shiva myself the abode of pure knowledge & bliss.

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं,
न मन्त्रो न तीर्थं न वेदो न यज्ञः।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता,
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्॥४॥

मुझमें पुण्य एवं पाप नहीं, न मुझमें अनुकूलता जन्य सुख एवं प्रतिकूलता से होने वाला दुःख है। (सदा पवित्र) मेरे लिए कोई मन्त्र, तीर्थ, वेद और यज्ञ भी नहीं है। मैं प्रिय, मोद तथा प्रमोद वृत्ति भी नहीं हूँ और न ही प्रिय आदि वृत्ति में आनन्दाभास हूँ। मैं (साक्षीरूप होने से) भोंक्ता भी नहीं हूँ। मैं तो भोक्ता, भोज्य और भोजन इस त्रिपुटी का साक्षी शुद्ध चेतन, आनन्द स्वरूप शिव हूँ।

In me there are neither virtuous deeds nor sins. Pleasure and pain dont touch me. I don't need to recite matras, go on pilgrimage, study Vedas or perform Yagnas for purification. I am neither food nor reflection of pleasure derived from it nor experiencer of such pleasure. I am the Shiva who is nothing but pure knowledge and bliss.

RajGuru Math; Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

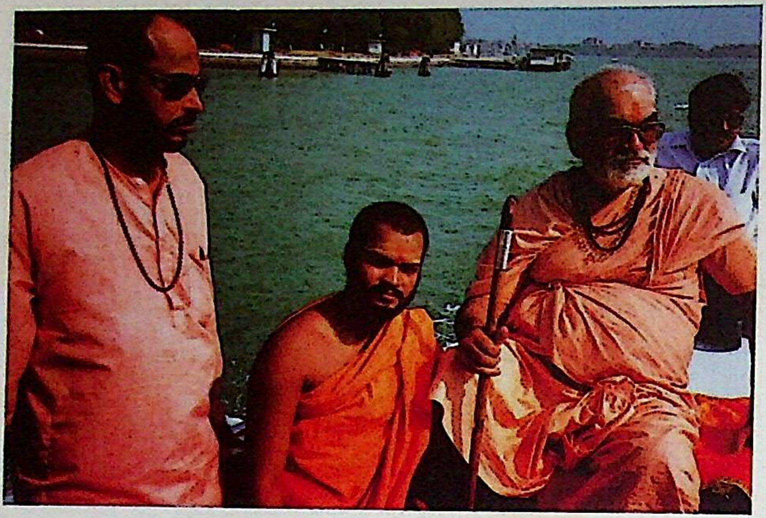

महाराज श्री के साथ स्वामी मेधानन्द पुरी जी एवं ब्रह्मचारी धनञ्जय चेतन जी
(महाराज श्री की विदेश यात्रा का चित्र)

Maharaj Shri with Swami Medhananda Puri Ji & Br. Dhananjay Ji during foreign tour

श्री मोरारी बापू राम कथा (उत्तरकाशी) उद्घाटन का दृश्य - १५ जून, १९९४

The inauguration of Shri Murari Bapu's Ram Katha at Uttarkashi in June 15, 1994

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न मे मृत्युशंका न मे जाति भेदः,
पिता नैव मे नैव माता न जन्म।
न बन्धु र्न मित्रं गुरुर्नैव शिष्यः,
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥५॥

मुझ नित्य अमर आत्मा में मरने की शंका नहीं है, मुझ व्यापक में जाति भेद भी नहीं, मेरा कोई जनक अथवा जननी भी नहीं और न ही मेरा जन्म होता है। मुझ अद्वितीय के कोई भाई, मित्र, गुरु और शिष्य भी नहीं हैं। मैं तो विशुद्ध चेतन आनन्द स्वरूप शिव हूँ।

(Being endless) I have no fear of death, (Being all pervading) I don't have any caste differentiation. There is no father mother to me and so no birth. There is also no brother, friend preceptor or disciple to me, (because) I am pure consciousness and bliss. I am Shiva, I am Shiva.

अहं निर्विकल्पो निराकाररूपो,
विभुर्व्याप्य सर्वत्र सर्वेंद्रियाणि।
सदा मे समत्वं न मुक्तिर्न बन्धः,
चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥६॥

मैं विकल्प का विषय नहीं हूँ। आकार वाला भी मैं नहीं हूँ। मैं व्यापक हूँ तथा सभी व्यष्टि इन्द्रियों में और सभी देश में व्याप्त होकर स्थित हूँ। सदा तीनों काल में मुझमें समभाव है। मुझ सदा मुक्त में मुक्ति एवं बन्धन नहीं है। मैं तो चेतन, आनन्द, कल्याणस्वरूप शिव हूँ, शिव हूँ।

I am beyond mind reflections, formless, omnipresent, encompassing all individual organs and places. I possess equanimity at all times. There is no liberation or binding for me. I am pure knowledge and bliss. I am Shiva. I am Shiva.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

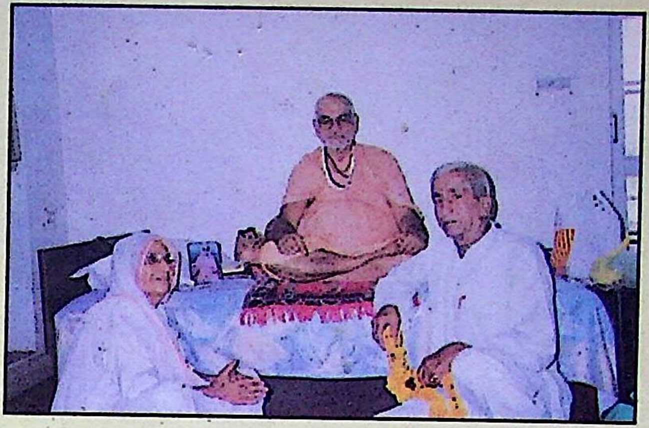

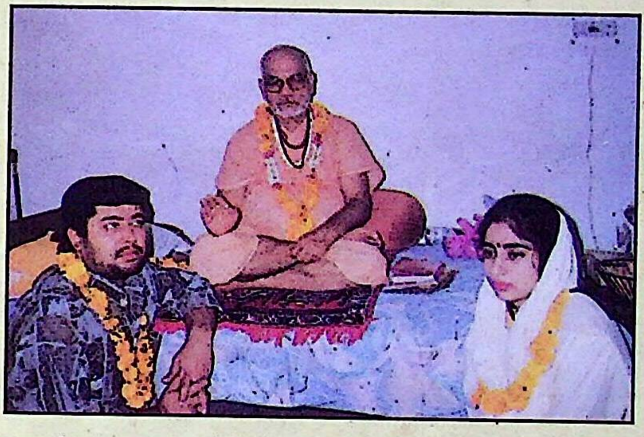

भक्त देसराज चानना, मोती नगर दिल्ली, के भक्तिपरायण परिवार की
तीन पीढ़ियाँ महाराज श्री के चरणों में

The three generations of the devoted family of
Shri Des Raj Chanana Motinagar, Delhi with Maharaj Shri

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज

(पट्टाभिषेक से पूर्व का चित्र-१९६९ ई०)

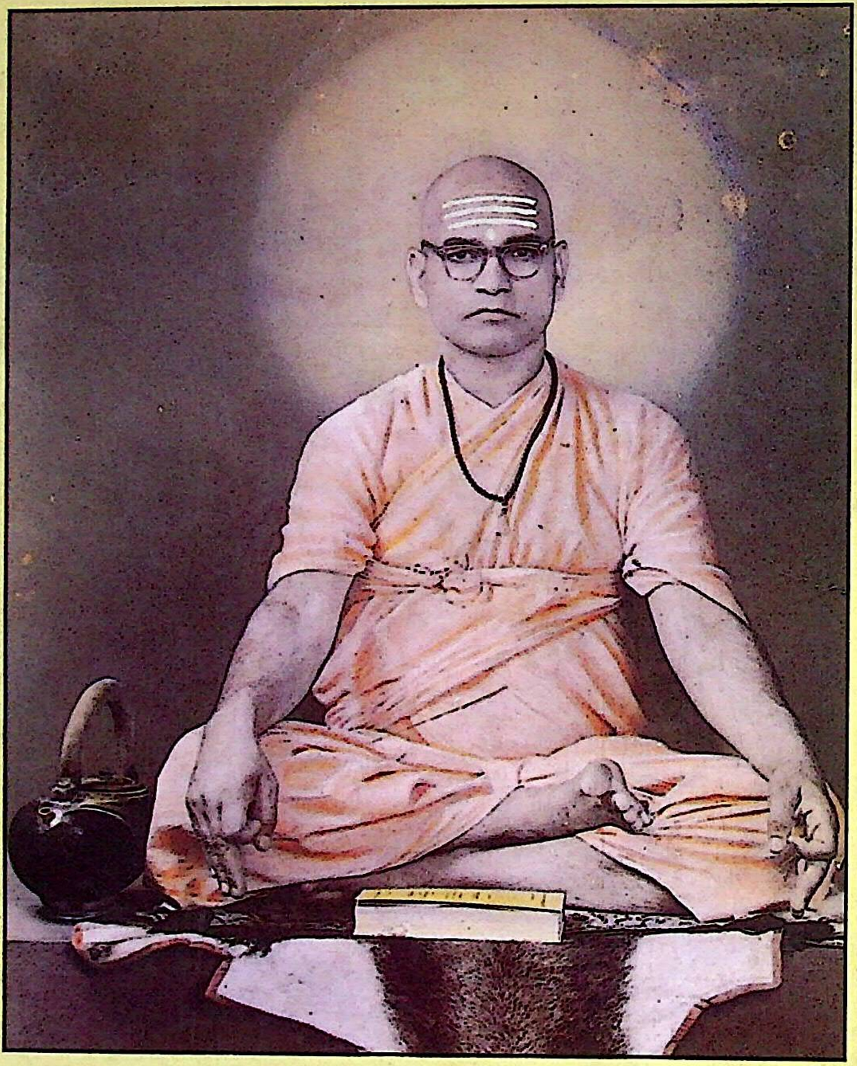

HIS HOLINESS SHRI SWAMI VIDYANAND GIRI JI MAHARAJ
(Before Accession to Kailas Peeth-1969)

सौजन्य

जयमाला पर्स एम्पोरियम

5/76 डब्लयू. ई. ए., अजमल खाँ रोड, करौल बाग, नई दिल्ली-110005

दूरभाषः 5729218, 5728898

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.